अङ्कः – १६

ISSN : 2248-9495

जयन्ती

षोडशं पुष्पम्

केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः

जयपुरपरिसरः जयपुरम्

अङ्कः – XVI

ISSN : 2248-9495

जयन्ती

(वार्षिकी शोधपत्रिका)

✻ संरक्षको मार्गदर्शकः प्रधानसम्पादकश्च ✻

प्रो. अर्कनाथचौधरी

✻ सम्पादकौ ✻

प्रो. श्रीधरमिश्रः

डॉ. पवनव्यासः

✻ सहसम्पादकाः ✻

डॉ. राकेशकुमारजैनः

श्रीप्रकाशरंजनमिश्रः

डॉ. कान्ता गलानी

✻ सहायिका ✻

डॉ. नमिता मित्तल

2019-20 वर्षम्

केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः

जयपुरपरिसरः

त्रिवेणीनगरम्, गोपालपुरा–बाईपास, जयपुरम्–302 018

दूरभाषाङ्क : 2761115 (कार्यालयस्य)

अणुसङ्केतः (ई–मेल) : csujaipur@gmail.com

वेबसाइट : www.rsksjaipur.ac.in, www.sanskrit.nic.in

प्रो. अर्कनाथचौधरी

संरक्षकः मार्गदर्शकः प्रधानसम्पादकश्च

सम्पादकौ

प्रो. श्रीधरमिश्रः

डॉ. पवनव्यासः

सह-सम्पादकाः

डॉ. राकेशकुमारजैनः

डॉ. कान्ता गलानी

श्रीप्रकाशरञ्जनमिश्रः

डॉ. नमिता मित्तल

संगणकसहायिका

प्रो. पी.एन. शास्त्री
कुलपतिः
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
मानितविश्वविद्यालयः
(भारतशासनस्य मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनम्)
(राष्ट्रीयमूल्यांकनप्रत्यायनपरिषदा 'ए' श्रेण्या प्रत्यायितम्)

Prof. P.N. Shastri
Vice-Chancellor
RASHTRIYA SANSKRIT SANSTHAN
Deemed to be University, Under MHRD, Govt. of India)
(Accredited by NAAC with 'A' Grade)

शुभाशंसनम्

श्रीमतां निदेशकमहोदयानां अर्कनाथचौधरीमहाशयानां नेतृत्वे निर्देशने च शैक्षिकतदितरानेकप्रतियोगितासु सम्यगध्ययनाध्यापनादिकार्येषु च सारस्वतीं समज्ञां समर्जयता केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरपरिसरेण पूर्वसंवत्सरवदस्मिन्नपि संवत्सरे स्वप्रातिभसाम्राज्यवैजयन्त्या विविधविषयबोधविभां विकिरन्त्याश्छात्रसंस्करणरूपायाः संस्कृत-हिन्दी-आङ्गलभाषत्रयी-त्रिवेण्याः जयन्त्याः पत्रिकायाः षोडशं पुष्पं प्रकाश्यत इति विज्ञाय मोमुद्यते मे मनः। समुल्लसदनेकशोधपत्रप्रदर्शितशास्त्रीयगूढरहस्यान् समुच्छलत्कविताकल्पलतासरससुमनः प्रकाश्यमाना जयन्ती संस्कृतानुरागिणां सहृदयानां च कृते कौतुकाय बोधवर्धनाय च नूनमेव भविष्यतीति द्रढीयान् मे विश्वासः।

जयन्त्या एतत्पुष्पप्रकाशनार्थं विद्वांसो यशस्विनः निदेशकाः अर्कनाथचौधरीमहाभागाः तत्सहयोगिनः सम्पादकाश्च समभिनन्द्यन्ते। पत्रिकेयं जयपुरपरिसरसमज्ञासुमनः सौरभोल्लासिनीं भवतादिति करुणावरुणालयं परमेश्वरं प्रार्थयते।

प्रवर्तकः भावत्कः

(परमेश्वरनारायणशास्त्री)
कुलपतिः

सारस्वतनैवेद्यम्

केन्द्रीयसंस्कृतविद्यापीठम् इति नामतः 1983 ई॰ वर्षतः प्रारभ्य राष्ट्रिय संस्कृतसंस्थानम् इत्यभिधानेन 2000 ई वर्षतः 29-04-2020 पर्यन्तं समग्रे देशे विशिष्य राजस्थाने संस्कृतशिक्षाक्षेत्रे प्रतिष्ठां प्राप्तस्य अधुना ''केन्द्रीय-संस्कृत-विश्वविद्यालयः'' इत्यभिधानेन ख्यातस्य अध्ययनाध्यापन-शोध-संगोष्ठी-कार्यशाला प्रकाशानादिबहुविध-शैक्षिकार्यक्रमाणां आयोजकस्य जयपुरस्थ-केन्द्रीय-संस्कृत-विश्वविद्यालयपरिसरस्य वार्षिकी पत्रिका जयन्ती इत्यस्याः षोडशाङ्कः प्राकाश्यमानीयते।

जयन्त्या अङ्कोऽयं वेदव्याकरण-साहित्य-ज्योतिष-शिक्षाशास्त्र-धर्मशास्त्र-मीमांसा-न्याय-योगदर्शन-जैनदर्शनादि-शास्त्रीयविषयसम्बद्धैः शोधलेखैः इतिहास-राजनीति-अर्थशास्त्र-अंग्रेजी इत्यादि विषययुक्तैः बहुविधैश्च शोधलेखैः परिपूर्णः किमपि वैशिष्ट्यम् आधत्ते, अतएव पाठकानां कृतेऽवश्यमुपयोगी स्यादिति विभावये।

अस्याङ्कस्य सम्पादने प्रो. श्रीधरमिश्रः डॉ. पवनव्यासश्च महान्तं श्रमम् अकुरुताम्। टंकणादि-दोषपरिहारार्थं डॉ. राकेशकुमारजैनः, डॉ. कान्ता गलानी, श्रीप्रकाशरञ्जनमिश्रश्च साहाय्यं दत्तवन्तः। सम्पादकाभ्याम् त्रुटिसंशोधकेभ्यश्च हार्दं शुभाशंसनम्।

यद्यपि अङ्कस्यास्य प्रकाशनं मई 2020तः पूर्वं करणीयमिति निश्चय आसीत् किन्तु 'कोरोना'महामारीकारणतः मुद्रणालये प्रकाशनाय रक्षितेयं पत्रिका विलम्बेनाधुना प्राकाश्यं पूर्णयति इति खेदमप्यावहामि।

येषां च विदुषां महत्त्वपूर्णैः लेखैः सुसज्जिता इयं 'जयन्ती' सारस्वतनैवेद्यमभूत् तेषां जीवने निरन्तरं जयो भवतु इत्यपि कामये।

(प्रो. अर्कनाथचौधरी)
निदेशकः

सम्पादकीयम्

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सम्पादका

केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः
उद्देश्यानि

- दुर्लभ–प्राच्य–संस्कृतज्ञानसंरक्षणाय विविधशाखासंवलितस्य संस्कृत–वाङ्मयस्य अध्ययनाध्यापनयोः व्यवस्थापनम्।
- संस्कृतशिक्षणे वैज्ञानिकपद्धतिसमन्वयमाधाय सुयोग्यानामनुभववतां प्रशिक्षिताध्यापकानां निर्माणम्।
- प्राच्यपाश्चात्योभयविधविद्याविद्योतितस्य संस्कृते सुनिहितस्य साहित्यस्य सानुवादप्रकाशनम्।
- शोधग्रन्थानामनुसन्धानसहायकसामग्रीणाञ्च प्रकाशनम्।
- संस्कृत–हस्तलेखानां सम्प्राप्तिसर्वेक्षणसम्पादनप्रकाशनादिषु प्रयतनम्।
- संस्कृते समुपलब्धानामभिलेखानां सर्वेक्षणपूर्वकं सम्पादनं प्रकाशनं च।
- प्राचीनार्वाचीनकालदृष्ट्या संस्कृतसाहित्येऽनुसन्धानस्य प्रवर्तनम्।
- संस्कृतज्ञानप्रसारपरे सर्वविधकार्यक्रमे सहयोगः।

अनुक्रमणिका

1.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
2.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
3.	[illegible] (Precious Contribution of Educational Technology-Virtual Class Room)	[illegible]	[illegible]
4.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
5.	[illegible] ([illegible]diction)	[illegible]	[illegible]
6.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
7.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
8.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
9.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
10.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
11.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
12.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
13.	[illegible]	डॉ. [illegible]	[illegible]
14.	[illegible]	डॉ. [illegible]	[illegible]
15.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
16.	[illegible]	[illegible]	93
17.	[illegible]	डॉ. कृष्णा [illegible]	[illegible]
18.	[illegible]	डॉ. [illegible]	[illegible]
19.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
20.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
21.	[illegible]	डॉ. [illegible]	[illegible]
22.	[illegible]	डॉ. [illegible]	[illegible]
23.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
24.	[illegible]	डॉ. [illegible]	[illegible]
25.	[illegible]	डॉ. [illegible]	[illegible]
26.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
27.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
28.	[illegible]	डॉ. [illegible]	[illegible]
29.	[illegible]	डॉ. [illegible]	[illegible]
30.	[illegible]	[illegible]	[illegible]

31.	Cultural and Literary study of Assam as Depicted in Sanskrit Literature	Dr. [illegible] Dwivedi	177
32.	Constructive Paradigm of Teaching and Learning Process	Dr. Vijay Kumar Dadhich	195
33.	[illegible]	डॉ. [illegible]	201
34.	[illegible]	डॉ. [illegible]	202
35.	[illegible]	[illegible]	205
36.	How Far the campaign of women empowerment has really empowered women?	Dr. Laxmi Sharma	213
37.	Myth in Tod and Barthes' Theory	Dr. Kavita Gaur	[illegible]
38.	INFORMATION RESOURCES IN RAJASTHANI ARTS AND CULTURE FROM THE USERS PERSPECTIVE	Sunita Pandey Dr. [illegible] Kumar	222
39.	Concept of Woman Empowerment in Ancient Indian Tradition	Kusum Gautam	238
40.	[illegible]	डॉ. [illegible]	247
41.	[illegible]	डॉ. [illegible]	[illegible]
42.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
43.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
44.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
45.	[illegible]	डॉ. [illegible]	267
46.	[illegible]	डॉ. [illegible]	[illegible]
47.	[illegible]	डॉ. [illegible]	[illegible]
48.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
49.	[illegible]	डॉ. [illegible]	[illegible]
50.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
51.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
52.	[illegible]	डॉ. [illegible]	[illegible]
53.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
54.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
55.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
56.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
57.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
58.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
59.	[illegible]	[illegible]	[illegible]

सूचना : इस शोध पत्रिका में प्रकाशित आलेखों में [illegible]

दर्शन एवं काव्य में आनन्द का स्वरूप

प्रो. अर्कनाथ चौधरी

संसार का प्रत्येक प्राणी स्वभावतः आनन्द की प्राप्ति एवं दुःख की निवृत्ति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहता है। यह आनन्द क्या है? आनन्द शब्द आङ्पूर्वक [illegible] से घञ् प्रत्यय कर निष्पन्न होता है। जिसका शाब्दिक अर्थ है– सब प्रकार से समृद्धि। प्रकारान्तर [illegible] हुआ जाता है, वह सुख जो सभी के लिए अनुकूल वेदनीय हो, वही आनन्द है।

लोक में अनुभव किए जाते हैं नाना प्रकार के लौकिक सुख हैं। किन्तु [illegible] निश्चित नहीं है कि [illegible] सुख या आनन्द [illegible] है। कुछ व्यक्ति [illegible] आनन्दित होते हैं तो कुछ [illegible] कोई धनोपार्जन में सुख अनुभव करते हैं तो कुछ [illegible] से तृप्त होते हैं। कुछ साधनाओं में तो कुछ शिक्षा-प्राप्ति में, कुछ तपस्या में तो कुछ विद्याध्ययन में ही आनन्द का अनुभव करते हैं। इस तरह लोक की रुचियाँ भिन्न भिन्न हैं, अतः उनके सुख या आनन्द के स्वरूप भी भिन्न भिन्न होते हैं।

वस्तुतः आनन्द का यथार्थ स्वरूप या लक्षण क्या है? यह मानवीय जिज्ञासा अनादिकाल से वर्तमान तक बनी हुई है।

अमरकोशकार ने आनन्द के लिए प्रयुक्त पर्यायवाची शब्दों में आनन्द, प्रमद, हर्ष, प्रमोद, [illegible] और आमोद आदि शब्दों को गिनाए हैं। [illegible] आनन्द का [illegible] है। वह "सर्वेषां अनुकूलवेदनीयं सुखम्" [illegible] है। [illegible] आनन्दरूप [illegible] तैत्तिरीयोपनिषद् में कहा है–

आनन्दाद्ध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते।

आनन्देन जातानि जीवन्ति। आनन्दं प्रयन्त्यभिसंविशन्ति। "आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्"।

यह सच्चिदानन्द ब्रह्म का स्वरूपलक्षण है। ब्रह्मसूत्र शाङ्करभाष्य में आचार्य शङ्कर ने [illegible] का आनन्दमय [illegible] कहा है।

[illegible] ने "[illegible]" [illegible] है। इसी को आधार मानकर आलङ्कारिकों ने भी 'ब्रह्मानन्दसहोदरः रसः' कहा है। आलङ्कारिकों के इस अलौकिक आनन्द का [illegible] है। वेदान्तदर्शन में ब्रह्म अनन्त आनन्द का [illegible] है कि [illegible] आनन्दरूप है। वह सच्चिदानन्द ब्रह्म का [illegible] चित् चेतन [illegible] है, अतः

भारतीय दर्शन में भी [illegible] आनन्द ब्रह्मानन्द [illegible] जहाँ सत् चित् एवं आनन्द को वर्णित किया गया है।

आनन्द क्या है और आनन्द की प्राप्ति कैसे होती है? इस विषय में हमारे वाङ्मय में अनेक प्रकार के विचार व्यक्त किये गये हैं, जिनमें निःश्रेयस एवं मोक्ष की प्राप्ति को ही परम साध्य मानते हुए आनन्द की प्राप्ति माना है।

एक ओर दुःखाभावमात्र-रूप को आनन्दरूप निःश्रेयस माना गया है तो दूसरी ओर [illegible] ने [illegible]-दुःखनिवृत्ति को निःश्रेयस माना है। न्यायदर्शन ने "[illegible]निःश्रेयसाधिगमः" [illegible] एवं आनन्द का मार्ग [illegible] किया है, किन्तु यह आनन्द [illegible] आनन्द [illegible] माना गया है। [illegible] "[illegible]" [illegible] अवस्था में आनन्द [illegible] माना गया है यह [illegible] है कि "[illegible]" [illegible] है कि [illegible] तादात्म्य है, और यही [illegible] आनन्द है [illegible] नहीं। क्योंकि [illegible] का विकल्प हो जायेगा।

[illegible] का आनन्द [illegible] उपनिषद् में [illegible] है। "[illegible] एव आनन्दमयो [illegible]" [illegible] का यह मत है कि [illegible] सुषुप्ति की अवस्था है जिसमें [illegible] का ज्ञान नहीं होता है। यह ज्ञानस्वरूप है, यही आनन्दमय [illegible] है। यह आनन्दमय है और आनन्द का [illegible] है। इस आनन्दमय में न [illegible], न [illegible], न ही [illegible] की [illegible] होती है, केवल दुःखों का [illegible] की कामना होती है अतः एव [illegible] के शब्दों में

"न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं न पुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्॥"

[illegible] लौकिक जीवन है आनन्द का [illegible] [illegible] [illegible] आनन्द [illegible] है कि आत्मज्ञानी होकर [illegible] में [illegible] जा सकता है।

[illegible] जीवन को [illegible] सुख-[illegible] की दृष्टि [illegible] है - "[illegible] जीवेत् सुखं [illegible]"। किन्तु यह सुख-[illegible] के [illegible] साधन [illegible] नहीं है। [illegible] "[illegible]" तथा "[illegible]" [illegible] को ही [illegible] है। अतः [illegible] के [illegible] ही [illegible] की दृष्टि से यह [illegible] आनन्द [illegible] है। इसके [illegible] में आनन्द के विषय में अनेक [illegible] हो सकती हैं, किन्तु [illegible] में [illegible] है और [illegible] के [illegible] आनन्द है।

[illegible] है कि [illegible] का [illegible] और [illegible] में [illegible] आनन्द है।

"सुखस्य वस्तुनो ध्यानाद्यानादुपभुज्यते।
प्रतीयते च आनन्दः सर्वथापिह देहिनाम्॥"

पुराण के अनुसार [illegible] मन में जब आत्म प्रतिबिम्बित होता है तब [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] प्रतिबिम्बित होता है और [illegible] [illegible] [illegible] कहा जाता है।

[illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] किसी के [illegible] [illegible] आनन्द [illegible] होता है, [illegible] आनन्द [illegible] का ही [illegible] है।

काव्यशास्त्रियों की दृष्टि से आनन्द का विश्लेषण करने पर विदित होता है कि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है, वह आनन्द है। [illegible] [illegible] ने [illegible] नाट्यशास्त्र का [illegible] करते हुए [illegible] [illegible] –

"दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम्।
विश्रामजननं लोके नाट्यमेतद्भविष्यति॥"

नाट्यशास्त्र के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आनन्द [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ने [illegible] कहा कि "[illegible]"

[illegible] के अनुसार '[illegible]' [illegible] है। वस्तुतः [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] में [illegible] से विद्यमान होता है, अतः [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] में [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है और [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] "[illegible]" कहा है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] एक अलौकिक आस्वाद है, यह आस्वाद [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] है, [illegible] आनन्द है। इस आनन्द में [illegible] से और [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के आनन्द का [illegible] [illegible] है।

[illegible] के [illegible] को [illegible] करते हुए आचार्य मम्मट ने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।"

इस प्रक्रिया में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] होकर [illegible] हैं, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कि [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] का [illegible] का [illegible] है, और [illegible] [illegible] [illegible] एक तो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अलौकिक [illegible] की प्राप्ति भी होती है। यह अलौकिक आनन्द [illegible] है। [illegible] ने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] इसकी पुष्टि करते हुए कहा है कि

"[illegible] अलौकिकानन्दमयस्य [illegible]।"

इस विश्लेषण से ज्ञात होता है कि भक्तियों को भिन्न भिन्न दृष्टियों से [illegible] अनेक भेद में [illegible] लौकिक [illegible] अलौकिक आनन्द की भी प्राप्ति की जा सकती है। किन्तु इस प्रक्रिया में [illegible], द्वेष व मोह से मुक्त होने की स्थिति प्राप्त करनी होगी, तभी व्यक्ति [illegible] के अनुरूप ब्रह्मानन्द को [illegible] सकेगा। सांसारिक प्राणी भी [illegible] से युक्त निर्विकार इन्द्रियों द्वारा विषयों का [illegible] कर सकता है, और [illegible] भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है।

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन्।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति॥
प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते।[1]

[illegible] 'अहं ब्रह्मास्मि' की अनुभूति [illegible] है, तथा [illegible] की दृष्टि से [illegible] प्रतिपादन किया है कि—

[illegible]
[illegible]॥[2]

[illegible] 'ब्रह्मानन्दसहोदरः' सांसारिक [illegible]

संदर्भ:—

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] - [illegible] - [illegible]

[illegible] [illegible] - [illegible] - 30

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] - 38

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

निदेशक

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

लखनऊ परिसर, लखनऊ

ज्योतिषशास्त्रे त्रिविधोत्पातविमर्शः

प्रो. देवीप्रसादत्रिपाठी

[illegible] आचार्यो [illegible] [illegible] अन्तर्हित [illegible] लोके [illegible] वेदादिषु [illegible] [illegible] आपदः [illegible]

यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद् यः पर्वतान्प्रकुपितानरम्णात्।

यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो यो द्यामस्तभ्नात्स जनास इन्द्रः॥'

अर्थात् इन्द्रः [illegible] [illegible] पर्वतान् [illegible] अन्तरिक्षं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पृथिवी [illegible] पर्वता [illegible] –

इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्रवोचं यानि चकार प्रथमानि वज्री।

अहन्नहिमन्वपस्ततर्द प्र वक्षणा अभिनत्पर्वतानाम्॥'

[illegible]

लोककल्याणाय आपदां शान्तिः [illegible] [illegible] उच्यते

उत्पाताः पार्थिवान्तरिक्षाः शं नो दिविचरा ग्रहाः॥

शं नो भूमिर्वेप्यमाना शमुल्का निर्हतं च यत्।

नक्षत्रमुल्काभिहतं शमस्तु नः शं नोऽभिचाराः शमु सन्तु कृत्याः।

शं नो निखाता वल्गाः शमुल्का देशोपसर्गाः शमु नो भवन्तु॥'

[illegible] आपदां [illegible] [illegible] [illegible] आपदाम्

[illegible]

> कालोऽस्मि लोकक्षयकृत् प्रवृद्धो लोकान् समाहर्तुमिह प्रवृत्तः।
> ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः॥

[illegible]

> उपसर्गान्शेषांस्तु [illegible]।
> तथा त्रिविधमुत्पातं [illegible]॥"

[illegible]

> चतुर्युगसहस्रान्ते ब्राह्मो नैमित्तिको लयः।
> अथ प्राकृतिकं वक्ष्ये प्रलयं शृणु शौनक॥"

[illegible]

[illegible]

[illegible] तानि शुभाशुभानि [illegible]

तद्विद्वांसः [illegible] कर्तव्या। [illegible] च [illegible]।। यथा [illegible] वाराहीं [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible] फलानि भवन्ति।[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] पुनरुक्तमपि।।[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ज्योतिषशास्त्रस्य [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] आचार्य [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कृतम्।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अमांगल्यसूचकं दैवं पदार्थं [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

मृगशकुनि[illegible]।

गन्धर्व[illegible]।।[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] 'अद्भुत' संज्ञा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible] - [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] -

अभूतपूर्वं यत् पूर्वं यत पूर्वं जायतेऽन्यथा।

तदद्भुतमिति प्रोक्तं निमित्तं [illegible]।।[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] -

पापविनाशाय [illegible] [illegible] इति स्मृतम्।

[illegible] [illegible] [illegible]।।

[illegible]।[illegible]

ज्योतिषशास्त्रस्य [illegible] [illegible] [illegible] अस्मिन् जगति [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible], आकाशः [illegible] [illegible] [illegible]। पञ्चमहाभूतानि (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश) [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible]) [illegible]

एकत्रिंशत्त्रिकृत्वात् पापात् संग्रामात् आचक्षते।

तेषां शान्तिरिह प्रोक्ता शास्त्रतः, यज्ञमन्त्रप्रयुक्तानि तानि.।[1]

येनेन आचार्य ... उत्पन्न इति ... दैव ... कथित ...

प्रकृतिविकृतिमयं सात्त्विकं ... देवा: सृजन्ति।[2]

मनुष्याणां निन्दितानि च मनुष्याणां पापकर्माणि ... इति।

... विधिवत् यदा–

पुण्यापुण्यादिरहितमपरक्षालिते देवता।

ततोऽपशकुनाः संप्रपद्यन्ते प्रभवन्ति।।[3]

मानवैकृतानां निन्दितानां च मनुष्याणाम्, अनियमितत्वात्, आलस्यात्, नास्तिकत्वात्, अधर्मसंसर्गात् ... धर्मस्य ... देवाः अप्रसन्ना भवन्ति ... विविधोत्पाताः प्रवर्तन्ते।

अनित्यमायासात्याद्वा नास्तिक्याद्वाऽप्यधर्मतः।

नरापचारान्नियतमुपसर्गः प्रजायते।।

अपि चाचारहीनत्वमपरक्षालिते देवता।

ता सृजन्त्यद्भुतान् भावान् दिव्यनाभसपार्थिवान्।।[4]

... च आचारविहीनत्वं ... गर्गसंहितायां–

प्रजा धर्मरता यत्र तत्र राष्ट्रं शुभं भवेत्।

तस्मात् श्रेयसे नित्यं विमृशन्ति मुनीश्वराः।।

विपरीताश्च ता यत्र जनापत्तयश्च तथा।

विसृजन्ति प्रजानां तु दुःखशोकाभिवृद्धये।।

एवं निमित्ता विविधोत्पाताः ... विचार्य ... सर्वतः ... करोति, यः कष्टं न अनुभवति। ... शक्ति न करोति ... –

त एव त्रिविधा लोके उत्पाता दैवनिर्मिताः।

दिव्यान्तरिक्षभौमाश्च ... ।।

येषु शान्तिं प्रकुर्वन्ति न ते यान्ति पराभवम्।

ये तु न प्रतिकुर्वन्ति क्रियया ... ।।

नास्तिक्याद्वा विमोहाद्वा विनाशमुपयान्ति ते।।[5]

... 1. ... 2. ... 3. ... 4. ... 5. ... 6. पुरे 7. ... 8. गृहे च –

पुरे जनपदे ग्रामे ... च पुरोहिते।

पुत्रे स्वामिनि ... देवपूजया।।[6]

[illegible] विविधोत्पाताः – [illegible]

प्रकृतेरन्यत्वमुत्पातः सङ्क्षेपतोऽवगीयते ।
त्रिविधः स तु विज्ञेयो दिव्यान्तरिक्षभूमिजः ॥
यः प्रकृतिविपर्यासः स सङ्क्षेपत उत्पातः ।[7]

तेषु उत्पातेषु भौमिकोत्पातापेक्षया आन्तरिक्षोत्पाताः [illegible]। तथा च आन्तरिक्षोत्पातापेक्षया अपि दैव्योत्पाताः गुरुतराः [illegible]। अर्थात् [illegible] उत्पातेषु [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] –

क्षितिजान्तरिक्षदिव्योत्पातो यथोत्तरं गुरुफलं भवति।[8]

[illegible]

त्रिषु उत्पातेषु प्रथमः वर्तते – भौमिकोत्पातः। [illegible] [illegible] [illegible] भवति [illegible] –

चरस्थिरभवो भौमो भूकम्पश्चापि भौमिक ।
जलाशयानां वैकृत्यं भौमं तदपि कीर्तितम् ॥[9]

[illegible] उत्पातेषु द्वितीयः भवति – आन्तरिक्षोत्पातः। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] –

उल्कापातो दिग्दाहः परिवेषस्तथैव च।
गन्धर्वनगरं चैव वृष्टिश्च विकृतिस्तु या॥
एवमादीनि लोकेऽस्मिन्नान्तरिक्षं विनिर्दिशेत्।[10]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] –

दर्शनं केतूनां ग्रहनक्षत्रार्कचन्द्रजम्।
दिवि चान्तरिक्षे यच्च तद्दिव्यमिति कीर्तितम्॥
गन्धर्वनगरोत्पातपरिवेषादयोऽपि च।
खपुरं चन्द्रचापं च तत्तु ह्यान्तरिक्षजम्॥[11]

[illegible]

तृतीयपादे [illegible]

'[illegible]
[illegible]।'

[illegible]

सौम्यं [illegible]।
[illegible]॥
[illegible]।

संहितायां [illegible] पूर्वानुमानस्य विषयः –

[illegible]

[illegible]

- ग्रहचारः (Transits of planets)
- ग्रहवर्णः (Colour changing of planets)
- ग्रहयुद्धम् (Planetary wars)
- ग्रहोदयास्तौ (Rise-set of planets)
- ग्रहणम् (Eclipse)
- [illegible] (Moon signs)
- रोहिणीशकटभेदः (Rohini-Sakata-Bheda)
- उल्कापातः (Rings of meteors)
- परिवेषलक्षणम् (Characteristics of halos)
- दिग्दाहः (Glow at the horizon)
- [illegible]: ([illegible])

- मेघाकृतिः (Cloud formation)
- अतिवृष्टिः अनावृष्टिः अल्पवृष्टिश्च (Various types of rainfall)
- [illegible] (Signs of rainbow)
- सूर्यः कीलकाः (Role of sunspots)
- चन्द्रशृङ्गम् (Horns of moon)
- गन्धर्वनगर (Signs of aerial city)
- शाकुनम् (Omens through birds, insects)
- [illegible] (Lords of the year)

मंदर्भः—

1. ऋग्वेद [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]
7. R. N. Iyengar, Profile of a Natural Disaster in Ancient Sanskrit Literature. Published in Ind. J. of History of Science, 39.1 (2004) pp 11-49. INSA, N Delhi
8. [illegible]
9. [illegible]
10. [illegible]
11. [illegible]
12. [illegible]
13. [illegible]
14. [illegible]
15. [illegible]
16. [illegible]
17. [illegible]
18. [illegible]
19. [illegible]
20. "Unfortunately, there is still no way to predict when an earthquake will strike" https://en.wikipedia.org/wiki/Earthquake_prediction
21. "Whatever is born or done at this moment has the qualities of this nature and moment" – Dr. C. G. Jung
22. [illegible]

23. [illegible]
24. [illegible]
25. [illegible]
26. श्री.भा., [illegible]
27. श्री.भा., [illegible], पृ. [illegible]
28. श्री.भा., [illegible]
29. श्री.भा., [illegible]
30. श्री.भा., [illegible]
31. श्री.भा., [illegible], पृ. [illegible]
32. [illegible]
33. श्री.भा., [illegible], पृ. 10
34. श्री.भा., [illegible]
35. [illegible]
36. श्री.भा., [illegible], पृ. [illegible]
37. [illegible]
38. [illegible]
39. श्री.भा., [illegible], पृ.-10
40. श्री.भा., [illegible]
41. श्री.भा., [illegible], पृ. [illegible]

[illegible]

शैक्षिक प्रौद्योगिकी की अमूल्य देन – 'आभासीय कक्षा कक्ष'

(Precious Contribution of Educational Technology-Virtual Class Room)

प्रो. सन्तोष मित्तल

आज शैक्षिक प्रौद्योगिकी ने शिक्षण की क्रियाओं का [illegible] करना प्रारम्भ कर दिया है, जैसे जैसे वैज्ञानिक युग में मशीनों का आविष्कार हुआ, वैसे वैसे उनका प्रयोग शिक्षा के क्षेत्र में भी किया जाने लगा। इनके प्रयोग से एक [illegible] शिक्षक छात्रों के बड़े से बड़े समूह को अपने ज्ञान और कौशल से लाभान्वित कर सकता है। वर्तमान शिक्षा का भविष्य कक्षा कक्ष के बाहर की अनुदेशन व्यवस्था बहुत कुछ [illegible] तक 'ई-शिक्षा' तथा 'आभासीय कक्षाकक्ष' की अवधारणा [illegible] है।

आभासीय विद्यालय, [illegible], आभासीय विश्वविद्यालय, [illegible] कक्षा, [illegible] आधुनिकतम [illegible] से सुसज्जित हैं। इन संस्थाओं के [illegible] बुद्धि (Artificial Intelligence) [illegible] की बुद्धि से अधिक [illegible] [illegible] के माध्यम [illegible] से जोड़ने पर इसमें और अधिक कार्यकुशलता मिल सकेगी। [illegible] ने पहली बार हमारे सौरमण्डल के बाहर नया [illegible] खोजा है। [illegible] की [illegible] है। [illegible] क्या है?

आभासीय [illegible] पुस्तकालय, [illegible] आदि की व्यवस्था भी आभासी कक्षा में [illegible] आदि सूचना [illegible] की [illegible] से [illegible] है।

[illegible] लिखते हैं कि आभासी कक्षा [illegible] शिक्षण अधिगम [illegible] कि आप परम्परागत कक्षा कक्ष में बैठकर, [illegible] ग्रहण करते हैं। दोनों में केवल [illegible] यह है

कि जहाँ छात्र अपनी सुविधानुसार अपने आवास पर अपने डेस्कटॉप पर कार्य करते हैं वहीं आपको इन्टरनेट तथा रोजगार की सुविधा प्राप्त होता है।

आभासीय कक्षा कक्ष की कार्यप्रणाली (Working System of Virtual Classroom)

1. आभासीय शक्ति तुलनात्मक रूप से पढ़ने हेतु जिसे आभासीय कक्षा कक्ष में अधिगम अन्तःक्रियात्मक वातावरण बनाने का प्रयास किया जाता है, इसके लिए वेब पेज से सम्बन्धित पोर्टल बनाया जाता है जिसमें उक्त सम्बन्धित पाठ्य सूचनाएँ, पाठ्यवस्तु आदि डाला जाता है जो वेब आधारित होता है।

2. आभासीय कक्षा कक्षों में प्रयोग में आने वाली <u>अनुदेशन सामग्री</u> का निर्माण व्यवस्थित उनका प्रसार, व्यवस्था एवं प्रबन्धन किया जाता है।

3. छात्र उपस्थिति प्रपत्रों का अनुरक्षण किया जाता है, इसमें प्रत्येक छात्र का आंकलन, व्यक्तिगत विवरण, शैक्षिक विवरण, मूल्यांकन उपस्थिति आदि रखा जाता है।

4. डिजिटलाइज्ड पुस्तकालय प्रणाली का उपयोग छात्र व शिक्षकों हेतु पुस्तकों का विवरण ऑनलाइन उपलब्ध होता है। छात्र पुस्तकों को ऑनलाइन अपनी सुविधानुसार पढ़ सकते हैं।

5. आभासीय कक्षा कक्ष विभिन्न प्रकार के उपकरणों के द्वारा संचालित होते हैं जहाँ अनेक गतिविधियों का सम्पादन सम्भव होता है एवं विभिन्न प्रकार की शिक्षण विधियों को अपनाया जाता है। आभासीय कक्षा कक्ष अपनी कक्षा की प्रणाली भी निर्धारित कर सकता है जिसके द्वारा छात्रों को प्रयोगात्मक रूप से आलोचना करते हैं, प्रश्न करते हैं, परिचर्चा के लिए प्रश्न पूछते, छात्रों को स्वयं मूल्यांकन करने का अवसर देते, शिक्षक द्वारा छात्रों का मूल्यांकन करते, छात्रों द्वारा अपनी शंकाओं का समाधान करने हेतु शिक्षक से सम्पर्क करने जैसी क्रियाएँ संचालित होती हैं।

6. आभासीय कक्षा कक्ष में विषय विशेषज्ञों, अनुभवी अध्यापकों एवं प्राध्यापकों द्वारा अनुदेशन सामग्री तैयार करवाकर छात्रों तक पहुँचाने का प्रयास किया जाता है। यह सामग्री ऑनलाइन उपलब्ध रहती है साथ ही सी डी रोम अथवा डी वी डी संकलन कर सामग्री के रूप में उपलब्ध करवाई जाती है, जिससे छात्र अपने समय व आवश्यकता के अनुसार सुविधापूर्वक पढ़ सकें।

आभासीय कक्षाकक्ष की उपयोगिता (Utility of Virtual ClassRoom) –

1. इस व्यवस्था में अनुदेशन तथा अधिगम अनुभव ग्रहण करने की सुविधा प्रत्येक छात्रों के लिए उपलब्ध होती है।

2. इसमें प्रशिक्षणों के द्वारा विभिन्न अधिगम क्रिया चलती है जो छात्रों के लिए अधिगम तथा सुगम होता है।

3. इन्टरनेट (Internet) आधारित ज्ञान का प्रसारण से विशाल उपयोग Virtual Class Room में उपयोगी होता है।

4. फूड बैंक (Food Bank) से अधिक सामग्री की उपलब्धता रहती है। जिससे छात्र अधिक सीख सकते हैं।

5. दूरस्थ दृश्य सम्मेलन (Tele Conferencing) के माध्यम से छात्र अपने साथियों एवं संस्था के अन्य छात्रों के साथ चर्चा कर सकते हैं।

6. छात्र घर बैठे [illegible] (Home Page) के माध्यम से अपने कार्यों को ऑनलाइन [illegible] कर सकता है।

7. यह अनुदेशन प्रणाली में [illegible] में परिवर्तन करने में सहायक है।

8. इस व्यवस्था में अनुशासनहीनता जैसी समस्या नहीं होती।

9. इससे समय, शक्ति तथा धन की बचत होती है।

10. [illegible]

आभासीय कक्षा-कक्ष की सीमाएँ (Limitations of Virtual Class Rooms)

1. आभासीय कक्षा-कक्ष में पढ़ाई जाने वाली [illegible] का निर्माण [illegible] है।

2. शिक्षक तथा छात्र दोनों के लिये सूचना सम्प्रेषण तकनीकी का ज्ञान होना आवश्यक है।

3. तकनीकी उपकरणों के प्रयोग के लिये प्रशिक्षण की आवश्यकता होने से शिक्षक तथा छात्र दोनों में ही अभाव पाया जाता है।

4. इस व्यवस्था में अध्ययन-अध्यापन करने पर छात्रों का [illegible] एवं सामाजिक विकास अवरुद्ध हो जाता है।

5. [illegible] ध्यान [illegible] जाते हैं।

6. भारतीय परिस्थितियों में यह [illegible] सुलभ नहीं है।

[illegible]

[illegible]

है। [illegible] कोचिंग [illegible] [illegible] में [illegible] कोचिंग [illegible] [illegible] है।

अब नेतागण और [illegible] की सफल प्रयोग [illegible] भी [illegible] है। ये केवल [illegible] करें तथा कोचिंगों के अन्दर [illegible] तक ही सीमित न रहकर [illegible] का अवसर हो एक [illegible] और [illegible] 'आत्महत्या [illegible]' [illegible] पहुंचें।

सन्दर्भ.
1. [illegible] rajasthan Patrika.com dt. 12.1.18
2. [illegible] 2007
3. राजस्थान पत्रिका दिनांक [illegible]
4. राजस्थान पत्रिका दिनांक [illegible]

सन्दर्भ ग्रन्थ:
1. [illegible] — [illegible] 1990
2. [illegible] — [illegible] 2014
3. [illegible] लिमिटेड, नई दिल्ली 2012
4. [illegible] जयपुर [illegible] संस्करण [illegible]

अध्यक्ष
[illegible] विभाग
राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
जयपुर परिसर, जयपुर

ब्रह्मीभिः

प्रो. शिवकान्त झा

मातृकाशब्दस्य व्युत्पत्तिः अर्थश्च–

[illegible] – [illegible] मातृका [illegible] पाण्डुलिपि [illegible] [illegible] [illegible] अथवा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

मातृका [illegible] [illegible] [illegible] मातृका। [illegible] (13/96) [illegible] मातृकागणाः॥ [illegible]। मातृस्थानीया [illegible] माता [illegible] वर्णमाला इति मेदिनी/हेमचन्द्रः। [illegible] [illegible] यथा

मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी।
ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी॥ इत्यादि

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] यथा –

एषा माला भवेद्दिव्या ह्रिमात्रो दीर्घ उच्यते।
त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यञ्जनं चार्धमात्रिकम्॥

"[illegible]" इत्यादि [illegible] [illegible] पाण्डुलिपि [illegible] [illegible]।

पाण्डुलिपि अर्थः विकासक्रमश्च

[illegible] पाण्डुलिपि [illegible] [illegible] पाण्डुः शब्दः [illegible] [illegible], [illegible] पाण्डुः। [illegible] पाण्डुः पाण्डु' इत्यमरः। पाण्डुस्तु पीतभागार्धः केतकीधूलिसन्निभः' इति शब्दार्णवः। पाण्डुः कुन्तीपतौ इति मेदिनी।

लेपः – लिप् धातुः [illegible] लिपि [illegible] लिपिः (लिप–क्तिन्) लेपः (लिप+घञ्) लेपनम् (लिप्– ल्युट्) लेपकः (लिप+ण्वुल्) [illegible] अथवा [illegible] [illegible] [illegible] लिपि [illegible] [illegible] लिपिकः [illegible] [illegible] यथा –

[illegible]

[illegible] इति [illegible]। [illegible]
[illegible]
[illegible] लिपिः [illegible]

नापि [illegible] कृताः यथा [illegible] लिपिकरोऽक्षरचणोऽक्षरचुञ्चुश्च लेखके [illegible]। लिपिं करोति [illegible] .. .. इत्यादि [illegible] आपे। [illegible] ... [illegible] आपे।। [illegible] 'शोलियन [illegible]' [illegible] इत्यादि [illegible]।

[illegible] लिपि [illegible]। [illegible]

शिलालेखः, ताम्रलेखः, [illegible], भित्तिलेखः [illegible] प्रतिष्ठिता जाता। [illegible]। मातृका शब्दः अभिलेखार्थे एव प्रयुज्यते।

[illegible] भूर्जपत्रेषु, [illegible], [illegible] कर्गजपत्रेषु वा [illegible] सुरक्षिताः सन्ति। [illegible] नेशनल मिशन फॉर मैनुस्क्रिप्ट्स इति [illegible] कार्यं करोति।

मातृका [illegible] इति शब्दः [illegible]

[illegible] भूर्जपत्रमातृका, ताडपत्रमातृका, कर्गजमातृका च [illegible] इति [illegible]। मातृकालेखनं [illegible]।

1. भूर्जपत्रमातृकाप्रस्तुतीकरणविधिः– [illegible]। [illegible]। [illegible]। भूर्जः इति [illegible]। [illegible]। [illegible] भूर्जपत्रेषु [illegible] अपाकरोति भुजंगस्य [illegible]। कालिदासस्य कुमारसम्भवे [illegible] कृतः।

2. ताडपत्रमातृकाप्रस्तुतीकरणविधिः– प्राचीनकाले [illegible] ताडपत्रं [illegible]। [illegible] ताडपत्रेषु [illegible]

[illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । तथाहि

(क) [illegible] ।

(ख) [illegible] ।

(ग) [illegible]

(घ) [illegible] ।

(ङ) [illegible] ।

(च) [illegible]

(छ) [illegible] ।

(ज) [illegible] ।

(झ) [illegible] ।

(ञ) [illegible] ।

(३) [illegible] — [illegible] । [illegible] —

(क) [illegible] ।

(ख) [illegible] ।

(ग) [illegible] ।

(घ) [illegible] ।

(ङ) [illegible] ।

(च) [illegible] ।

(छ) [illegible] । [illegible]

(ट) [illegible]

(ङ) [illegible]

(च) [illegible]

(छ) [illegible]

(ज) [illegible]

(झ) [illegible]

(ञ) [illegible]

(ण) [illegible]

(त) [illegible]

(थ) [illegible]

(द) [illegible]

[illegible]

[illegible]

(क) [illegible]

(ख) [illegible]

(ग) [illegible]

(ख) [illegible] लिखितानां [illegible]
[illegible]

(ग) [illegible] 'क', 'ख', 'ग', [illegible]
[illegible]

(घ) [illegible]
[illegible]

(ङ) [illegible]

(च) [illegible] यथा– [illegible]
[illegible]

(छ) [illegible]

(ज) [illegible]

(झ) [illegible]

मूलपाठनिर्णयस्य प्रक्रिया–

[illegible]

1. [illegible] 2. [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] "[illegible]" [illegible]

[illegible]

[illegible] ... मेव।

[illegible] ... 10, ... 15, ... 16, ... 18 ... (क) ... (ख) ... . [illegible]

[illegible]

पाठचयनम् – [illegible]

पाठसंशोधनम् – [illegible]

[illegible]

पुष्पिकासंशोधनविधिः – [illegible]

[illegible]

1. [illegible]

2. [illegible]

[illegible]

व्याडीयं चरितम्

मङ्गलाचरणम् (Benediction)

प्रो. योगी कमलचन्द्रः 'नाथः'

मङ्गलाचरणम् (Benediction)

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥1॥

प्रस्तुतीकरणम् (Presentation)

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥4॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥6॥
देश-विदेशेषु [illegible] यथाविधि।
[illegible] व्याडीयं चरितं [illegible] ॥7॥
[illegible]

व्याडिपरिचयः (Introduction of Vyadi)

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥9॥
[illegible]
[illegible] ॥10॥

[illegible] व्याडिना कृतानीः।
[illegible] शुभं [illegible], [illegible]।। 2
[illegible] तु, [illegible]।
[illegible] शुभं [illegible], [illegible]।। 3।
[illegible] कोटि [illegible], [illegible]।
[illegible], [illegible]।। 4
[illegible] कृत. व्याडि [illegible]।
[illegible]।। 5.
[illegible], [illegible]
[illegible]।। 6
व्याडि [illegible] [illegible],
[illegible]।। 7.
[illegible] व्याडि [illegible]
[illegible], [illegible]।। 8
[illegible], [illegible].
[illegible]।। 9
[illegible], [illegible]।
[illegible]।। 10
व्याडिना [illegible], [illegible]:

व्याडिकृतय: (Works of Vyadi)

व्याडिना कृतग्रन्था [illegible]: 30
(क) [illegible]।।
(ख) [illegible], (ग) [illegible]।
[illegible]।।
(घ) [illegible], [illegible], (ङ) [illegible]।
(च) [illegible], (छ) [illegible]।।
(ज) [illegible], [illegible]।
(झ) [illegible] (ञ) [illegible]।।
(ट) [illegible]।।

चरित-विमर्श: (Character Discussion)

व्याडिना [illegible], व्याडिना [illegible]:
[illegible], [illegible]।।

[illegible]

[illegible]

[illegible] ४५

[illegible] ॥

[illegible] ॥४६॥

[illegible]

[illegible] ॥४७॥

[illegible] ॥

[illegible] ॥४८

[illegible]

[illegible] ॥४९

[illegible]

[illegible] ॥५०॥

[illegible] ॥

[illegible] ॥५१

[illegible]

[illegible] ५२

[illegible]

[illegible] ॥५३

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible] ५४

उच्च शिक्षा

[illegible] ॥

[illegible] ॥५५॥

[illegible] ॥

[illegible] ॥५६

दीक्षा-स्थानम्

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible] ५७

[illegible] ।

[illegible]
[illegible]

त्याग-शील.

[illegible] 59
[illegible] काव्यार्थ, [illegible]॥
[illegible] 60

तपोधनी

[illegible]
[illegible] 61
[illegible]
[illegible] 62
[illegible]
[illegible] 63

महामुनि:

[illegible]
[illegible] 64
[illegible]
[illegible] 65
[illegible]
[illegible] 66
[illegible]
[illegible] 67

उत्तमशोधी

[illegible]
[illegible] 68
[illegible]
[illegible] 69
[illegible]
[illegible] 70
[illegible]
[illegible] 71
[illegible]
[illegible] 72

नानार्जुन-[illegible] [illegible]-[illegible] ||

नाम्बेक्ता: [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] |73

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]||

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ||74

[illegible]-[illegible], [illegible] [illegible]-[illegible],

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]||[illegible]

21 [illegible] ([illegible] [illegible]) ख्याति:

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],

[illegible]-[illegible]-[illegible]-[illegible]-[illegible] [illegible] |76

[illegible] [illegible] [illegible]-[illegible],

[illegible] [illegible] ||77

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible],

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] |78

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]||[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]—

[illegible] [illegible] [illegible] 80

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

काव्य [illegible] ख्याति:, [illegible] [illegible] ([illegible] [illegible] [illegible]) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible], [illegible] [illegible] [illegible]) [illegible] [illegible] 1972, [illegible] 280 [illegible] तथा [illegible]—

[illegible] [illegible], [illegible]|

[illegible] [illegible], [illegible]| [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible], [illegible] [illegible]| 83

समीक्षा – [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]|

ख्याति–[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]||

[illegible] [illegible] 2855 [illegible] 2930 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

जन्मभूमि: [illegible] नगरम्

([illegible]-[illegible] [illegible] [illegible]-[illegible]- [illegible])

आङ्काराः [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] (आ[illegible])

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] निशांप. [illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥86

सरलतम [illegible] निर्माण विधिः

[illegible] 87
[illegible]
[illegible] ॥88
[illegible]
[illegible] 89
[illegible] 90

[illegible]

[illegible] विकृति [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible] 92

[illegible] ॥193

[illegible] ॥194

[illegible] ॥195

[illegible] ॥196

[illegible] ॥197

[illegible] ॥198

[illegible] ॥199

[illegible] ॥200

[illegible] ॥201

[illegible] ॥202

[illegible] ॥203

[illegible] ॥204

[illegible] ॥205

[illegible]
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
[illegible] परिसर, [illegible]

व्यक्तिविवेके सूचितं दुःश्रवत्वाभिधानमनौचित्यम्

प्रो. रामकुमारशर्मा

[illegible] व्यक्तिविवेककृता [illegible] शब्दानौचित्यं विधेयाविमर्शादिना विस्तरेण तथा प्रतिपादितं यथा [illegible] नापलपनीयम्। तेन प्रसङ्गतः दुःश्रवत्वाभिधानमनौचित्यं कथितं [illegible], किन्तु न विस्तरेण प्रतिपादितम्, अनौचित्यमिदं [illegible] प्रतिपाद्यते।

काव्यरचनायां [illegible] '[illegible] [illegible]' इति [illegible] [illegible] [illegible] 'मुख्यार्थहतिर्दोषः' [illegible] [illegible] 'औचित्यं प्राहुराचार्याः सदृशं किल यस्य यत्। उचितस्य हि यो भावस्तदौचित्यं प्रचक्षते॥' [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ध्वनिकृता—

"अनौचित्यादृते नान्यद्रसभङ्गस्य कारणम्।
प्रसिद्धौचित्यबन्धस्तु रसस्योपनिषत् परा॥"

इति [illegible] ध्वनिकृत् [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] तत्र [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दुःश्रवत्वाभिधानमनौचित्यं सूचितं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] दुःश्रवत्व [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दुःश्रवत्वं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दुःश्रवत्वं विधेयाविमर्श [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

'शिष्टं नाम हि [illegible] लघु।
वैयाकरणाः [illegible]॥'

इति [illegible] अत्र [illegible] शब्दे [illegible] इति शब्द [illegible] 'श' इति [illegible] इति [illegible]।

[illegible] 'अत एव [illegible] शब्दानुशासन [illegible]।' इति [illegible] स्वीकृतम्। [illegible] इति [illegible] इति 'छन्दांसि [illegible] छन्दोभिः [illegible] सर्वेभ्यश्छन्दोभिः [illegible] ...छन्दोभिर्हि देवाः स्वर्गं लोकं समाश्नुवत। .. यो वा [illegible] स [illegible] [illegible]। [illegible]

[illegible] इति [illegible]। [illegible]

न सोऽस्ति प्रत्ययो लोके यः शब्दानुगमादृते।
अनुविद्धमिव ज्ञानं सर्वं शब्देन भासते॥'

इति [illegible] [illegible] 'शास्त्रान्तरेष्वपि [illegible] [illegible] स्यात्। [illegible]

सार्वत्रिकम्। विपर्ययेण च '[illegible]' इति [illegible] इति [illegible] च, '[illegible]' इति [illegible] 'कदा संपादयिष्यामि इति, न तु, कदा संपादयामि' इति। एवं त्रैकालिकेऽपि आगमे [illegible]।" [illegible]

'आगमनामाख्यातनिपातोपसर्गसमासतद्धितैर्युक्तः।
संधिवचनविभक्त्युपग्रहनियुक्तो वाचिकाभिनयः॥'

इति [illegible] व्याख्यातं [illegible]। [illegible] लौकिकरूपकप्रधानकाव्यरूपेषु [illegible] शब्दानां [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

'यो वागभिनयः प्रोक्तो मया पूर्वं द्विजोत्तमाः।
लक्षणं तस्य वक्ष्यामि स्वरव्यञ्जनसंभवम्॥
वाचि यत्नस्तु कर्तव्यो नाट्यस्यैषा तनुः स्मृता।
अङ्गनेपथ्यसत्त्वानि वाक्यार्थं व्यञ्जयन्ति हि॥
वाङ्मयानीह शास्त्राणि वाङ्निष्ठानि तथैव च।
तस्माद्वाचः परं नास्ति वाग्घि सर्वस्य कारणम्॥
निबद्धाक्षरसंयुक्तं यतिच्छेदसमन्वितम्।
निबद्धं तु पदं ज्ञेयं प्रमाणनियतात्मकम्॥
छन्दोहीनो न शब्दोऽस्ति न च्छन्दः शब्दवर्जितम्।
तस्मात्तूभयसंयोगो नाट्यस्योद्योतकः स्मृतः॥'

इत्यादि [illegible]

[illegible] '[illegible]', तथा '[illegible]' इति [illegible] [illegible]। [illegible] शब्दस्यांशाए [illegible] [illegible]। तथा

"अपूतमपूतं [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] पुनर्[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]॥

अत्र [illegible] [illegible] [illegible]। काव्यप्रकाश[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]। यद्यपि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

संदर्भः

1. [illegible] [illegible] : [illegible]
2. [illegible] - [illegible] पृ. [illegible], [illegible], [illegible] 201[illegible] ई.।
4. [illegible] 118 पृ. [illegible] [illegible]
5. [illegible] - [illegible] पृ. (Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona 1950)
6. [illegible] [illegible] [illegible]
7. [illegible] - [illegible] पृ. [illegible], [illegible], [illegible] - 2005
8. [illegible] of Dharmakirti (Vol-1, Parimal Publications Delhi, Fourth Edition-2012) - 100 karika [illegible] [illegible] page
9. [illegible] [illegible] - [illegible] पृ. [illegible] [illegible] [illegible]
10. [illegible] 276 पृ.
11. [illegible] of Dharmakirti (Vol 2, Parimal Publications Delhi, Fourth Edition 2012) 1[illegible], 7 karikas
12. [illegible] of Dharmakirti (Vol-1, Parimal Publications Delhi, Fourth Edition-2012) - 100 karika.
13. [illegible] of Dharmakirti (Vol-2, Parimal Publications Delhi, Fourth Edition-2012) - 100 karika [illegible] [illegible] page
14. [illegible] - [illegible] पृ. (Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona 1950)
15. [illegible] - [illegible] पृ. [illegible] [illegible] 196[illegible]
16. [illegible]

[illegible] [illegible]
केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, [illegible], [illegible]

अपादानम्

प्रो. श्रीप्रमिश्र

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

आगतो [illegible] [illegible] वा यदि [illegible]।

[illegible]पादानमुच्यते ॥इति॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

न सोऽस्ति प्रत्ययो लोके यः शब्दानुगमादृते ।

अनुविद्धमिव ज्ञानं सर्वं शब्देन भासते ॥इति॥ इति ह्युक्तं ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

तस्याऽव्यक्तस्य पानं [illegible] ।

पततो [illegible] ॥

[illegible]

[illegible] ।

विभागं प्रतिभक्तं तु [illegible] ॥ इति ॥

[illegible] अपर अथवा [illegible] । तदुक्तम्

येषामन्यक्रियापेक्षमवसितं पृथक् पृथक् ।

येषां स्वक्रियापेक्षं कर्तृत्वं च पृथक्-पृथक् इति

[illegible] अन्यथा [illegible] स्यात् । [illegible] इत्यादौ [illegible]

[illegible]

[illegible]

निर्दिष्टविषयं किंचिदुपात्तविषयं तथा ।

अपेक्षितक्रियं चेति त्रिधाधारमुच्यते ॥ इति ॥

[illegible] इत्यादौ ।

[illegible]

[illegible]

[illegible] एवं [illegible] इति [illegible]

[illegible]

[illegible] – [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] – [illegible]

[illegible]

[illegible] – [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] । भाष्यकारेण [illegible] [illegible]

[illegible] । [illegible] इति [illegible] ।

कृष्णे [illegible] । अत्र [illegible] । [illegible] ।

[illegible] । [illegible] इति ।

[illegible] इति [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ।

[illegible]

[illegible] इति [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] इति [illegible] । [illegible] ।

[illegible]

[illegible]

नेपाल का संस्कृत साहित्य

प्रो. [illegible]ाकान्त पाण्डेय

भारत और नेपाल के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध उतने ही पुराने हैं जितनी कि इस आर्य संस्कृति के मानव और वसुधैव कुटुम्बकम् के भाव से ओतप्रोत रही है। दोनों देशों के राजनैतिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध जितने पुराने हैं उतने ही प्रगाढ़ भी। सिद्धार्थ [illegible] ने अपने आचरण और सदाचरण से उनकी शिक्षा को भारत में प्रचारित किया। आज भी नेपाल की [illegible] दर्शन की [illegible] उपनिषद् विद्या [illegible] के रूप में [illegible] है। [illegible] जहाँ बौद्ध दर्शन के भी अनेक [illegible] ग्रन्थ और पाण्डुलिपियाँ [illegible] बृहत्कथा का [illegible] नेपाल के साहित्य और संस्कृति में [illegible] है। इन ग्रन्थों की [illegible] अनेक [illegible] हुईं।

नेपाल में प्राचीन संस्कृत साहित्य की चर्चा का [illegible] में वहाँ के शिलालेखों से करना [illegible] शिलालेखों [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] शिलालेखों का [illegible] किन्तु [illegible] शिलालेखों [illegible]।

नेपाल के लिच्छवि [illegible] सन् 46[illegible] ई. से [illegible] ई. के मध्य [illegible] अनेक शिलालेख उत्कीर्ण कराये किन्तु उनमें से अब कुल 19[illegible] शिलालेख प्राप्त होते हैं। इनका [illegible] "इंस्क्रिप्शन्स ऑफ नेपाल" नामक [illegible] देवनागरी लिप्यन्तरण अंग्रेजी एवं हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशित हो चुका है। ये शिलालेख नेपाल और भारत के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक सम्बन्ध का तो प्रमाण देते ही हैं, इनमें [illegible] शैली का भी [illegible] है। उदाहरणार्थ मानदेव के [illegible] में [illegible] अभिलिखित [illegible] है—

> प्रत्यागत्य [illegible] दीर्घं [illegible] च
>
> [illegible] पुत्र[illegible] पिता [illegible]।
>
> [illegible] पुत्र[illegible] [illegible] प्राणै[illegible] किं मम
>
> [illegible] पुत्रक [illegible]॥

[illegible] की [illegible] [illegible] के [illegible] है, [illegible] दोनों [illegible] [illegible]

[illegible] के [illegible] हो जाने के [illegible] कोई प्रयोजन नहीं [illegible] नहीं है। [illegible]

किं पे योगविधानविस्तरकृतैर्गुह्यागमैर्दुष्करैः
मायाम्ब्वानिधिं समागमविधौ पतां त्विता जीतितुम्।
मायोन्मेषपतांधेन खलु तवा दीनात्मना मृत्युना
पादौ पंकिजशाविपीडय शिरसा विज्ञापिता मदनः॥

[illegible] संसार की [illegible] का [illegible] करते हैं [illegible] से वैसे इस [illegible] योग-विधान से [illegible] कोई प्रयोजन नहीं [illegible] संसार [illegible] है। [illegible] की [illegible] है। इसलिये यह [illegible] का [illegible] हुई [illegible] जाने को [illegible] होते हैं [illegible] के चरणों में [illegible] जाता है [illegible] कहता है—

किं योगेशं किं हि जीवितसुखैर्व्यर्थमिलोगि [illegible]
[illegible] पुत्रमहं [illegible] पात्रदेवं चाम्बवीतो दिवम्।
इत्येवं मुखपङ्कजाननगर्भितास्तुपितैरुकं
वाक्याहीविंशीव मारवशागा वन्द्रा ननन्तस्थुभो॥

[illegible] आदि [illegible] से [illegible] क्या प्रयोजन [illegible] हुआ। [illegible] से [illegible] के मुख [illegible] से निकले [illegible] की [illegible] सकी [illegible]।

[illegible] के [illegible] का आवेग [illegible] के [illegible] को [illegible] कर देता है। [illegible] को [illegible] का [illegible] को [illegible] के [illegible] हैं। [illegible]

[illegible] हुआ है [illegible] आदि अलंकारों का [illegible] और [illegible] है [illegible] जा सकते हैं

[illegible]
गौरोदृशादिकल्लिकांशल्पाति [illegible] आत्मजा।
देवी [illegible] कल्याचित्तगुणैर्युक्ता [illegible]
वन्दैव्या भगवन्मातृकुलता लक्ष्मीरिता [illegible]॥

[illegible] शिलालेखों का विशेष महत्त्व ऐतिहासिक दृष्टि से है [illegible] हुए हैं [illegible] नेपाल में संस्कृत साहित्य की रचना और वहाँ के कवियों की काव्यप्रतिभा को इन शिलालेखों के माध्यम से प्रमाणित किया जा सकता है। जैसे, इन्होंने [illegible] [illegible] में शिखरिणीछन्द [illegible] [illegible] नाश के सभी [illegible] का जो वर्णन किया है, वह निश्चय ही उनकी उत्कृष्ट प्रतिभा का चमत्कार और इसका अपना गुणगान भी है। [illegible] नाश [illegible] सुन्दर बना है तथा संभव का पूर्ण प्रमाण है।

मानदेव के काल की इस रचना से यह भी सिद्ध होता है कि संस्कृत नेपाल में इससे पहले [illegible] से व्यवहार होती रही होगी।

[illegible] की यह संस्कृत [illegible] [illegible] आधुनिक काल में लिखा गया [illegible] संस्कृत साहित्य नेपाल में प्राप्त संस्कृत साहित्य का प्रतिबिम्ब [illegible] जाता है। इस कालखण्ड में [illegible] में अनेक महाकाव्यों, नाटकों,

[illegible] तथा [illegible] आदि का [illegible] नेपाल में [illegible] काव्यों का संक्षिप्त परिचय निम्न है

(क) महाकाव्य

नेपाल में [illegible] महाकाव्यों का प्रणयन हुआ। इन महाकाव्यों के उपजीव्य रामायण, महाभारत, पुराण आदि ग्रन्थ रहे किन्तु कवियों ने इस कथावस्तु को अपने युग की आवश्यकता के अनुसार अनुरूपता प्रदान की। इस प्रकार [illegible] का [illegible], मानदेव [illegible] का [illegible], तथा इस प्रकार के अन्य महाकाव्य इसके उदाहरण हैं।

[illegible] महाकवियों में पुण्यानन्द [illegible] का नाम उल्लेख्य है। इनका जन्म [illegible] [illegible] 1970 [illegible] में हुआ। इनके [illegible] तथा [illegible] [illegible] संस्कृत [illegible] में हुई।

दुर्गाप्रसाद [illegible] प्रयोजन धर्म, अर्थ, [illegible] आदि – [illegible] समाज-सुधार [illegible] का [illegible] है। [illegible] सन् 2003 से 2005 के मध्य हुई तथा [illegible] अप्रैल 2007 [illegible] ने [illegible] से [illegible] नेपाल [illegible] के माध्यम से [illegible] द्वारा जनता के शोषण के विरुद्ध [illegible] आवाज उठायी।

इस महाकाव्य में अनुष्टुप्, [illegible] छन्दों का प्रयोग हुआ है तथा इसमें कुल 752 पद्य हैं।

महाकाव्य में स्वाभाविक अलंकारों का प्रयोग हुआ है। उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, अपह्नुति, स्वाभावोक्ति और अर्थान्तरन्यास कवि के प्रिय अलंकार हैं। यहाँ उपमा का एक उदाहरण द्रष्टव्य है- कपोतीव [illegible] विपाना

प्रसन्नाङ्कि पृथक्ना पक्षैः।

[illegible]

नापस्य शापस्य न पावकां गता।। ह.च. 11.18

[illegible] विरह के [illegible] अग्नि में जल रही थी [illegible] की पुत्रिका [illegible] शोषण की [illegible] नहीं [illegible] दूसरे हृदय से अपने [illegible] में प्रवृत्त [illegible] हरिश्चन्द्र [illegible] की [illegible] अध्याय के [illegible] में कवि की [illegible] पद्य में देखी जा सकती है

[illegible]

[illegible] चामरवृष्टिरथीवृत्ता।।

[illegible] पाणिपल्लवाग्रं.

[illegible] रजनी पशुं मतगम।। [illegible]।।

कवि ने इस महाकाव्य में [illegible] नहीं किया। [illegible] नेपाल की जनता के [illegible] का वर्णन करते हुए तत्कालीन [illegible] के [illegible] अपनी [illegible] प्रकट किया है

इस महाकाव्य में करुण रस अङ्गी है। शृंगार [illegible] अङ्ग के रूप में उपस्थित है। हरिश्चन्द्र [illegible] करुण रस [illegible] प्रधान [illegible] है। [illegible] हरिश्चन्द्र के [illegible] करते हुए [illegible] है-

[illegible] शुभदकुला

[illegible]।

[illegible]

शशाङ्क [illegible]।।

शोक से व्याकुल [illegible] के [illegible] हरिश्चन्द्र को [illegible] आँखें से [illegible] कुछ [illegible] नहीं पायी।

हरिश्चन्द्र [illegible] लोक कल्याण के लिये उद्यत थे। उनका [illegible] प्रजा की [illegible] के लिये [illegible]

[illegible] कहा है कि [illegible] और [illegible] को [illegible] [illegible] [illegible] रहे सदा [illegible] के रूप में सुशोभित हो रहा था

त्यागं सदा लोकहिताय चित्तं
संतापकं दुःसहं शरीरम्।
सत्येन पूतं वचनं च बिभ्रत्
स एव पुनं त्रिविधं तपोऽधनः।।

काव्यशास्त्रियों ने महाकाव्य रचना के कतिपय सामान्य नियमों का उल्लेख किया है। जिनके अनुसार महाकाव्य में प्रकृति वर्णन आवश्यक है। पूर्वोक्त कारण इस महाकाव्य में प्रकृति वर्णन के लिए [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] सौन्दर्य वर्णन करते हुए [illegible] का निदर्शन है—

प्रातः सन्ध्या [illegible] देवी
सा स्वर्णाभा किरणधारी [illegible]।
स्नातुं गता [illegible] [illegible] [illegible]।।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] की किरणों के [illegible] है [illegible] नहीं है जाती और स्नान करने के लिये गंगा के जल में प्रविष्ट हुए। [illegible] [illegible] गंगा की लहरों में [illegible] [illegible] रहे थे।

कवि ने अपने समय की सामाजिक स्थिति का वर्णन करते हुए शासन का भी वर्णन किया है, साथ ही तत्कालीन [illegible] के प्रति [illegible] [illegible] करते हुए [illegible] [illegible] का वर्णन किया है

भोगिश्च जना लोभाश्च जना
आत्मीयैरपि [illegible]।
शोषणं जना वर्मोति [illegible]
सन्त निरङ्कुशं शासनय [illegible]।।

ग्रीष्म ऋतु का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] किया है। [illegible] में ग्रीष्म के [illegible] [illegible] [illegible] भी [illegible] [illegible] है —

ग्रीष्मस्य [illegible] विशिष्टं
[illegible] [illegible]।
संशिलान्न [illegible] [illegible] सिन्धे
ग्लानिः सदा [illegible]।।

यहाँ ग्रीष्म का वर्णन के [illegible] [illegible] तत्कालीन [illegible] के [illegible] [illegible] की [illegible], [illegible] आदि का वर्णन किया गया है।

[illegible] महाकाव्य [illegible] हैं। [illegible] आदि की [illegible] महाकाव्य में है। [illegible] के अनुकरणात्मक शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। महाकाव्य का [illegible] द्वारा [illegible] को [illegible] होता है-

नायकाग्निपरीक्षा में नायका [illegible]।
आत्मान्याकं [illegible] धन्य: [illegible]॥
[illegible] [illegible] ता न [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible]॥
किं [illegible] [illegible] हृदयं मम
[illegible] भूमीशाः मा गृधः कस्यस्विद् धनम्।

इस महाकाव्य का [illegible] — [illegible]

[illegible] महाकाव्य [illegible] की। [illegible] किया गया है। [illegible] तथा [illegible] का वर्णन किया है। यह महाकाव्य [illegible] द्वारा [illegible] पर रचा जाता है। अन्त में [illegible] के अनुसार राजा को विष्णु का अंश [illegible] है। [illegible] अपने काव्य को [illegible] है।

महाकवि [illegible] द्वारा [illegible] 'शा[illegible]' महाकाव्य का प्रकाशन [illegible] ई. में [illegible] हुआ। इस महाकाव्य में [illegible] का वर्णन है। इस महाकाव्य में [illegible] तथा [illegible] की [illegible] का [illegible] होता है। कवि [illegible] पर गर्व है। [illegible] का चित्र खींचता हुआ [illegible] है-

सर्वकान्यस्यसन्यो यो नानाभिगिविभूषित:।
अरण्यानीमिमामुक्त्वा निद्राश्यानिनाश्रित:॥
सोऽयं [illegible] नो [illegible]।
निधानं सर्वधर्माणां जयत्यस्मिन् महीतले॥

[illegible] 1. [illegible] 2. [illegible] 3. [illegible] 4. [illegible] तथा 5. [illegible] '[illegible]' महाकाव्य 5 [illegible] है। [illegible] का परिचय है। भारत में इस महाकाव्य का [illegible] हुआ। भारत के [illegible] ने इस महाकाव्य का अभिनन्दन किया

[illegible] महाकाव्य का [illegible] में [illegible] है। इसमें कुल 19

है। इसमें [illegible] काव्य को ब्रह्मविद्यापरक माना है।

> कृष्णापदारविन्दचित्तं कवींपरिनिष्ठात्मकम्।
> ब्रह्मविद्यापरं काव्यं तदिदं पूर्णतामगात्॥

गीतदिगम्बरमहाकाव्य जयदेव के गीत गोविन्द के अनुकरण पर लिखा गया है। इसमें कुल [illegible] सर्ग हैं। [illegible] कालिदास के कुमारसंभव का [illegible] यहाँ परिलक्षित होता है। महाकाव्य के मङ्गलाचरण में कवि ने स्वयं इसके विषयवस्तु का संकेत किया है—

> निर्गत्येव नराधरागकोणितं ब्रह्माण्डमध्यङ्गाम्
> तस्मिन् स्वं विनिवेश्य योजनदृशा [illegible]:
> [illegible]:
> [illegible] लीलाविहारा इह॥

[illegible] श्रीमद्भागवत में वर्णित [illegible] है।

महाकवि [illegible] द्वारा रचित '[illegible]' [illegible] है। इसमें कुल 12 सर्ग हैं। इसका दूसरा नाम '[illegible]' है। इसमें मुख्य आठ सर्गों में श्रीमद्भागवतपुराण [illegible] कथा का वर्णन किया गया है।

इनके अतिरिक्त [illegible] का '[illegible]' महाकाव्य भी प्रकाशित है। इस महाकाव्य में [illegible] सर्गों में [illegible] वर्णित है॥

महाकवि [illegible] का 18 सर्गात्मक [illegible] भी [illegible] में वर्णित महाराज पृथु की कथा का वर्णन है। [illegible] देश का इतिहास [illegible] मिलता है। नेपाल में रचित कुछ महत्त्वपूर्ण काव्य निम्नलिखित हैं –

खण्डकाव्य—

1. नाथयोगेश्वरकाव्यम् – माणिक्य उपाध्याय

नेपाल के [illegible] संस्कृत कवियों [illegible] है। [illegible] न केवल महाकाव्यों की रचना की गई है अपितु अनेक गद्य, पद्य और [illegible] काव्यों की रचना की गई है। [illegible] नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय [illegible] में [illegible] प्रकाशित है। तदनुसार नेपाल के प्रमुख कवियों तथा उनके काव्यों का उल्लेख इस निबन्ध में किया जा रहा है। यद्यपि इन काव्यों के प्रकाशन आदि का सम्यक् उल्लेख यहाँ नहीं हुआ [illegible] इनके उल्लेख से विद्वानों को अनुसंधान की दिशा मिल सकेगी।

[illegible]

क्र.सं.	ग्रन्थनाम	कवि	प्रकाश-वर्ष (वि.सं.)
1.	[illegible]	[illegible]	2032
2.	[illegible]	[illegible]	
3.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
4.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
5.	[illegible]	[illegible]	
6.	[illegible]	[illegible]	2026
7.	[illegible]	[illegible]	2009
8.	[illegible]	[illegible]	2014
9.	[illegible]	[illegible]	2035
10.	[illegible]	[illegible]	2011
11.	[illegible]	[illegible]	2022
12.	[illegible]	[illegible]	2019
13.	[illegible]	[illegible]	2031
14.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
15.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
16.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
17.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
18.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
19.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
20.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
21.	[illegible]	[illegible]	2012
22.	[illegible]	[illegible]	1985, 2034
23.	[illegible]	[illegible]	2050
24.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
25.	[illegible]	[illegible]	2034
26.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
27.	[illegible]	[illegible]	[illegible]

28.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
29.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
30.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
31.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
32.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
33.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
34.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
35.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
36.	[illegible]	[illegible]	2028
37.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
38.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
39.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
40.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
41.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
42.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
43.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
44.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
45.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
46.	[illegible]	[illegible]	
47.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
48.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
49.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
50.	[illegible]	[illegible]	2039
51.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
52.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
53.	[illegible]	[illegible]	
54.	[illegible]	[illegible]	2050
55.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
56.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
57.	[illegible]	[illegible]	[illegible]

58.	[illegible] ([illegible])	[illegible]	2031
59.	[illegible] ([illegible])	[illegible]	2039
60.	[illegible] ([illegible])	[illegible]	2011
61.	[illegible] ([illegible])	[illegible]	2017
62.	[illegible] ([illegible])	[illegible]	[illegible]
63.	[illegible] ([illegible])	[illegible] ([illegible])	[illegible]
64.	[illegible] ([illegible])	[illegible]	[illegible]
65.	श्री [illegible] ([illegible])	[illegible]	
66.	[illegible] ([illegible])	[illegible]	2027
67.	[illegible] ([illegible])	[illegible]	2037
68.	[illegible] ([illegible])	[illegible]	2037
69.	[illegible] ([illegible])	[illegible]	[illegible]
70.	[illegible] ([illegible])	[illegible]	2067
71.	[illegible] ([illegible])	[illegible]	[illegible]
72.	[illegible] ([illegible])	[illegible]	[illegible]
73.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
74.	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,

[illegible]

अन्वीक्षा

प्रो. [illegible] कुमारी

[illegible] आन्वीक्षिकी [illegible] न्यायशास्त्र [illegible]
[illegible] –

प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम्।
आश्रयः सर्वधर्माणाम् शश्वदान्वीक्षिकी मता॥[1]

आन्वीक्षिकी [illegible]
[illegible] आन्वीक्षिकी [illegible]

आर्षं धर्मोपदेशं च वेदशास्त्राविरोधिना।
यस्तर्केणानुसन्धत्ते स धर्मं वेद नेतरः॥[2]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] न्याय [illegible] – [illegible] न्यायः।[3]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

त्रिधा बुद्धिर्गुणाद्विगुणजात् बुद्धिस्तु द्विविधा मता।
अनुभूतिः स्मृतिश्च स्यादनुभूतिश्चतुर्विधा॥[5]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

अनुमानम्–

[illegible]

[illegible]

[illegible]

उपमानम्

[illegible]

शब्दप्रमाणम्

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां नाशितमात्मनः।
तेषामादित्यवज्ज्ञानं प्रकाशयति तत्परम्॥[24]

सन्दर्भाः–

1. [illegible] 2. [illegible]
3. [illegible] 4. [illegible]
5. [illegible] 6. [illegible]
7. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली। 8. [illegible]
9. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली 10. सांख्यकारिका अनुमान खण्ड
11. [illegible] प्रत्यक्ष खण्ड 12. सांख्यकारिका अनुमान खण्ड
13. [illegible] 14. [illegible]
15. [illegible]
16. [illegible] 17. [illegible]
18. तर्कसंग्रह [illegible] के बाद की पंक्ति। 19. [illegible]
20. तर्कसंग्रह [illegible] के बाद की पंक्ति। 21. [illegible] तर्कसंग्रह [illegible]
22. [illegible] 23. तत्रैव।

[illegible]

[illegible]

आचार्यभट्टाकलंकदेवमते "सर्वज्ञसिद्धिः"

आचार्यः कमलेशकुमारजैनः

[illegible] । [illegible] । [illegible] ।

वैदिकदर्शनेषु सर्वज्ञताविचारः—

[illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]—

धर्मज्ञत्वनिषेधश्च केवलोऽत्रोपयुज्यते ।
सर्वमन्यद्विजानंस्तु पुरुषः केन वार्यते ॥

[illegible] । [illegible]

तस्मादनुष्ठेयगतं ज्ञानमस्य विचार्यताम् ।
कीटसंख्यापरिज्ञानं तस्य नः क्वोपयुज्यते ॥
दूरं पश्यतु वा मा वा तत्त्वमिष्टं तु पश्यतु ।
प्रमाणं दूरदर्शी चेदेतान् गृध्रानुपास्महे ॥[1]

[illegible] । [illegible]—

रागादस्य वीतरागत्वे सर्वार्थज्ञानसम्भवः ।
समाहितस्य सकलं चकास्तीति विनिश्चितम् ॥
सर्वेषां वीतरागाणामेतत् कस्मान्न विद्यते ।
पुनः कालान्तरे तेषां सर्वज्ञगुणरागिणाम् ।
अल्पयत्नेन सर्वज्ञत्वस्य सिद्धिरवारिता ॥

[illegible] सर्वज्ञत्वं [illegible]। [illegible]
[illegible]

> [illegible] नियोगतः।
>
> [illegible]॥

[illegible] सर्वज्ञत्वं [illegible]। [illegible] सर्वज्ञत्वं [illegible] स्वीकृतम्। [illegible]

सांख्ययोगदर्शने तु ईश्वरो सर्वज्ञत्वं स्वीकृतं, न तु [illegible] सर्वज्ञत्वं [illegible]

जैनदर्शने तु [illegible] सर्वज्ञत्वं [illegible]

जैनदर्शने [illegible]

जैनदर्शने सर्वज्ञत्वस्य सिद्धिः [illegible] अनुमान प्रमाणेन कृता। [illegible] जैनदर्शने [illegible]

जैनदर्शने [illegible]

तत्त्वज्ञानं प्रमाणं ते युगपत्सर्वभासनम्।

भट्टाकलङ्कदेवस्य सर्वज्ञताविचारः— भट्टाकलङ्कदेवः (ई. सन् 720-780) [illegible] प्रसिद्धः। [illegible] 'अकलङ्कग्रन्थाः' [illegible] प्रसिद्धा जाताः

तेऽपि जैननैयायिकैः [illegible] सर्वज्ञतायाः [illegible] समर्थनं कृतम्। [illegible] ([illegible]) [illegible] सर्वज्ञसिद्धिर्विहिता। तेनोक्तम्' [illegible] तथा च [illegible] एव [illegible]।

आचार्यभट्टाकलङ्कदेवोऽपि [illegible] कथयति-आगत [illegible]

ज्ञस्यावरणविच्छेदे ज्ञेयं किमवशिष्यते।
अप्राप्यकारिणस्तस्मात् सर्वार्थावलोकनम्॥
धीरत्यन्तपरोक्षेऽर्थे न चेत्पुंसां कुतः पुनः।
ज्योतिर्ज्ञानाविसंवादः श्रुताच्चेत्साधनान्तरम्॥

[illegible] ज्ञानं [illegible] न स्यात् [illegible] उक्तं च—

ज्ञो ज्ञेये कथमज्ञः स्यादसति प्रतिबन्धने
दाह्येऽग्निर्दाहको न स्यादसति प्रतिबन्धने॥

[illegible] सर्वज्ञसिद्धौ [illegible]

"अस्ति सर्वज्ञः, सुनिश्चितासम्भवद्बाधकप्रमाणत्वात् सुखादिवत्।"

[illegible] न ज्ञानं जायते, [illegible] न भवति [illegible] अतीन्द्रियज्ञानस्यापि [illegible] भवति।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सन्दर्भाः–

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible] ...[illegible]
7. [illegible]
8. [illegible]
9. आनर्थप्रपंच, [illegible]
10. [illegible]
11. [illegible]
12. [illegible]
13. [illegible]
14. [illegible]
15. [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]विश्वविद्यालय, [illegible]

व्यापारस्य धात्वर्थत्वे प्रमाणम्

प्रो. विष्णुकान्त पाण्डेय

[illegible]

फलव्यापारयोर्धातुराश्रये तु तिङः स्मृताः ।
फले प्रधानं व्यापारस्तिङर्थस्तु विशेषणम् ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible] इति मीमांसकमतं [illegible] किं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] किन्तु [illegible] [illegible] [illegible] वक्तुं [illegible]। किञ्च [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

अथोक्तं [illegible] [illegible] वक्तुं न शक्यते 'शोणो गौः' [illegible] [illegible] राजपुरुषः इत्यादौ [illegible]। [illegible] न [illegible] यथा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] न [illegible] [illegible] इति [illegible] [illegible]। पुनश्च [illegible] [illegible] यदि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] तथा [illegible] न स्यादिति। एवं [illegible] [illegible] यथा '[illegible]' इत्यत्र [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। अत [illegible] [illegible] इति [illegible] [illegible]

[illegible] च यदि [illegible] [illegible] – [illegible] [illegible] [illegible] स्यात्। [illegible]। न [illegible] [illegible] [illegible]। यदि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]॥

अन्यैश्च

[illegible] [illegible] स्यात् [illegible] न [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible] किं [illegible] [illegible]॥

[illegible] – [illegible], न [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] इति [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] यथा '[illegible] [illegible]' इति [illegible] [illegible] [illegible] '[illegible] [illegible]' इति [illegible] स्यात्। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]॥

इदानीं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] इति सूत्रम्। अत्र [illegible] – [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। न [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] इति [illegible] – '[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] '[illegible]' इति [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] '[illegible]' इति [illegible] '[illegible]' [illegible] [illegible] [illegible] इति [illegible] [illegible] [illegible] यदि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] स्यात्। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] इति [illegible] [illegible] इति [illegible]

[illegible] ‘[illegible]’ [illegible] ।

[illegible]

[illegible] ।

[illegible] । [illegible] आपि न स्यात्।

अत्र भावः– ‘[illegible]’ [illegible] । [illegible]

[illegible] ‘[illegible]’ [illegible] ।

[illegible] । यथा ‘[illegible]’ [illegible] ।

अत्र पुनः [illegible] ‘[illegible]’ [illegible] । ‘[illegible]’ [illegible] (i) एकाक्षरम् (ii) [illegible] (iii) [illegible] (iv) [illegible]

[illegible] एवं क्रियात्मकत्वं [illegible] । तत्र हि

[illegible] क्रियात्मकत्व [illegible] ।

इत्थं [illegible] क्रियात्मकत्वं [illegible] ।

[illegible] ।
न हि [illegible] ॥

[illegible] ।

इत्थं [illegible] क्रियात्मकत्वं [illegible] ।

[illegible] ॥

[illegible] ।

[illegible]
[illegible] संस्कृतविश्वविद्यालय,
[illegible]

व्यक्तिविवेके प्रकृतिप्रक्रमभेदः

डॉ. सनत्कुमारत्रिपाठी

[illegible]

अनुमानेऽन्तर्भावं सर्वस्यैव ध्वनेः प्रकाशयितुम्।
व्यक्तिविवेकं कुरुते प्रणम्य महिमा परां वाचम्॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अनौचित्यादृते नान्यद् रसभङ्गस्य कारणम्।
औचित्योपनिबन्धस्तु रसस्योपनिषत् परा।[1]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

तदा जायन्ते गुणा यदा ते सहृदयैर्गृह्यन्ते।
रविकिरणानुगृहीतानि भवन्ति कमलानि कमलानि॥[4]

[illegible]

यथार्थविचारे [illegible] एव [illegible]।

[illegible]

[illegible]

यथा—

[illegible]।[illegible]

[illegible]

[illegible]

नाथे निशाया नियतेर्नियोगादस्तं गते हन्त निशापि याता।

कुलाङ्गनानां हि दशानुरूपं नातः परं भद्रतरं समस्ति॥[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

न सोऽस्ति प्रत्ययो लोके यः शब्दानुगमादृते।

अनुविद्धमिव ज्ञानं सर्वं शब्देन भासते॥ इति।

[illegible]

संदर्भः–

1. [illegible] – [illegible]
2. [illegible] – पृ.18[illegible]
3. [illegible] पृ.1
4. [illegible] पृ.182
5. [illegible] पृ.172-185
6. [illegible] पृ.2[illegible]
   [illegible]
7. [illegible] – 2,137
8. [illegible]
   [illegible]
   [illegible]
   [illegible]
   [illegible] पृ.1[illegible]
9. [illegible] पृ. 25[illegible]
10. [illegible]
11. [illegible] – 7/2/13
12. [illegible]
    [illegible] – पृ. [illegible]
13. [illegible] पृ.248
14. [illegible]
15. [illegible]
    [illegible]
    [illegible]
16. [illegible] – पृ.25[illegible]
17. [illegible] पृ.[illegible]
18. [illegible] पृ.25[illegible]
19. [illegible]
20. [illegible]
    [illegible]
    [illegible] पृ.[illegible]
21. [illegible] पृ. 25[illegible]
22. [illegible]
    [illegible]
23. [illegible]
24. [illegible]
    [illegible]
25. [illegible]
    [illegible] – [illegible]
26. [illegible]

[illegible]

[illegible], [illegible]

भारतीयवैदिकदर्शनसरितः उपधाराः

डॉ. कुलदीपशर्मा

वैदिकं मूलं [illegible] षड्-दर्शनानि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

अनन्तं [illegible] [illegible], [illegible], [illegible]।

अद्वैतवादः

[illegible] दर्शनेषु अद्वैतदर्शनं प्रथमम् [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अद्वैतवादस्य [illegible] [illegible] मूलम् [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], यथा हि-

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति॥

अर्थात् [illegible] द्वे पक्षिणौ (जीवात्मा परमात्मा च) [illegible]। तौ [illegible] [illegible] वृक्षम् (शरीरम्) आश्रित्य [illegible] [illegible] [illegible] एकः (जीवात्मा) स्वादिष्टफलानि (कर्मफलानि) [illegible] [illegible] द्वितीयः (परमात्मा) तानि फलानि अभुञ्जानः पश्यति।

[illegible] [illegible] [illegible] 'एकत्ववादः' [illegible] [illegible] 'अद्वैतवादः' [illegible]।

भेदाभेदवादः

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] अधिकरोति, [illegible] प्रभवति, [illegible] प्रभवति। [illegible]

[illegible] नास्ति, अपि तु [illegible]। [illegible] अर्थकल्पनामर्हति [illegible]। [illegible] उदाहरणमपि [illegible]

[illegible] करोति।

विशिष्टाद्वैतवादः

[illegible] रामानुजस्य [illegible] कृतम्। [illegible]

[illegible] भवति

[illegible] भवति [illegible] चित् अचित् [illegible] अचित् [illegible] नास्ति [illegible] भवति। [illegible]

[illegible] करोति।

द्वैतवादः

[illegible]

[illegible]

द्वैताद्वैतवादः

[illegible] अस्ति। [illegible]

[illegible]

शैवविशिष्टाद्वैतवादः

[illegible]

वीरशैवविशिष्टाद्वैतवादः

[illegible]

शुद्धाद्वैतवादः

[illegible]

[illegible]

अविभागाद्वैतवादः–

[illegible]

[illegible]

अचिन्त्यभेदाभेदवादः

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] तत्त्वज्ञानं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। एतेषु तत्त्वज्ञानेषु [illegible] भेदः नास्ति, यथोक्तम्

> तीर्थे तीर्थे निर्मलं ब्रह्मवृन्दम्, वृन्दे वृन्दे तत्त्वचिन्तानुवादः।
> वादे वादे जायते तत्त्वबोधः, बोधे बोधे भासते चन्द्रचूडः॥

सहायकग्रन्थाः

1. [illegible], [illegible]; भारतीय दर्शन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. जोशी, [illegible], भारत हेतु शिक्षा दर्शन, [illegible], दिल्ली
3. द्विवेदी, देवीप्रसाद; [illegible], [illegible] प्रकाशन, वाराणसी।
4. पाण्डेय, रामशकल; शिक्षा दर्शन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
5. पाण्डेय, के.पी.: शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, [illegible] प्रकाशन, वाराणसी
6. माथुर, एस.एस.: शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा
7. शर्मा, [illegible], [illegible], [illegible] प्रकाशन, वाराणसी

सन्दर्भाः—

1. [illegible], [illegible]
2. [illegible], 1-1-20
3. [illegible], 2-1-14
4. [illegible], 3

[illegible], [illegible],
[illegible], [illegible], [illegible]

व्यक्तिविवेके नञ्विषयो विधेयाविमर्शः

डॉ. हरीशचन्द्रतिवारी

[illegible]

[illegible]

काव्यस्यात्मनि संज्ञिनि या प्रकाशयति।
सम्बन्धः कुर्वन्ति ता काव्यानुमितिरित्युक्ता इति॥

[illegible]

[illegible]

अनौचित्यादृते नान्यद्रसभङ्गस्य कारणम्।
औचित्योपनिबन्धस्तु रसस्योपनिषत्परा॥

[illegible]

औचित्यस्य चमत्कारकारिणश्चारुचर्वणे।
रसजीवितभूतस्य विचारं कुरुतेऽधुना॥

काव्यस्यालमलङ्कारैः किं मिथ्यागणितैर्गुणैः।
यस्य जीवितमौचित्यं विचिन्त्यापि न दृश्यते॥
अलङ्कारास्त्वलङ्कारा गुणा एव गुणाः सदा।
औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्॥ इति।

[illegible] नाटि [illegible] केन [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] यथा [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] च [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] यथा [illegible] –

[illegible] हि [illegible] [illegible] [illegible]।
मेखलागर्भे [illegible] च हास्यायैवोपजायते॥ इति।

[illegible] च [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। औचित्यशब्दो निष्पद्यते [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible]।
औचित्यमौचित्यं [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

ततो गुल्मः प्रथमात् वाणं वाणाद्गुल्मस्तु गीतयज्ञाः।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]॥ इति [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible] महत्कवे.॥ इति [illegible]।
औचित्य [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]॥ इति [illegible].

औचित्यस्य किं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] च [illegible] [illegible] औचित्यम्। यथा [illegible] क्षेमेन्द्र –

उचितं प्राहुराचार्याः सदृशं किल यस्य यत्।
उचितस्य च यो भावस्तदौचित्यं प्रचक्षते॥ इति

इदमेव औचित्यं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] च [illegible]॥ इति औचित्यविचारचर्चा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] न [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

तत्रापाये चापस्य प्राधान्यात् कर्मतापदा।

आरोपितत्वं तत्रान्यं तद्भावोऽप्यनिराकृतः।। [illegible] इति।

[illegible]

तस्मादुभयमभावेऽपि तद्रूपत्वं तदात्मता।

आत्मत्वं विरोधश्च तयोर्भावः सदा प्रकीर्तिताः।। [illegible] इति

[illegible]

तत्रैव द्वौ तापापन्नौ पर्युदासप्रसज्यकौ।

पर्युदासः सदृग्राही प्रसज्यस्तु निषेधकृत्।।

प्राधान्यं हि विधेर्यत्र प्रतिषेधेऽप्रधानता।
पर्युदासः स विज्ञेयो यत्रोत्तरपदेन नञ्॥
अप्राधान्यं विधेर्यत्र प्रतिषेधे प्रधानता।
प्रसज्यप्रतिषेधोऽसौ क्रियया सह यत्र नञ्॥

अर्थात् [illegible] पर्युदास [illegible]। यत्र [illegible] प्राधान्यं [illegible], [illegible] तत्र पर्युदासनञ् [illegible]। यत्र [illegible] अप्राधान्यं, [illegible] प्रधानता, क्रियया सह [illegible] तत्र [illegible] प्रसज्यप्रतिषेधः [illegible]। [illegible]

[illegible]

[illegible] ।

[illegible] ॥

अर्थात् [illegible] प्रसज्यप्रतिषेधे [illegible]। [illegible]

[illegible]

[illegible] भवति, [illegible]

[illegible]

[illegible] अलङ्काराभावः [illegible], शब्दो न [illegible] [illegible]। [illegible]

[illegible]

[illegible] इत्थं [illegible] –

[illegible]

[illegible] प्राथम्यं [illegible] चाप्यनुमता।

[illegible] औचित्यं माध्यस्थ्यं विधेयता॥ [illegible] इति॥

अर्थात् [illegible]

[illegible] यथा –

दर्शनत्रासहर्षाणि [illegible] च।

[illegible] पुरःस्थानुमतं गमान्[illegible] मे॥

[illegible]

[illegible] न इव. [illegible] क्रमेण [illegible]।

विधेयाविमर्शं [illegible] यथा–

संरम्भः करिकीटमेघशकलोद्देशेन सिंहस्य यः
सर्वस्यैव स जातिमात्रविहितो हेवाकलेशः किल।
इत्याशाद्विरदक्षयाम्बुदघटाबन्धेऽप्यसंरब्धवान्
योऽसौ कुत्र चमत्कृतेरतिशयं यात्वम्बिके केसरी॥

[illegible]

अत्र [illegible] 'असंरब्धवान्' [illegible] 'योऽसौ' [illegible] इव. अत्र [illegible] नार्थः [illegible] पर्युदास [illegible]।

[illegible] पर्युदासप्रसज्यप्रतिषेधयोः [illegible] आह– [illegible]

प्राधान्यं विधेर्यत्र प्रतिषेधेऽप्रधानता।
पर्युदासः स विज्ञेयो यत्रोत्तरपदेन नञ्॥ इति

यथा –

[illegible]।
[illegible]॥

[illegible] न तु [illegible]

अप्राधान्यं विधेर्यत्र प्रतिषेधे प्रधानता।
प्रसज्यप्रतिषेधोऽसौ क्रियया सह यत्र नञ्॥ इति।

यथा– [illegible] न तु [illegible]

कार्यार्थेनत्वावगमो न तृप्त्यादेश्च विना।।
अविद्वान् गजतुरगौ कः कथं पुरुषपशुः।। इति।
क्रियाकर्त्रोरभावार्थो वाक्येऽपोढो न वा यदि।
क्रियांश एवापोढः स्यात्तत्र [illegible] तदा।।
अनुपसर्गः इतिवत् वृत्तौ तु स्याद्विपर्ययः।
इत्येष नियमोऽस्य शब्दशक्तिस्वभावतः।।

अनेन प्रसङ्गेन [illegible] कथयति यद् यथा [illegible] 'अनेकमन्' इत्यादि [illegible]

नञर्थस्य विधेयत्वे निषेधस्य विपर्यये।
समासो नेष्यतेऽर्थस्य विपर्यासप्रसङ्गतः। इति।

[illegible]

[illegible]

'[illegible]

[illegible]

पादटिप्पण्यः

[illegible]

[illegible]

[illegible]

4\. [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] पृ. 178

[illegible]

[illegible]

[illegible]

15\. [illegible] पृ. 192

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

20\. [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

संस्कृतवाङ्मये महिलाविकासपरियोजनाः

डा. के. [illegible]लक्ष्मी

कूटपदानि – [illegible], IWLRA, Micro Finance Programme, [illegible]

शोधपत्रसारांशः– [illegible]

परिचयः [illegible] संस्कृतवाङ्मयं चतुर्दशधा विभक्तमस्ति।

षडङ्गमिश्रिता वेदा धर्मशास्त्रं पुराणकम्।

मीमांसातर्कमपि च एता विद्याश्चतुर्दश॥[1]

[illegible] आह

'धर्मार्थाङ्गविद्याकालाननुपरोधयन् कामसूत्रं तदङ्गविद्याश्च पुरुषोऽधीयीत।'[2]

[illegible]

'गीतं, वाद्यं, नृत्यं, आलेख्यं, विशेषकच्छेद्यं, तण्डुलकुसुमबलिविकाराः, पुष्पास्तरणं, दशनवसनाङ्गरागः, मणिभूमिकाकर्म, शयनरचनं, उदकवाद्यम्, उदकाघातः, चित्राश्च योगाः, माल्यग्रथनविकल्पाः, शेखरकापीडयोजनं, नेपथ्यप्रयोगाः, कर्णपत्रभङ्गाः, गन्धयुक्तिः, भूषणयोजनम्, ऐन्द्रजालाः, कौचुमाराश्च योगाः, हस्तलाघवं, विचित्रशाकयूषभक्ष्यविकारक्रिया, पानकरसरागासवयोजनं, सूचीवानकर्माणि, सूत्रक्रीडा, वीणाडमरुकवाद्यानि, प्रहेलिका, प्रतिमाला, दुर्वाचकयोगाः, पुस्तकवाचनं, नाटकाख्यायिकादर्शनं, काव्यसमस्यापूरणं, पट्टिकावेत्रवानविकल्पाः, तक्षकर्माणि, तक्षणं, वास्तुविद्या, रूप्यरत्नपरीक्षा, धातुवादः, मणिरागाकरज्ञानं, वृक्षायुर्वेदयोगाः, मेषकुक्कुटलावकयुद्धविधिः, शुकसारिकाप्रलापनम्, उत्सादने संवाहने केशमर्दने च कौशलम्, अक्षरमुष्टिकाकथनम्, म्लेच्छितविकल्पाः, देशभाषाविज्ञानं, पुष्पशकटिका, निमित्तज्ञानं, यन्त्रमातृका, धारणमातृका, सम्पाठ्यं, मानसी काव्यक्रिया, अभिधानकोशः, छन्दोज्ञानं, क्रियाकल्पः, छलितकयोगाः, वस्त्रगोपनानि, द्यूतविशेषः, आकर्षक्रीडा, बालक्रीडनकानि, वैनयिकीनां वैजयिकीनां व्यायामिकीनां च विद्यानां ज्ञानम्, इति चतुःषष्टिरङ्गविद्या। कामसूत्रस्य अवयविन्यः।[3] [illegible]

1. [illegible] – 1982-83 Development of Women and Children in Rural Areas (DWCRA) इति [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] महिलानां [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] महिलाः [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] कलाभिः [illegible] [illegible]।

[illegible] कलानां [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

> कन्यानां प्रदानात् सौभाग्यम् उपजायते।[illegible]
>
> तथा पतिवियोगे च व्यसनं दारुणं गता।
>
> देशान्तरेऽपि विद्याभिः सा सुखेनैव जीवति।[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]।

यथा Development of Women and Children in Rural Areas (DWCRA) इति [illegible]।

[illegible] [illegible] मर्यादायां स्थापयन्ति।

'[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]।'

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पर्याप्तानं [illegible] [illegible] [illegible] कौटिल्य [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आचार्यः।

[illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] कृत्वा [illegible] [illegible] [illegible] कृत्य [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

2. [illegible] कार्यनिर्वहणाय धनसाहाय्यम् – 'Micro Finance Programme' [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

3. महिलाप्रोत्साहकानि [illegible] महिलाभ्यः [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

'[illegible] च [illegible] निष्क्रिया [illegible] [illegible], [illegible] च।'

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

'[illegible] प्रयुक्तानां गन्धमाल्यदानैः औपग्राहिकैः आगमयेत्।'[illegible]

'[illegible] प्रतिमानदानैश्च [illegible] कारयितव्याः।'

[illegible] [illegible] महिलाभ्यः [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

'[illegible] [illegible] [illegible]।'[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

'[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]'

4. महिलानां सुरक्षाव्यवस्था – [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] न

[illegible] कौटिल्यः। [illegible] कौटिल्यः।

[illegible] प्रवेशपातः [illegible]।[illegible]

[illegible] अन्यकार्य[illegible] [illegible]। [illegible]

[illegible] आकृतग्य [illegible] आदिष्टो [illegible]।

[illegible]

[illegible] अनिष्कासिन्य: [illegible] [illegible]।[illegible]

[illegible] कौटिल्यः।

[illegible] कालमिश्रं कर्म कालेन [illegible] च गच्छेत्।[illegible]

[illegible]

[illegible]।[illegible]

[illegible] च।[illegible]

[illegible]।[illegible]

[illegible]

[illegible]।[illegible]

[illegible]।[illegible]

[illegible]।

[illegible]।[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] उपसंहारः – [illegible]

[illegible]

सन्दर्भाः

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. www.agriinfo.in
5. [illegible]
6. [illegible]
7. [illegible]
8. [illegible]
9. www.agriinfo.in
10. अ.शा. 2.24.1
11. अ.शा. 2.24.[illegible]
12. अ.शा. 2.24.7
13. अ.शा. 2.24.[illegible]
14. अ.शा. 2.24.[illegible]
15. अ.शा. 2.24.[illegible]
16. अ.शा. 2.24.[illegible]
17. अ.शा. 2.24.[illegible]
18. अ.शा. 2.24.[illegible]
19. अ.शा. 2.24.[illegible]
20. अ.शा. 2.24.[illegible]
21. अ.शा. 2.24.15
22. अ.शा. 2.24.16
23. अ.शा. 2.24.17
24. अ.शा. 2.24.18
25. अ.शा. 2.[illegible].19

संदर्भग्रंथ

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. www.agriinfo.in
6. http://planningcommission.gov.in/reports/sereport/ser/maker
7. http://www.apmcfc.org/about.html
8. https://en.wikipedia.org/wiki/Self-help_group_(finance)

[illegible]

असिद्धं बहिरङ्गमन्तरङ्गे

डॉ. पशुपतिनाथमिश्रः

अवतरणिका—

[illegible]

[illegible]

परिभाषाघटकपदानामर्थविचारः

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

परिभाषार्थः—

[illegible]

[illegible]

[illegible]

परिभाषायाः लिङ्गम्

[illegible]

[illegible]

परिभाषायाः शास्त्रकार्यम्—

[illegible]

[illegible]

परिभाषाया: लोकन्यायसिद्धत्वम्

[illegible]

[illegible]

परिभाषाया: अनित्यत्वम्–

[illegible]

[illegible]

उपसंहार:–

[illegible]

[illegible]

1 [illegible] 180

2 [illegible] 180

3 [illegible] 190 [illegible]

अ. [illegible]

ब. [illegible]

सन्दर्भग्रन्थसूची–

1. [illegible]

2. [illegible] 2002

3. [illegible] 2005

4. [illegible] 2009

5. [illegible] 2013

6. [illegible] 2008 [illegible]

7. [illegible] वाराणसी: चौखम्बा [illegible] 2006।

8. [illegible] वाराणसी: [illegible] प्रकाशन, 2014 [illegible]

9. [illegible] वाक्यपदीयम् [illegible] वाराणसी: [illegible] 2008।

10. [illegible] दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास, 19[illegible]

11. [illegible] 2003।

[illegible]
[illegible]
[illegible]

स्मृतिषु वर्णितदण्डविधानस्य विवेचनम्

डॉ.कृष्णा शर्मा

शोधसारांशः – [illegible]

विषयप्रस्तावना –

[illegible]

अराजके हि लोकेऽस्मिन् सर्वतो विद्रुते भयात्।
रक्षार्थमस्य सर्वस्य राजानमसृजत्प्रभुः॥

[illegible]

[illegible] अपराधानां [illegible] —

आशालपन्नकाशंसः स्त्रीविधो वर्णसंकरः।
परस्त्रीगमनचारो गर्भगृहे पति त्रिया॥
वाक्पारुष्यमवाच्यं यान्यप्युपारुष्यमेव च।
गर्भस्य पातनं चौर्यं त्यपराधा दशैव तु॥

[illegible] अपराधानां [illegible] पुञ्जीकृतानि [illegible]

तेषामाद्यमृणादानं निक्षेपोऽस्वामिविक्रयः।
संभूय च समुत्थानं दत्तस्यानपकर्म च॥
वेतनस्यैव चादानं संविदश्च व्यतिक्रमः।
क्रयविक्रयानुशयो विवादः स्वामिपालयोः॥
सीमाविवादधर्मश्च पारुष्ये दण्डवाचिके।
स्तेयं च साहसं चैव स्त्रीसंग्रहणमेव च॥
स्त्रीपुंधर्मो विभागश्च द्यूतमाह्वय एव च।
पदान्यष्टादशैतानि व्यवहारस्थिताविह॥

[illegible]

[illegible] ऋणादानम्, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], प्रकीर्णकः इत्यादयः।

याज्ञवल्क्यानुसारम् – [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], प्रकीर्णकः इत्यादयः।

नारदानुसारम्– [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], प्रकीर्णकः इत्यादयः।

बृहस्पत्यनुसारम्– [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible],

[illegible]

याज्ञवल्क्यानुसारम् [illegible] गतो [illegible]

[illegible] भवति। [illegible]

> स्मृत्याचारव्यपेतेन मार्गेणाऽऽधर्षितः परैः।
> आवेदयति चेद्राज्ञे व्यवहारपदं हि तत्॥[1]

[illegible] व्यवहाराश्च [illegible]

[illegible]

यथा –

> तस्य सर्वाणि भूतानि स्थावराणि चराणि च।
> भयाद्भोगाय कल्पन्ते स्वधर्मान्न चलन्ति च॥[2]

[illegible] न दण्डः [illegible]

[illegible] भवति। [illegible]

[illegible]

[illegible]

उक्तं च याज्ञवल्क्येन

> तल्लाभ्य नृपो दण्डं दुष्टेषु निपातयेत्।
> धर्मो हि दण्डरूपेण ब्रह्मणा निर्मितः पुरा॥[3]

[illegible] –

> तस्यार्थे सर्वभूतानां गोप्तारं धर्ममात्मजम्।
> ब्रह्मतेजोमयं दण्डमसृजत्पूर्वमीश्वरः॥[4]

[illegible] धर्मपालनाय [illegible]

[illegible]

> स राजा पुरुषो दण्डः स नेता शासिता च सः।
> चतुर्णामाश्रमाणां च धर्मस्य प्रतिभूः स्मृतः॥
> दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति।
> दण्डः सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्मं विदुर्बुधाः॥[5]

[illegible]

[illegible]

[illegible] निर्धारितम्।

[illegible]

टिप्पणी –

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]
7. [illegible]
8. [illegible]

[illegible]
[illegible]
केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः
[illegible]

व्यक्तिविवेके वचनप्रक्रमभेदः

डॉ. किशोरकुमारदलाई

अलंकार[illegible] [illegible] महिमभट्टः [illegible] [illegible]

(१) अनौचित्यम्।

(२) औचित्यस्य भेदाः।

(३) प्रक्रमभङ्गस्य वचनप्रक्रमादिः [illegible]

[illegible]

(१) [illegible] [illegible]

अनौचित्यादृते नान्यद् रसभङ्गस्य कारणम्।

प्रसिद्धौचित्यबन्धस्तु रसस्योपनिषत् परा॥

[illegible]

(२) [illegible] [illegible]

(३) [illegible]

प्रक्रमभेदोऽयम् [illegible] व्यक्तिविवेके [illegible]। [illegible] भवति [illegible]।
[illegible]

प्रकृति–प्रत्यय–सर्वनाम–पर्याय–विभक्ति–उपसर्ग–वचन–लिङ्ग–काल–कारकशक्ति–[illegible]–भेद–नामधेयो भवति। [illegible] वचनप्रक्रमभेदः अत्र विचार्यते–

वचनप्रक्रमभेदः– '[illegible] येन वचनेन प्रक्रमः [illegible]' इति [illegible] वचनप्रक्रमभेदः भवति [illegible] व्यक्तिविवेके [illegible] उदाहरणं यथा–

> काचित् कीर्णा रजोभिर्दिवमनुविदधौ मन्दवक्त्रेन्दुलक्ष्मी–
> अश्रीकाः काश्चिदन्तर्दिश इव दधिरे दाहमुद्भ्रान्तसत्त्वाः।
> भ्रेमुर्वात्या इवान्याः प्रतिपदमपरा भूमिवत् कम्पमानाः
> प्रस्थाने पार्थिवानामशिवमिति पुरो भावि नार्यः शशंसुः॥'

अत्र "काचित्" इति एकवचनेन प्रक्रमः कृतः किन्तु "काश्चित् नार्यः" इत्यत्र बहुवचनेनोपसंहारः कृतः। अतो वचनप्रक्रमभङ्गः [illegible]। अत्र यदि "काचित्" इत्यस्य स्थाने "काश्चित्" इति पदं बहुवचनं क्रियते तदा बहुवचनेन प्रक्रमो उपसंहारश्च भवति तथा च वचनप्रक्रमभेदो निवार्यते।
[illegible]

'[illegible] पुष्पाञ्जलिनार्चनं [illegible]।''

अत्र [illegible] इति [illegible] किन्तु '[illegible]' इत्यत्र [illegible] बहुवचनं [illegible] वचनप्रक्रमभेदः। [illegible] वचनप्रक्रमभेदं [illegible]।

एवं तत्र व्यक्तिविवेके [illegible] वचनप्रक्रमभेदः [illegible] [illegible] भवति।

सन्दर्भाः–

1. व्यक्तिविवेकः, प्रथमविमर्श पृ. [illegible]
2. [illegible] पृ. [illegible]
3. [illegible], 2 [illegible]
4. [illegible], [illegible]
5. व्यक्तिविवेके, 2 विमर्श, पृ. [illegible]
6. व्यक्तिविवेके, पृ. [illegible]

[illegible], [illegible]
[illegible]संस्कृतविश्वविद्यालय, [illegible], जयपुर

वेदार्थ में स्वर की उपयोगिता

डॉ. सुधीर कुमार शर्मा

वेदाध्ययन के सम्बन्ध में मनुस्मृतिकार कहते हैं कि जो द्विज वेद को न पढ़कर अन्यत्र श्रम करता है वह अपने जीते जी ही वंश सहित शीघ्र ही शूद्रत्व को प्राप्त होता है। अतः प्रत्येक द्विज का कर्तव्य है कि वह वेदाध्ययन करे और तथा उसे पूर्ण रूप से आत्मसात करे।

> योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
> स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः॥[1]

किन्तु वेदार्थ को जाने बिना केवल पढ़ना श्रेयस्कर नहीं है। इस सम्बन्ध में महर्षि यास्क का कथन द्रष्टव्य है—

> स्थाणुरयं भारहारः किलाभूदधीत्य वेदं न विजानाति योऽर्थम्।
> योऽर्थज्ञ इत्सकलं भद्रमश्नुते नाकमेति ज्ञानविधूतपाप्मा॥[2]

अर्थात् जो मनुष्य वेद पढ़कर उसके अर्थों को नहीं जानता वह भारवाही पशु अथवा ठूंठ वृक्ष के समान है, परन्तु जो अर्थ का ज्ञाता है वह यहाँ सम्पूर्ण सुखों को प्राप्त करता है तथा कल्याण का भागी बनता हुआ ज्ञान से कलुषहीन होकर नाक को प्राप्त करता है। इसी प्रकार से महर्षि वेदव्यास भी महाभारत में अर्थरहित वेदाध्ययन के विषय पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं—

> यो हि वेदं च शास्त्रं च ग्रन्थधारणतत्परः।
> न च ग्रन्थार्थतत्त्वज्ञस्तस्य तद्धारणं वृथा॥
> भारं स वहते तस्य ग्रन्थस्यार्थं न वेत्ति यः।
> यस्तु ग्रन्थार्थतत्त्वज्ञो नास्य ग्रन्थागमो वृथा॥[3]

अर्थात् जो वेदादि शास्त्रों को कण्ठस्थ करके रखता है परन्तु उनके अर्थों से अपरिचित है, उसका कण्ठस्थीकरण व्यर्थ है क्योंकि जो ग्रन्थ के तात्पर्य को नहीं समझता, वह ग्रन्थ को ढोने वाले के समान भार ही ढोता है। परन्तु जो ग्रन्थ के अर्थ तत्त्व को जानने वाला है उसके द्वारा ग्रन्थ का पढ़ना कदापि व्यर्थ नहीं होता अपितु सार्थक कहलाता है। अतः वेदाध्ययन के लिये वेद के अध्ययन के साथ-साथ वेदों के अर्थ को हृदयंगम करने के लिए वेदांग ज्ञान अपेक्षित है। अतः एव षड् वेदांगों में वेदों की रक्षा का कर्तव्य बताया है। इस सम्बन्ध में महाभाष्यकार महर्षि पतंजलि कहते हैं— 'रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरणम्।'[4] अर्थात् वेदों की रक्षा के लिये व्याकरण अवश्य पढ़ना चाहिए। व्याकरण शास्त्र को वेद का मुख भी कहा गया है— 'मुखं व्याकरणं स्मृतम्।'[5] वेद का ज्ञान के लिए व्याकरण उसी प्रकार उपयोगी है जैसे शरीर में मुख उपयोगी होता है।

वेदों के वास्तविक अभिप्राय को समझने के लिए जितने साधन प्राप्त होते हैं उनमें स्वर-…

[illegible] है। [illegible] का [illegible] करते हुए [illegible] अपना वैदिक [illegible] पुस्तक में लिखते हैं कि [illegible] वेद के [illegible] अभिप्राय [illegible] के लिए [illegible] है, उनमें [illegible] है। व्याकरण और निरुक्त [illegible] शास्त्र [illegible] शास्त्र के [illegible] ही वेदार्थ ज्ञान में सहायक होते हैं। [illegible] शास्त्र [illegible] ये दोनों शास्त्र [illegible] हैं। स्वर ज्ञान के बिना न केवल मन्त्र का वास्तविक अभिप्राय ही अज्ञात रहता है अपितु [illegible] की अपेक्षा न [illegible] में अर्थ का अनर्थ भी हो जाता है। इसलिये वेद के [illegible] के लिए [illegible] आदि स्वरों का ज्ञान नितान्त आवश्यक है। उपर्युक्त [illegible] वचन से यह [illegible] हो जाता है कि स्वरों का ज्ञान कितना आवश्यक है। [illegible] उपर्युक्त प्रकरण में व्याकरण से तात्पर्य केवल शब्द-व्युत्पत्ति अर्थात् प्रकृति-प्रत्यय-विभाग से है क्योंकि [illegible] भी [illegible] है किन्तु अर्थ-निर्वचन [illegible] है, शब्द व्युत्पत्ति [illegible] नहीं है। इसी कारण [illegible] और निरुक्त [illegible] के पूरक होते हुए भी भिन्न-भिन्न [illegible] हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने [illegible] में स्वरों की महत्ता को [illegible] हुए [illegible] स्वर-विषय [illegible] की [illegible] में लिखते हैं

वेदार्थोपयोगितया संक्षेपतः स्वराणां व्यवस्था लिख्यते

अर्थात् वेद के अर्थ में उपयोगी होने से स्वरों की व्यवस्था संक्षेप से लिखते हैं। [illegible] प्रकरण में स्वरों के [illegible] महत्त्व को [illegible] करते हैं

अन्धकारे दीपिकाभिर्गच्छन्न स्खलति क्वचित्।

एवं स्वरैः प्रणीतानां भवन्त्यर्था स्फुटा इति॥

अर्थात् यथा अन्धकार में [illegible] की सहायता से [illegible] हुआ कहीं [illegible] नहीं [illegible] उसी प्रकार स्वरों की सहायता से [illegible] अर्थ स्फुट (सन्देह-रहित) होते हैं, इसलिये [illegible] में स्वरों की उपयोगिता [illegible] ही है। [illegible] स्वामी दयानन्द सरस्वती ने [illegible] [illegible] [illegible] है कि [illegible] मुख्य प्रयोजन [illegible] है कि [illegible] स्वरों की [illegible] यथार्थ [illegible] [illegible] उदात्तादि स्वरों की [illegible] [illegible] वैदिक [illegible] [illegible] [illegible] अर्थ [illegible] नहीं [illegible] हैं। [illegible] के यथार्थ [illegible] भी [illegible] [illegible] हैं। [illegible] महर्षि [illegible] के [illegible] प्रसिद्ध [illegible] को [illegible] हैं [illegible] में [illegible]

दुष्टः शब्दः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह।

स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्॥

[illegible] शब्द [illegible] स्वरों के [illegible] उच्चारण [illegible] और उदात्तादि [illegible] के [illegible] से [illegible] जाता है उस को [illegible] कहते हैं, क्योंकि [illegible] अर्थ का [illegible] के लिये [illegible]

प्रयोग किया जाता है जब [illegible] शब्द [illegible] किन्तु [illegible] विरुद्ध [illegible] की कल्पना से इसलिए व्याकरण [illegible] हुआ यह शब्द [illegible] के अभिप्राय को [illegible] में [illegible] तुरन्त [illegible] बतलाता अर्थात् [illegible] की [illegible] करने वाले [illegible] भी को [illegible] देता है। जैसे 'इन्द्रशत्रुः' शब्द [illegible] है जो [illegible] हो जाता है। तत्पुरुष समास में [illegible] अन्तोदात्त [illegible] अर्थात् [illegible] था। 'इन्द्रशत्रुः' यहाँ बहुव्रीहि समास [illegible] प्रकृति [illegible] से आद्युदात्त [illegible] होता है और शत्रु शब्द का अर्थ यहाँ है कि [illegible] करने वाला [illegible] शमयिता वा शातयिता वा [illegible] अतः तत्पुरुष समास में तो इन्द्र का [illegible] करने या काटने वाला [illegible] आता [illegible] प्रकृत स्थान पर [illegible] वृत्र को शातन करने वाला [illegible] है. इस आशय में इन्द्रशत्रुः शब्द का व्याकरण [illegible] है, किन्तु यदि इस 'इन्द्रशत्रुः' पद में आद्युदात्त उच्चारण कर दिया जाये तो [illegible] अभिप्रेत [illegible] नहीं हो [illegible] भाव बदल जायेगा क्योंकि आद्युदात्त उच्चारण में बहुव्रीहि [illegible] होगा।

अतः [illegible] अर्थ [illegible] वेदार्थ [illegible] विज्ञानुसार व्याकरण [illegible] को [illegible] शब्दों का [illegible] हो जाता है तब [illegible] वैदिक शब्दों के [illegible] अर्थों [illegible] ले [illegible] लेता है। [illegible] किसी एक शब्द को [illegible] जो [illegible] कि [illegible] अर्थ में [illegible] किन्तु [illegible] हुए हैं, [illegible] नहीं अर्थ [illegible] उससे विपरीत अर्थ नहीं होगा, [illegible] केवल [illegible] का [illegible] जाता है। [illegible] यहाँ [illegible] 'इन्द्रशत्रुः' [illegible] की [illegible] में एक और उदाहरण [illegible] में [illegible] के [illegible] अर्थ होता है [illegible] गुण [illegible] है। अतः अर्थ [illegible] है। [illegible] अर्थ होगा [illegible] क्योंकि [illegible] के पदों का [illegible] के [illegible] ने [illegible] है अन्यथा [illegible] के अर्थ [illegible] बहुव्रीहि [illegible] है जैसे 'महात्मा' [illegible] को [illegible] हो [illegible] है [illegible] सूक्ष्मतम [illegible] को जानने [illegible] स्वरों का ज्ञान [illegible] आवश्यक [illegible] है। [illegible] आवश्यक है।

वर्तमान में [illegible] वैदिक [illegible] हैं [illegible] शब्दों के [illegible] अर्थात् [illegible] एक [illegible] हो [illegible] होता है। [illegible] वैदिक [illegible] में [illegible] हैं

1 [illegible] शब्द [illegible] में [illegible] पदों [illegible] का [illegible] है। [illegible] के [illegible] तथा [illegible] में [illegible] की [illegible] शब्द [illegible] में [illegible]

3 [illegible] (शाकल्य पाठ) में [illegible] (ऋग्वेद, [illegible]) की [illegible] में [illegible] को [illegible] [illegible] का चिह्न है [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] वैदिक संहिताओं में उच्चारण के लिए प्रयुक्त होते हैं, यथा

अग्निमीळे [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] के अनुसार [illegible] में [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] संख्याओं तथा उनके [illegible] [illegible] [illegible] आहुति [illegible] जाता है यथा [illegible] [illegible] [illegible]।

वैदिक [illegible] में [illegible] की इन [illegible] के [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] जाता है [illegible] जानने वालों की [illegible] [illegible] होगी। [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के विविध [illegible] का ज्ञान [illegible] आवश्यक है।

[illegible] [illegible] [illegible] हैं [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] के अर्थ [illegible] होते हैं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] में प्रयुक्त होते हैं यथा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के 'अग्नि [illegible]' [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 'स्वरों से युक्त [illegible] [illegible]' करते हैं। निघण्टु में भी [illegible] [illegible] [illegible] में पढ़ा है। संहिता, [illegible] ब्राह्मण, शिक्षा ग्रन्थ, [illegible] [illegible], [illegible], [illegible] और [illegible] [illegible] में [illegible] शब्द [illegible] अकारादि वर्णों के लिए प्रयुक्त होता है [illegible] [illegible] [illegible] की [illegible] के बिना [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] होता है। यथा '[illegible]।' '[illegible] [illegible] औकारान्ताश्चतुर्दश।' [illegible] [illegible] [illegible] चतुर्दशाद्यौ [illegible]' इत्यादि। पाणिनीय वैयाकरण इन [illegible] वर्णों को [illegible] [illegible] हैं और फिर इनका 'अच्' प्रत्याहार से [illegible] करते हैं।

[illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] में षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद [illegible] [illegible] [illegible] के लिए [illegible] [illegible] का प्रयोग होता है यथा —

षड्जश्च ऋषभश्चैव गान्धारो मध्यमस्तथा।
पञ्चमो धैवत निषादः सप्तमः स्वराः॥

'स्वराः षड्जर्षभगान्धारमध्यमपंचमधैवतनिषादाः' [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] किया है। [illegible] [illegible] षड्जादि [illegible] [illegible] [illegible] में क्रुष्ट, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] हैं।

[illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] होने वाले [illegible] के लिए [illegible] स्वर शब्द प्रयोग में आता है [illegible] [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] इत्यादि के लिए भी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] शास्त्रों में [illegible] होता है।

[illegible] में [illegible] [illegible] का निर्देश किया गया है

'सप्त स्वरा भवन्ति—उदात्तः, उदात्ततरः, अनुदात्तः, अनुदात्ततरः, स्वरितः, स्वरिते य उदात्तः सोऽन्येन विशिष्टः, एकश्रुतिः सप्तमः।'

महाभाष्यानुसार उदात्त, उदात्ततर, अनुदात्त, अनुदात्ततर, स्वरित, स्वरित के आरम्भ में स्थित उदात्त [illegible] तथा एकश्रुति ये सात स्वर माने गये हैं। नारदीय शिक्षा में भी सामगानोपयोगी सात स्वरों का उल्लेख मिलता है– षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद। क्रुष्ट, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मन्द्र और अतिस्वार्य कहा गया है। महर्षि पतञ्जलि 'स्वर' शब्द का व्याख्यान करते हुए लिखते हैं– 'स्वयं राजन्ते इति स्वराः, अन्वग्भवति व्यंजनम्॥'[5] स्वर उसको कहते हैं जो बिना किसी की सहायता से उच्चरित और स्वयं प्रकाशमान हों अर्थात् स्वतन्त्र हों लेकिन [illegible] आचार्यों के सूत्रों तथा महाभाष्य के व्याख्याताओं ने उदात्त, अनुदात्त, स्वरित, स्वरित के भेद, एकश्रुति, [illegible] स्वरित [illegible] [illegible] अनुदात्त [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] विधान [illegible] स्वरों के नियमों का सुस्पष्ट वर्णन किया है। इन स्वर नियमों का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] नियमों के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हैं। [illegible] में [illegible] शब्दों के [illegible] के लिए [illegible] के हेतुओं का वर्णन करते हैं जिनमें स्वर भी हैं–

> सामर्थ्यमौचिती देशः कालो व्यक्तिः स्वरादयः।
> शब्दार्थस्यानवच्छेदे विशेषस्मृतिहेतवः॥[6]

वैयाकरण जैसे विद्वान् श्री भर्तृहरि ने शब्दार्थ के प्रसंग में पदार्थज्ञान के हेतुओं में स्वर का निर्देश करते हुए लिखा है– 'नानार्थस्यानेकार्थस्य [illegible]' अर्थात् नाना और अनेकार्थ का [illegible] स्वर से ही जाना जाता है। इसी प्रकार [illegible] स्वर-ज्ञान का प्रयोजन दर्शाते हुए लिखते हैं–

> 'हस्तप्रकारेणैव यही स्वरतोऽर्थस्य निर्णयः।
> प्रदर्शयति मन्त्रेषु भाषा या निपुणैरपि॥'[7]

अर्थात् [illegible] [illegible] मन्त्रों में स्वर से अर्थ का निर्णय होता है। अतः बुद्धिमान मनुष्यों को प्रयत्न करना चाहिए।

संस्कृत वाङ्मय में ऐसे शब्द उपलब्ध हैं जो [illegible] अर्थ के वाचक हैं। [illegible] शब्द [illegible] हैं [illegible] वैदिक मन्त्रों का [illegible] [illegible] के [illegible] को [illegible] [illegible] शब्द का [illegible] [illegible] प्रयोग करना चाहिए इसके लिए [illegible] [illegible] [illegible] हैं [illegible] स्वर ज्ञान भी अति [illegible] है। [illegible] अभाव में [illegible] [illegible] के [illegible] हो जाता है। अतः वेद के [illegible], [illegible] शाब्दिक [illegible] के [illegible] के लिए स्वर [illegible] भी [illegible] है। वेदाङ्ग में स्वर की [illegible] को [illegible] वाले व्यक्तियों के लिए शिक्षाशास्त्र का स्थान [illegible] है।

आत्मानात्मविवेचनेऽस्मिन् प्रकृति [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible] गुहे गुहे॥[18]

सन्दर्भाः

1. [illegible] 1.164
2. निरुक्त 1. 8
3. न्यायभाष्य [illegible]
4. महाभाष्य, पस्पशाह्निक
5. तत्त्वार्थाधिगम [illegible]
6. वैदिक-पद-मानक, [illegible] [illegible]
7. [illegible] 1.3
8. भूमिका, [illegible]
9. [illegible] 2.1
10. [illegible]
11. [illegible]
12. [illegible]
13. [illegible] 1.
14. [illegible] 1.
15. [illegible] 2.1.1
16. [illegible]
17. [illegible] [illegible] पाठ 1. [illegible]
18. [illegible] 1. [illegible]
19. [illegible] 1.1
20. [illegible] 5.72.7
21. [illegible] 3.8
22. [illegible] 1. 8
23. [illegible]
24. [illegible]
25. [illegible] 2.1
26. [illegible] 3.1
27. तत्त्वार्थ [illegible] 10.44 [illegible]
28. [illegible] 1.2.19
29. वैदिक [illegible] 3.1.4
30. [illegible] 1.2.21
31. [illegible]
32. [illegible]
33. [illegible]

डॉ. [illegible]
संस्कृत विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

लोक कल्याणकारी राज्य और कौटिल्य

डॉ. सीमा अग्रवाल

सारांश– प्रस्तुत पत्र लोककल्याणकारी राज्य की अवधारणा को स्पष्ट करता है। पत्र में वर्तमान की स्थिति से असहमति देनेवाले तत्त्वों से लोककल्याणकारी राज्य में कौटिल्य की भाव को स्पष्ट करते हुए, राज्य के लोककल्याणकारी कार्यों पर प्रकाश डाला गया है। प्रस्तुत पत्र प्राचीन भारतीय चिन्तन के तहत लोककल्याणकारी राज्य की प्राचीन अवधारणा के स्वरूप का विश्लेषण करता है। पत्र में विशेष रूप से कौटिल्य के चिन्तन में राज्य के कार्यक्षेत्र की व्याख्या की गई है। कौटिल्य ने अपने प्रसिद्ध अर्थशास्त्र में राज्य के विभिन्न विभागों एवं लोककल्याणकारी कार्यों पर चर्चा की है जो उसे प्राचीन लोककल्याणकारी राज्य की अवधारणा के निकट ले जाता है। प्रस्तुत पत्र में यहाँ विश्लेषण करने का प्रयास है कि प्राचीन भारतीय चिन्तन में सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक राजनीति की दृष्टि से समृद्ध था एवं समकालीन धारणाओं के साथ प्रासंगिक बना है।

Key Words:

लौकिक – इस लोक का

पारलौकिक – आध्यात्मिक या इस लोक के बाद

दुर्भिक्ष – अकाल

[illegible] – [illegible]

राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा अधिक पुरानी नहीं है। व्यक्तिवादी राज्य व नकारात्मक या आत्मसंयमवादी राज्य और नकारात्मक से सकारात्मक व कल्याणकारी राज्य में परिवर्तन काफी लंबा और जटिलताओं के बाद संभव हो पाया। इसके लिए यथार्थवाद एवं राजनीतिक सिद्धान्त ने लम्बी यात्रा की है।

औद्योगिक क्रांति, पुनर्जागरण, धर्मसुधार इत्यादि के फलस्वरूप व्यक्तिवाद अस्तित्व में आया। जब व्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए राज्य की नकारात्मक भूमिका पर जोर दिया। व्यक्तिवाद ने राजतंत्र के पतन के बाद राजनीति का नया मंत्र अर्थव्यवस्था के अनुरूप गढ़ने के लिए अहस्तक्षेप की नीति का समर्थन किया। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध तक प्रायः पूरे यूरोप, अमेरिका में इसी नीति का समर्थन होता रहा कि राज्य को कम से कम कार्य करने चाहिये या राज्य को कुछ बुनियादी कार्यों जैसे सुरक्षा, व्यवस्था एवं न्याय तक सीमित रहना चाहिये। इस प्रकार राज्य पुलिस राज्य था जिसकी [illegible] की भूमिका में था।

असीमित स्वतंत्रता, नागरिक, उद्योग धंधों एवं व्यापार के प्रसार एवं [illegible] विकास के

राज्य में निरन्तर, अराजकता एवं अशान्ति की स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं हुआ बल्कि राज्य [illegible] एवं यूनानियों की थी [illegible] के कारण अराजकता [illegible] की [illegible] तथा एक व्यक्ति की आर्थिक [illegible] सुरों के [illegible] का [illegible] पूरक [illegible] के [illegible] परिणाम सामने आ गये। [illegible] इस शोषण के कारण [illegible] साम्राज्यवाद एवं [illegible] की कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ा। सम्पूर्ण [illegible] आन्दोलनों एवं [illegible] क्रान्तियों की बाढ़ आ गयी। इसलिए [illegible] को राज्य का नागरिकों के कल्याण विशेषतः निर्धन एवं निर्बल व्यक्ति के कल्याण का माध्यम बना दिया। लोककल्याणकारी [illegible] के अन्तर्गत यह माना जाने लगा कि राज्य का सर्वांगीण [illegible] का [illegible] कर [illegible] भूमिका निभानी चाहिए यही लोककल्याणकारी राज्य की [illegible] के रूप में सामने आया।

[illegible] से [illegible] के सिद्धान्त [illegible] हुए [illegible] के [illegible] व्यक्तियों के कल्याण के लिए बहुत [illegible] गये हैं। [illegible] राज्य न केवल सामाजिक [illegible] संस्थाओं का [illegible] करता है अपितु [illegible] व्यक्तियों और संस्थाओं की [illegible] गतिविधियों को [illegible] करता है। [illegible] को लोककल्याणकारी [illegible] शिक्षा, स्वास्थ्य, [illegible] [illegible] आर्थिक, [illegible] सुविधाओं के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] खेल के मैदान, [illegible] में [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] में [illegible] [illegible] करना [illegible] है।

इस तरह न [illegible] जाये तो लोककल्याणकारी राज्य की अवधारणा [illegible] [illegible] की [illegible] है लेकिन यदि लोककल्याणकारी राज्य के इन कार्यों के संदर्भ में प्राचीन भारतीय [illegible] कौटिल्य द्वारा प्रतिपादित राज्य के कार्यक्षेत्र की समीक्षा की जाये तो हम पाते हैं कि भारतीय राजनीतिक चिन्तन के इतिहास में कल्याणकारी राज्य की अवधारणा अत्यन्त प्राचीन है।

कौटिल्य का अर्थशास्त्र भारतीय चिन्तन की [illegible] [illegible] का [illegible] ग्रन्थ है। अर्थशास्त्र [illegible] की सैद्धान्तिक और व्यावहारिक, दोनों [illegible] से [illegible] से सम्बन्धित है [illegible] [illegible] की [illegible] करने के लिए कौटिल्य ने लोककल्याणकारी राज्य की धारणा प्रस्तुत की है जो [illegible] [illegible] राज्य की अवधारणा से [illegible] [illegible] रखती है।

[illegible] [illegible] के कार्यों को [illegible] [illegible] माना गया है तथा प्रजा की भौतिक सुख एवं [illegible] लौकिक एवं पारलौकिक कल्याण के लिए विभिन्न [illegible] को [illegible] करने के लिए [illegible] को [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] किया गया है।

कौटिल्य ने राज्य की सम्पूर्ण संस्थाओं को प्रजा के आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक कल्याण का साधन बना दिया है। कौटिल्य ने जहाँ एक ओर राज्य के अस्तित्व के सैद्धान्तिक पक्ष में यह स्पष्ट किया है कि राज्य जनता के लौकिक और पारलौकिक कल्याण के लिए ही [illegible] में है वहीं [illegible] जनता के कल्याण के लिए राज्य के कार्यों की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] राज्य

के लोककल्याणकारी स्वरूप को भली भाँति स्पष्ट किया है जो आज के लोककल्याणकारी राज्य के [illegible] [illegible] सिद्ध हो रहे हैं।

कौटिल्य ने सभी प्रकार के आंतरिक एवं बाह्य संकटों से प्रजा की रक्षा को राज्य का प्राथमिक कर्तव्य माना है। उनके अनुसार अराजकता एवं असुरक्षा जैसी मत्स्य न्याय की अवस्था से मुक्ति के लिए ही राज्य की उत्पत्ति हुई है।

कौटिल्य ने न केवल बाह्य आक्रमणों, अपराधों एवं प्राकृतिक आपदाओं से प्रजा के जीवन की रक्षा का राज्य का दायित्व माना है अपितु प्रजा की सम्पत्ति एवं व्यापार की रक्षा का भार भी राज्य को सौंपा है। कौटिल्य ने राज्य का धर्म की रक्षा के साथ ही स्त्री-पुरुष, पिता-पुत्र, पति-पत्नि, गुरु-शिष्य इत्यादि के सम्बन्धों को पवित्र बनाये रखना भी राज्य के दायित्व में शामिल है।

कौटिल्य ने आठ प्रकार की दैवीय विपत्तियों - अग्नि, बाढ़, महामारी, दुर्भिक्ष, चूहे, सर्प और भूत-प्रेत इत्यादि से प्रजा की रक्षा करने एवं सहायता के [illegible] उपाय करने का राज्य का दायित्व माना है।

सब [illegible] के [illegible] कार्यों के साथ ही कौटिल्य ने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कार्यों का दायित्व भी राजा का माना है। कौटिल्य राजा को [illegible] गुणों से [illegible] होने पर बल दिया गया है।

कौटिल्य ने वृद्धों, अनाथ स्त्रियों, असहाय बच्चों, रोगियों, पंगुओं इत्यादि को सहायता पहुंचाने का भार राज्य पर डालकर सामाजिक सुरक्षा की विस्तृत व्यवस्था की है।

राज्य के लोककल्याणकारी कार्यों की सूची में कौटिल्य ने जनसाधारण के लिए मनोरंजन की व्यवस्था, तमाशे, खेल कूद, सार्वजनिक स्थानों में भजन और मेलों की व्यवस्था के साथ-साथ जनता के नैतिक कल्याण के लिए मद्य-निषेध तथा अन्य अनैतिक कार्यों के नियंत्रण का भी प्रावधान किया है।

कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में राज्य के विभिन्न कार्यों के लिए अनेक विभागों के गठन का प्रावधान किया है जिससे कि जन सुविधा एवं जन कल्याण के कार्यों को नियमित रूप से [illegible] के साथ कर सके।

कौटिल्य ने जनता के स्वास्थ्य के लिए औषधालयों और चिकित्सालयों के निर्माण, मंदिरों [illegible] के निर्माण की व्यवस्था की है। व्यापार की वृद्धि के लिए विभिन्न मार्गों की सड़कों एवं संचार की व्यवस्था, धार्मिक एवं [illegible] कार्यों में सहयोग, [illegible] मंदिरों एवं [illegible] निर्माण की व्यवस्था, कृषि की रक्षा के लिए बाँध एवं नहरों का निर्माण, सिंचाई की व्यवस्था, [illegible] की व्यवस्था, कृषि उपयोगी भूमि के विस्तार, खनिज [illegible] इत्यादि की व्यवस्था करके कौटिल्य का लोक कल्याणकारी राज्य जनता के आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक कल्याण का साधन प्रतीत होता है।

इस लोक कल्याणकारी राज्य की तुलना वर्तमान वेलफेयर स्टेट से की जा [illegible] [illegible] [illegible] दिखाई देता है [illegible] यह संकेत देता है कि वेलफेयर स्टेट का [illegible] [illegible] में बहुत पहले ही प्रतिपादित हो चुका था।

[illegible] कौटिल्य के [illegible] में राज्य के [illegible] कल्याणकारी [illegible] का [illegible] [illegible] दिखाई देता है

अलब्धलाभाय, लब्धपरिरक्षणी, रक्षितविवर्धनी वृद्धस्य तीर्थेषु प्रतिपादिनी च॥

संदर्भ सूची –

1. डॉ.पी. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पृष्ठ संख्या [illegible]
2. डॉ.पी. [illegible] [illegible] [illegible] पृ. 418
3. [illegible]
4. [illegible] – [illegible]
5. [illegible] – [illegible] इंडियन पोलिटिकल थॉट एण्ड इन्स्टीट्यूशन्स, [illegible]
6. प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन – डॉ. [illegible] चतुर्वेदी, [illegible], [illegible]
7. [illegible]
8. [illegible]
9. चाणक्य प्रणीत सूत्र-1

[illegible] आचार्य
[illegible]
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
जयपुर परिसर, जयपुर

वर्तमान में चरित्रमाध्यम से शिक्षा प्रदान

डॉ. हरिओम शर्मा

प्राचीन शिक्षा व्यवस्था में गुरु-शिष्य की परम्परा, पूर्ण समर्पण, आत्म-अनुशासन [illegible] के प्रति सम्मान [illegible] व्यक्ति का [illegible] विकसित हो, साथ ही किसी भी [illegible] में वह अपने [illegible] असमर्थ न [illegible] गुरुकुलीय व्यवस्था [illegible] पूर्ण समर्पित रहता था [illegible] चारित्रिक [illegible] विकसित होता था [illegible] गुरु-शिष्य [illegible] का महत्त्वपूर्ण योगदान था [illegible] वैदिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य, इसके बाद बौद्ध शिक्षा व मुस्लिमकालीन शिक्षा में विभिन्न दृष्टिकोण देखने को मिलते हैं। आधुनिक शिक्षा में [illegible] भी [illegible] दिखाई देता है लेकिन किसी भी शिक्षा प्रणाली की सर्वोत्तम कसौटी यह है कि [illegible] व्यक्ति के भौतिक तथा आध्यात्मिक उत्थान के लिए उसकी शक्तियों का पूर्ण विकास करती है। [illegible] इस दृष्टिकोण से यह ऐतिहासिक तथ्य दिखाई देता है कि मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली व्यक्ति के नेतृत्व के गुणों का विकास करने में असमर्थ रही और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में आवश्यक व्यक्तियों की पूर्ति नहीं कर सकी।

यदि मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली में उच्च चरित्र का निर्माण करने की क्षमता होती, तो [illegible] भारत का राजनैतिक पतन [illegible] न हुआ होता। इसी का [illegible] आधुनिक शिक्षा प्रणाली में दिखाई देता है। जिसमें शिक्षा के [illegible] में विदेशी [illegible] का बोलबाला रहा है। [illegible] मिशनरियों का प्रमुख स्थान है और इन मिशनरियों को भारत में आधुनिक शिक्षा का [illegible] माना जाता है क्योंकि [illegible] ने [illegible] शिक्षा [illegible] में इन मिशनरियों ने [illegible] शिक्षा [illegible] व्यक्तियों को [illegible] किया, जिसमें जीगेनबाल्ग (Ziegenbalg) के [illegible] सन् 1716 में [illegible] अध्यापकों की [illegible] के लिए एक प्रशिक्षण महाविद्यालय स्थापित किया था। जहाँ से प्रशिक्षित अध्यापकों को [illegible] स्कूलों में नियुक्त कर दिया जाता था।

इस प्रकार यदि प्राचीन शिक्षा व्यवस्था से लेकर आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का [illegible] स्पष्ट होता है। लेकिन आज चरित्र माध्यम से शिक्षा प्रदान करना [illegible] क्योंकि आज भौतिक और नैतिक शिक्षा का समन्वय [illegible] धर्मनिरपेक्षता के सिद्धान्त [illegible] लागू कर दिया गया है। इसी कारण आध्यात्मिक [illegible] भी [illegible] प्रचलित होते हैं—

(1) तत्त्वज्ञान (मेटाफिजिक्स), (2) ज्ञान शास्त्र (एपिस्टेमोलॉजी), (3) नीतिशास्त्र (इथिक्स)

तथा [illegible] (रेड्‌मल) [illegible] नहीं [illegible]

[illegible] किया जाता है। अतः [illegible] है। जिसमें [illegible] आवश्यकता है [illegible] कारण है [illegible] नैतिकता [illegible], जिसकी [illegible] में [illegible] है [illegible] के लिए [illegible] है। इसी तरह [illegible] 'निकोमैकियन एथिक्स' में [illegible] नीतिशास्त्र को [illegible] किया है। अतः [illegible] है, नैतिक आचरण [illegible] होगा और [illegible] है। लेकिन आज [illegible] सिद्धान्तों की [illegible] है। [illegible]

[illegible] विद्यालय में अध्यापक और [illegible] [illegible] पीढ़ी [illegible] है [illegible] भ्रष्टाचार, [illegible], स्वार्थ, [illegible] [illegible] है। [illegible]

[illegible] है [illegible] आत्मा (चरित्र) की [illegible] करनी चाहिए, [illegible] है। [illegible]

[illegible] है तो वह [illegible] नहीं [illegible], किन्तु [illegible]

[illegible] है कि [illegible]

व्यक्ति को इहलौकिक और पारलौकिक सिद्धि प्राप्त होती है; [illegible]

[illegible] को [illegible] नहीं करते, और वे [illegible] में उसी प्रकार [illegible] देते हैं, जैसे [illegible]

निकल आने पर [illegible] चरित्र [illegible] व्यक्ति को [illegible]

करता है। अनेक उदाहरणों के माध्यम से चरित्र निर्माण की आवश्यकता बतलाते हुए [illegible]

दयानन्द जी [illegible] चरित्र निर्माण को मानव जीवन का आवश्यक अंग मानते हुए स्पष्ट कहा

है कि- [illegible] शिक्षक-शिक्षार्थी और शिक्षा ये तीनों अंग आवश्यकता

से विमुख हैं [illegible]

[illegible]

[illegible] शिक्षार्थी [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] है और [illegible] शिक्षा [illegible]

[illegible] शिक्षा में [illegible]

[illegible] शिक्षा में [illegible]

[illegible] गए। वहाँ [illegible] पर [illegible] नहीं। [illegible] है [illegible]

[illegible] नहीं। [illegible] है पर [illegible] नहीं। अतः [illegible] से [illegible], विद्यालय, [illegible] और

शिक्षकों की [illegible] है। विद्यार्थी [illegible]

है। उसमें चरित्र निर्माण [illegible], नैतिक शिक्षा नितान्त आवश्यक है। [illegible] नैतिकता [illegible]

[illegible] है, [illegible] शिक्षा [illegible] नैतिक [illegible] विद्यार्थी जीवन

में [illegible] है। [illegible] विद्यार्थी [illegible] है

अतः अध्यापक को [illegible] माध्यम से [illegible] बल प्रदान करना चाहिए, [illegible]

[illegible] मजबूत बनाना चाहिए, [illegible]

[illegible] क्योंकि [illegible]

[illegible]

[illegible] की [illegible]

[illegible] है। [illegible]

[illegible] होता है। अतः [illegible] में चरित्र निर्माण के माध्यम से शिक्षा प्रदान

करते हुए इन साधक तत्वों का [illegible] अत्यावश्यक है। अन्यथा यह [illegible] जीवन भर के लिए, [illegible]

सिद्ध हो जायेगी। [illegible] और [illegible] की

यदि अध्ययन आवश्यक है। एक विद्यार्थी का [illegible] केवल [illegible] तक ही [illegible] नहीं, [illegible]
का [illegible] है। [illegible] में [illegible] निहित होता है—

1. गुरुकुल बालक का ही जीवन में प्रकाश और शक्ति [illegible] प्राप्त [illegible]
2. [illegible] की प्रारम्भिक शिक्षा [illegible] आचार्य द्वारा सम्पन्न हो।
3. पाठशालाओं में दार्शनिक [illegible] के [illegible] व्यवस्था हो।
4. [illegible] पुस्तकों पर प्रतिबंध हो।
5. [illegible] के साथ अध्ययन।
6. गुरुजनों का अभिवादन।
7. जीव पर दया [illegible] करना।
8. [illegible] सेवा।
9. ब्रह्मचर्य, [illegible]
10. [illegible] भी आवश्यक है।

इन [illegible] का कुछ, [illegible], [illegible] व प्रशासन [illegible] में [illegible] हुए [illegible] की शिक्षा [illegible] की [illegible] आर्थिक [illegible] में [illegible] है। लेकिन [illegible] का नहीं, [illegible] में [illegible] [illegible] है [illegible] रहा है, परन्तु उनका [illegible] जा रहा है। धार्मिक व नैतिक [illegible] में [illegible] है।

अतः [illegible] प्रदान करने में [illegible] की [illegible] आवश्यकता है कि [illegible] शिक्षा [illegible] आदर्शों में [illegible] शिक्षा [illegible] जायेगी।

सन्दर्भ—

1. It would be historically true to assert that the medieval system of education failed to impart the qualities of leadership and thus ensure the supply of outstanding personalities in the different walks of life. [illegible] P. 57
2. N.N.Law : Promotion of learning by early european settlers, P. 36
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]
7. [illegible]

[illegible]

[illegible] विश्वविद्यालय [illegible]

अभिनवगुप्तपादस्याभिनवोक्तयः

डॉ. [illegible]

[illegible]

किं लोचनं विनालोको भाति चन्द्रिकयापि हि।
तेनाभिनवगुप्तोऽत्र लोचनोन्मीलनं व्यधात्॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अभिनवगुप्तपादस्य [illegible]—

[illegible]

यथा हि [illegible]

सुकुमाराभिनय[illegible] [illegible] इति [illegible]। [illegible]
[illegible] इत्युक्तवता [illegible] [illegible] इति [illegible]।

[illegible] हि [illegible] न [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] यत्र [illegible] [illegible] यथाऽऽह [illegible] –

> रविसङ्क्रान्तसौभाग्यस्तुषारावृतमण्डलः।
> निःश्वासान्ध इवादर्शश्चन्द्रमा न प्रकाशते॥[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] "[illegible] न [illegible]"।

[illegible] [illegible] [illegible] –

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] इति [illegible]।"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] –

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।"
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]।

लोकधर्मी लौकिकत्वञ्च –

अभिनवगुप्त[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] अभिनव[illegible] [illegible]।

[illegible]

पश्चात्तुपयोगो हि न तथा व्याधिं जनयति यथा कुपथ्योपयोगः।

[illegible]

न हि पीतरागो विपर्ययस्तान् भावान् पश्यति। न तस्य पीतापरक्तशिलं ... प्रतिभाति [illegible]

[illegible]

सन्दर्भाः

1. [illegible] 17
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible], पृ.सं. 141
5. [illegible], पृ.सं. 54
6. [illegible]
7. [illegible]
8. [illegible], पृ.सं. [illegible]
9. [illegible], पृ.सं. [illegible]
10. [illegible], पृ.सं. [illegible]
11. [illegible]
12. [illegible]
13. [illegible], पृ.सं. 156
14. [illegible]

[illegible]

मीमांसा सम्मत मोक्ष का स्वरूप तथा आचार्य शंकर द्वारा उसका खण्डन

डॉ. रानी दाधीच

मीमांसकों ने [illegible] के स्वरूप में बहुत ही सुन्दर विवेचनपूर्ण [illegible] किया है। [illegible] अधिक अन्य दर्शनकारों के [illegible] [illegible] – [illegible] [illegible]। इस तत्त्व के साथ आत्मा के सम्बन्ध का [illegible] का नाश [illegible] [illegible] – [illegible] की [illegible] [illegible] है।

[illegible] इन्द्रियों के [illegible] से बाह्य विषयों का [illegible] करता है। [illegible] – (1) [illegible] (2) [illegible] एवं (3) [illegible] पदार्थ।

[illegible] अभिप्राय यह है कि [illegible] [illegible] शरीर, इन्द्रिय और विषयों की [illegible] नहीं होगी। [illegible] कर्मों के फलोपभोग से और [illegible] नैमित्तिक कर्मों के [illegible] से होता है।

मीमांसकों के मोक्ष को सिद्ध करते हुए [illegible] कहते हैं कि [illegible] मोक्ष मानते हैं, परन्तु यह केवल अपनी अल्पज्ञता का प्रदर्शन मात्र है।

मीमांसक आचार्य [illegible] मीमांसक ग्रन्थ [illegible] में मोक्ष के स्वरूप की व्याख्या करते हुए अन्य दर्शनों के [illegible] का खण्डन किया है। यथा – [illegible] कहते हैं कि लौकिक सुख, स्वर्ग, [illegible] [illegible] है।

[illegible] मोक्ष मानते हैं [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] नहीं होती।

नास्तिकगण (नास्तिक) कहते हैं कि शरीर, दुःखों का उच्छेद ही मोक्ष [illegible]। नास्तिकों के इस मोक्ष में दुःख के साथ सुख का भी [illegible] मान लिया गया है, [illegible] मोक्ष में भी [illegible] नहीं रहता, अतः यह भी उपेक्षणीय है

इस प्रकार मीमांसकों ने [illegible] को भी [illegible] किया है [illegible] के [illegible] अनुभव सुख [illegible] की [illegible] में होती है, वह मोक्ष में केवल दुःखनाश के कारण नहीं हो सकती, मोक्ष में सुख या सुखरूपता मानना परम आवश्यक है।

प्रभाकर गुरु के अनुसार आत्यन्तिकस्तु देहोच्छेदो निःशेषधर्माधर्मपरिक्षयनिबन्धनो मोक्षः मोक्ष का स्वरूप है किन्तु प्रभाकर मत में मोक्ष में भी सुख का विलोप हो जाने के कारण [illegible] ही पर्यवसित होती है। वेदान्ती ने भी इसका खण्डन करते हुए कहा है [illegible] [illegible] अर्थात् पुरुषार्थत्व [illegible] नहीं है।

सांख्याचार्यों का मानना है कि प्रकृति और पुरुष का भेदज्ञान हो जाने पर आत्मा का स्वरूपावस्थान ही मोक्ष है - तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्, इस स्थिति में भी आनन्द का अभाव है, अतः पुरुषार्थत्व असिद्ध है।

[illegible] है कि [illegible] का [illegible] हो [illegible] और [illegible] है, अतः पुरुषार्थता की [illegible] हो जाती है। यह [illegible] में [illegible] [illegible] क्योंकि [illegible] सुखरूप नहीं, [illegible] है। दूसरी बात यह भी है कि आनन्द आत्मा का गुण है, आत्मा आनन्दरूप नहीं। दूसरों की अभिलाषा तो 'सुखी मैं बनूँ' ऐसी ही होती है, सुखरूप [illegible], ऐसी नहीं, अतः [illegible] में पुरुषार्थता [illegible] नहीं सकती

'[illegible] मोक्ष इति भास्करः। [illegible] आनन्द [illegible] न [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आनन्द [illegible] पुरुषार्थत्वं [illegible]।

इस प्रकार अन्य सभी दर्शनों के मोक्ष के स्वरूप का खण्डन करने के [illegible] मोक्ष का स्वरूपनिर्धारण करते हुए [illegible] कहते हैं -

दुःखात्यन्तसमुच्छेदे सति प्रागात्मवर्तिनः।
सुखस्य मनसा भुक्तिर्मुक्तिरुक्ता कुमारिलैः॥"

अर्थात् दुःख का आत्यन्तिक समुच्छेद [illegible] [illegible] में [illegible] की [illegible] द्वारा [illegible] होती है [illegible] में [illegible] आनन्द रहने से ही आत्मा में [illegible] जाता है, फिर भी संसारदशा में इसकी अनुभूति नहीं होती है। इस प्रकार ने श्रुतिप्रमाण द्वारा अपनी बात को स्पष्ट करते हैं

आनन्दं ब्रह्मणो रूपं तच्च मोक्षेऽभिव्यज्यते"।

अर्थात् ब्रह्म का आनन्द [illegible] [illegible] [illegible] होता है, जिसकी आत्यन्तिक [illegible] में ही होती

[illegible] किया है —

निषिद्धकाम्यकर्मभ्यः सम्यग्व्यावृत्तचेतसः।
नित्यनैमित्तिकाचारक्षपितप्राक्तनदुष्कृतेः ॥२६॥
शुद्धस्वान्तप्रतिष्ठाभ्यां क्षीणारब्धकर्मणः।
[illegible] शास्त्रपारिणः ॥२७॥
[illegible]
[illegible] सदा [illegible] ॥२८॥

अत: मीमांसक [illegible] नहीं है। [illegible]

नतु ज्ञातात्मतत्त्वानां भोगात् पूर्वक्रियाक्षये।
उत्तरप्रचयासत्त्वाद् देहो नोत्पद्यते पुनः॥
कर्मजन्योपभोगार्थं शरीरं न प्रवर्तते।
तदभावे न कश्चिद्धि हेतुस्तत्रावतिष्ठते॥
मोक्षार्थी न प्रवर्तेत तत्र काम्यनिषिद्धयोः।
नित्यनैमित्तिके कुर्यात् प्रत्यवायजिहासया॥

तात्पर्य यह है कि [illegible] है।

आचार्य शङ्कर द्वारा मीमांसा सम्मत मोक्ष का खण्डन –

मोक्ष के विषय में अद्वैत वेदान्त और मीमांसा का अन्तर बहुत बड़ा है। मीमांसा दर्शन [illegible] की सत्ता तो बनी रहती। [illegible] का तो विलय हो जाता है, परन्तु [illegible] मीमांसा की दृष्टि इससे बिल्कुल भिन्न है। मुक्तावस्था में प्रपञ्च की सत्ता नहीं [illegible] रहती है, [illegible] दोनों शास्त्रों का पार्थक्य है। [illegible] का मोक्ष [illegible] सिद्ध है। [illegible] फल की कामना किये [illegible] काम्यकर्मों [illegible]

कर्म का अनुष्ठान ही श्रेष्ठ है। अतः बुद्धि सापेक्ष कार्य ही वह है, जिसमें क्रिया की अपेक्षा तथा फल की आकांक्षा बनी रहती है।

यहाँ आचार्य शङ्कर उनकी मान्यताओं द्वारा मीमांसकों के मोक्ष विषयक मत का निरसन कर स्वपक्ष को स्थापित करते हुए यह भी सिद्ध कर रहे हैं कि वह ज्ञान के द्वारा अविद्या के हट जाने से सिद्ध किया जाता है। वह स्वरूप से नित्य है, नित्य होने से ज्ञान से स्वरूप का प्रकट होना मात्र होता है। इस प्रकार मीमांसकों के द्वारा अभिमत कर्म से ज्ञान या ज्ञानजन्य मोक्ष का मत खण्डित हो जाता है।

आत्मज्ञान में मानसिक क्रिया का निषेध –

मीमांसक ज्ञान को मानसिक क्रिया मानकर मोक्ष को कर्म का फल स्वीकार करते हैं। शङ्कर ज्ञान को कर्म से विलक्षण मानते हैं। क्रिया के परिणाम चार प्रकार के होते हैं (1) उत्पाद्य (2) विकार्य (3) आप्य और (4) संस्कार्य – मोक्ष में नहीं जा सकता है।

(1) मोक्ष नया उत्पन्न भी नहीं होता, जैसे कि सभी उत्पाद्य वस्तुओं में देखा जाता है क्योंकि मोक्ष तो नित्य है।

(2) दूध आदि विकारी पदार्थों की भांति नहीं होने, इसलिये मोक्ष विकार्य भी नहीं है।

(3) ब्रह्म के स्वरूप होने के कारण प्राप्य भी नहीं है। यदि ब्रह्म को भिन्न मानें तो भी वह प्राप्य नहीं है क्योंकि आकाश के समान सर्वगत होने से नित्य प्राप्त है।

(4) मोक्ष संस्कार्य भी नहीं है। संस्कार करने का अर्थ होता है कुछ गुण लाने होते हैं या उसके दोष निकालने होते हैं। मोक्ष ब्रह्मरूप है अतः न तो उसमें गुण लाया जा सकता है और न ही उसमें कोई दोष है जो हटाया जा सकता है।

''तस्मान्मोक्षं प्रति क्रियानुप्रवेशद्वारं न शक्यं दर्शयितुम्। तस्माज्ज्ञानमेकं मुक्त्वा क्रियाया गन्धमात्रस्याप्यनुप्रवेश इह नोपपद्यते।''

अतः मोक्ष में ज्ञान के अतिरिक्त क्रिया के लेशमात्र का भी प्रवेश नहीं बनता।

ज्ञान मानसी क्रिया भी नहीं है, क्योंकि ज्ञान इससे विलक्षण है। क्रिया उसे कहते हैं, जो वस्तुस्वरूप की अपेक्षा के बिना ही विहित की जाती है और जो पुरुष के चित्तव्यापार के अधीन है।

'क्रिया हि नाम सा यत्र वस्तुस्वरूपनिरपेक्षैव चोद्यते, पुरुषचित्तव्यापाराधीना च, यथा 'यस्यै देवतायै हविर्गृहीतं स्यात् तां ध्यायेद्वषट्करिष्यन्' (ऐ. ब्रा. 3.8.1) इति 'संध्यां मनसा ध्यायेत्' इति चैवमादिषु। ध्यानं चिन्तनं यद्यपि मानसं तथापि पुरुषेण कर्तुमकर्तुमन्यथा वा कर्तुं शक्यम्, पुरुषतन्त्रत्वात्।'

ध्यान, चिन्तन आदि मानसी क्रियायें हैं। ये पुरुष के अधीन होने के कारण पुरुष के द्वारा करने, न करने अथवा अन्यथा करने योग्य हैं। ज्ञान तो प्रमाणजन्य है और प्रमाण यथार्थ वस्तु विषयक होता है, इसलिये ज्ञान करने, न करने अथवा अन्यथा करने योग्य नहीं होता, वह केवल वस्तु के अधीन है, न विधि के अधीन है और न पुरुष के अधीन। अतः मानसिक होने पर भी ज्ञान का ध्यान से महान अन्तर है।

[illegible] स्पष्ट करते हैं [illegible]

[illegible] बुद्धि [illegible] और [illegible]

निश्चयात्मक होने के कारण [illegible] है। [illegible] के अधीन भी है [illegible]

है, वह न [illegible] के अधीन है और न पुरुष के अधीन है। [illegible] के अधीन है

अतः वह ज्ञान ही [illegible] नहीं। इसी प्रकार [illegible] प्रमाण निश्चयात्मक [illegible] भी [illegible] चाहिये। [illegible]

निश्चयात्मक ज्ञान भी [illegible] के अधीन नहीं है, अतः [illegible] नहीं है

आत्मा [illegible] अतीन्द्रिय है –

[illegible] आचार्य शङ्कर यह सिद्ध करते हैं कि [illegible] अतीन्द्रिय [illegible] है [illegible] किसी [illegible] नहीं होती है [illegible] क्योंकि [illegible] नहीं है [illegible] धर्म का [illegible] है। [illegible] है, [illegible]

[illegible] करते हुए यह [illegible] करते हैं, [illegible] है कि [illegible] के [illegible] आत्मा द्वारा [illegible] है, क्योंकि [illegible] कर्मों का [illegible] है, [illegible] की [illegible] के [illegible] के लिये [illegible] का [illegible] है [illegible] कर्म [illegible] आदि [illegible] है, [illegible] आदि भी [illegible] है, यह [illegible] आचार्य का [illegible] है। [illegible] को [illegible] करने के लिये [illegible] आचार्य और भी उदाहरण प्रस्तुत करते हैं

[illegible] इत्यादि [illegible] श्रुति से वेद [illegible] किया जा रहा है।

[illegible] इत्यादि श्रुति से भी वेद [illegible] है। [illegible] वेद [illegible]

[illegible] के लिये [illegible] वेद [illegible] है।

[illegible] श्रुति [illegible] सिद्ध किया है कि [illegible] करते हुए [illegible] के [illegible] के द्वारा [illegible] किया है

[illegible]

आचार्य [illegible] कहते हैं कि [illegible] का [illegible] होने से [illegible] का [illegible] है [illegible] नहीं है क्योंकि [illegible]

[illegible] श्रुति [illegible] सुख, दुःख, [illegible] के [illegible] में [illegible] तात्पर्य [illegible] है। [illegible] का [illegible] अभिप्राय है कि [illegible] सिद्ध पदार्थों का अनुवाद करके [illegible] का [illegible] किया करता है, अतः [illegible] है [illegible] सिद्ध, दुःख, [illegible] का ज्ञान [illegible] का [illegible] होने के कारण [illegible] है कोई [illegible] ही नहीं रहता, [illegible] का [illegible] कहा [illegible] इस प्रकार [illegible] है और [illegible] है।

[illegible] शब्दों से [illegible] संसर्ग आगम का अनुवाद करके [illegible] की [illegible] से [illegible] के [illegible] आदि [illegible] करता है, [illegible] के [illegible] किया जाता है।

"[illegible]" [illegible] नहीं है, [illegible] है क्योंकि [illegible] है, [illegible] है।

"[illegible]" [illegible] है, यह भी [illegible] नहीं है क्योंकि [illegible] है [illegible] कोई दोष नहीं [illegible]।

"[illegible]"।

"[illegible]" [illegible] अविद्यावान् पुरुष के लिए किया गया है, [illegible] नहीं और [illegible] विद्यावान् के [illegible] किया जाए तो भी [illegible] नहीं होगा क्योंकि [illegible] अर्थात् [illegible] का ही यह सामर्थ्य है कि [illegible] अपने [illegible] के [illegible] पर [illegible] करता रहे, तब भी उसमें [illegible] का [illegible] नहीं हो सकता। इसमें श्रुतिप्रमाण देते हैं –

[illegible] है, [illegible] नहीं हो सकते। [illegible] के [illegible] है। आचार्य शंकर ने [illegible] और [illegible] का प्रतिपादन किया है।

[illegible] है [illegible] सिद्ध होता है, कर्मविधान नहीं।

यहाँ पर [illegible] एक और शंका उठाते हैं कि "[illegible]" इत्यादि वाक्य [illegible] है। [illegible] कि [illegible] सिद्ध [illegible] नहीं है और "[illegible]" इत्यादि श्रुति [illegible] का प्रतिपादन [illegible] करती है

किन्तु [illegible] है कि [illegible]

[illegible] किया गया है। इसी प्रकार [illegible] में निहित है [illegible] आसन [illegible] चाहिये [illegible] जैसे कि [illegible] और [illegible] होता है। इसलिए [illegible] के साथ अन्य आसन का [illegible] है।[1]

[illegible] अर्थात् [illegible] को [illegible] सब [illegible] का [illegible] है, [illegible] के साथ [illegible]

[illegible] इसका [illegible] है।

[illegible] अन्य आसन [illegible] है। इस [illegible] है क्योंकि [illegible] की [illegible] में [illegible] आसन [illegible] है।

[illegible] है कि [illegible] के लिये [illegible] और [illegible] के लिये [illegible] है, [illegible] और [illegible] के लिये [illegible] की आवश्यकता है।

संदर्भ संकेत–

1. [illegible] 2001 [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible] 7. [illegible]
8. [illegible]
9. [illegible] 1992 [illegible]
10. [illegible] 25

11. [illegible] स्थल सं. 25 पर [illegible]

12. [illegible] सं. 21–25 [illegible]

[illegible]

13. [illegible]

[illegible]

14. मीमांसान्यायप्रकाश, [illegible] सं. 108–110

15. कठोपनिषद् 1.2.[illegible] पर शाङ्करभाष्य, [illegible]
16. कठोपनिषद् 1.2.[illegible] पर शाङ्करभाष्य

17. वही
18. [illegible] 1.2.[illegible]

19. [illegible] 3.4.2
20. [illegible] 1.6

21. [illegible] 3.4.[illegible]
22. [illegible]

23. [illegible] 3.4.5 पर [illegible]
24. [illegible] 3.15.1

25. [illegible] 3.4.6 पर [illegible]
26. [illegible] 3.4.8

27. [illegible] 3.4.8 पर [illegible]

28. [illegible]

[illegible]

29. [illegible]
30. छान्दोग्योपनिषद् [illegible]

31. [illegible] 3.4.15 [illegible]

[illegible]

32. [illegible] 1.1.2
33. [illegible] 2

34. [illegible] 3.4.1[illegible]
35. [illegible] 2

36. [illegible] 3.4.5
37. [illegible] 3.23.1

38. [illegible] 1.1.1
39. [illegible] 3.23.1

40. [illegible] 3.4.12 [illegible]

[illegible]

41. [illegible] 4.4.22
42. छान्दोग्योपनिषद् 5.10.1

43. वही 2.23.[illegible]
44. वही 3.[illegible]

45. [illegible]

[illegible],

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, [illegible], जम्मू

'आवन्तिकम्' काव्यस्य शब्दपाकभाववैभवप्रकाशः

डॉ. [illegible]कुमारमिश्रः

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कालिदास [illegible]

चन्द्रांशु [illegible] सुधार्द्रसिक्तं

नील[illegible] शिप्रा–शिखि–प्रणम्यम्॥

गाम्भीर्य–पुष्कल–हलाहल–नीलकण्ठं

गौरी–गजास्य–कलितं शिवमाश्रयेऽहम्॥

[illegible]

[illegible]

[illegible] –

पश्यामि[illegible]–विभूतिकथां [illegible]

केन पदं विरचते मुन[illegible]।

तं नाक–शोक–[illegible]

वन्दे सुधांशु–रवि–वह्नि–दृशं गिरीशम् ॥

अस्मिन् पद्ये[illegible]

[illegible]

सर्ग–स्थिति–प्रलय–केलि–विलोल–नील

संसार–सागर–समुद्धरणैक–शीलम्।

[illegible]

लीलावतं मञ्जुल तनुं [illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]–सुता [illegible]

पत्नी [illegible]–मनसां [illegible]।

पाटल्य–वापी–मुक्तापीठ–शिवलिङ्गयोः [illegible]

कोटल्य–[illegible]–[illegible] चण्डिका [illegible]॥

[illegible] कविनां [illegible] भक्तानां [illegible]पि [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]

क्व नन्दनोद्यान–मरन्द–माधुरी

क्व चार्क–पुष्पे मधु–बिन्दु–सेवुरी।

क्व सा महाकाल–महा–महार्णवः

क्व च गन्धर्वीत–शंभुनो–जवः॥

तथाप्यकल्पो–मतिमोक्षकल्पना

मनाग् गुण–शुण्ण–कथं समुद्गिरन्।

यतीन्द्र–कीर्तिं स्फुरयन् पदे पदे

महाकाल–पदाब्ज वन्दयामि मन्दधीः॥

[illegible]

[illegible]

मुनीनां सिद्धानामपि ऋषीणां [illegible],

कवीनां काव्यानां कलन–कल–कीर्ति–[illegible]।

नृपाणां गुणानां [illegible]–[illegible] त्रिगुणिता,

स्थिता [illegible] महाकाल–नगरी॥

[illegible]

[illegible]

अहोरात्रे [illegible] गुरु [illegible] गौरी [illegible]

भुजङ्गं [illegible] [illegible] सुभगम्।

शिरश्चन्द्रं [illegible]–लसितं [illegible]

स्थितं कुण्डेश्वरं [illegible] महाकाल–नगरी॥

[illegible]

[illegible] उपलब्धम् [illegible]

सदा नन्दद्–शङ्ख–घण्ट–पट–निनादाकुल–पथे
डिण्डिमाभद्–विद्युल्ल–गोगीत–'मागोलन'–कर्षे।
परस्फोटि–आम्यन्त–'जय–जया' ऽऽराव–मुदिते
'महाकुम्भ' दृश्याम्यपिरतमयन्ती–शिप्रपुरे[8]।।

[illegible]

[illegible]

क्वचित् कालीन्द्रालं [illegible]–वचनैः
क्वचित् सांगोत्कर्षं सपदि गमिता मर्त्यतरिणा।
क्वचित् त्यागं शौर्यं च वहति सतां गुप कुशलां
'अनल्पेन कालं क्वचिदपि महाकाल–नगरी'।।

अत्रापि [illegible]लङ्कारः [illegible]

[illegible] –

नागद्रावन्. काल. प्रपगानि कराला[illegible] रम्यां
सुर–श्री–सम्राजः पारिकर्मास यथाग्रतिस्पृष्टः।
निनादैर्वेदानां विलयमयते शाककलहरो.
जयोत्कर्षं भद्रं विविदिषु महाकालस्तवनम्"।।

[illegible]

[illegible]

[illegible]–प्रोत्थमन्–
[illegible]–कुवलयाम्बरलोल–पाशी–पराप।

नृत्यद्भृङ्गि[illegible]विलास[illegible]कालं[illegible]

[illegible]महाकालं विशालं भजे ॥

अत्र [illegible] एकं [illegible] पुनः [illegible] प्रयोगे[illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। अतः कविः [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] न [illegible] अत्र [illegible] [illegible] [illegible] न [illegible] कार्यं [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] '[illegible]' [illegible] [illegible] न [illegible] [illegible] [illegible]–

सद्द–गङ्गा[illegible]–[illegible]–[illegible]–जटो

[illegible]–[illegible]–[illegible]:।

मिषन् [illegible] [illegible]–[illegible]–[illegible] [illegible]

जगन्मूलं मूर्तं मम हृदि महाकाल [illegible] ॥५॥

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

श्रीं गणेशं गिरिजां गिरिशार्चिताङ्घ्रीं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

गौरी[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥६॥

अत्र [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], यथा–

भूपान् [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥

[illegible] ॥

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

इदं महाकाल[illegible] [illegible] [illegible]।

पठन्ति ये [illegible] [illegible] [illegible] ॥

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] 'मधुप' [illegible] ॥

[illegible]

पादटिप्पण्यः –

1 [illegible]
2. [illegible]
3 [illegible]
4 [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]
7. [illegible]
8. [illegible]
9 [illegible]
10 [illegible]
11. [illegible]
12. [illegible]
13. [illegible]
14 [illegible]
15 [illegible]
16. [illegible]
17. [illegible]
18. [illegible]
19. [illegible]
20 [illegible]

परिशीलित ग्रन्थाः

1 [illegible]
2 काव्यप्रकाशः, [illegible] प्रकाशकः ज्ञानमण्डललिमिटेड, वाराणसी, संस्करणम् [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

योगांग ध्यान का स्वरूप

डॉ. [illegible] शर्मा

योग एक बहुत गहन विषय है। योग [illegible], [illegible] एवं [illegible] ने [illegible] किया है। किन्तु कुछ वर्षों तक लोगों की यह धारणा थी कि [illegible] के लिए साधु-सन्तों एवं योगियों का विषय है। परन्तु अब योग ने यह प्रमाणित कर दिया है कि [illegible] में [illegible] वैज्ञानिकों ने यह माना है कि योग [illegible] के सर्वांगीण विकास में पूर्ण सक्षम है। [illegible] योग की [illegible] नहीं होगी। [illegible] विभिन्न योग [illegible] के [illegible] पहलुओं में उल्लेख किया जा सकता है परन्तु इसके लिये [illegible] के वैज्ञानिक पहलुओं के अध्ययन [illegible] आधुनिक [illegible]

योग का स्वरूप :

योग शब्द वेद, उपनिषद्, गीता एवं पुराणों आदि में अति प्राचीन काल से व्यवहृत होता आया है। भारतीय दर्शन में योग एक अति महत्वपूर्ण शब्द है। आत्म दर्शन के उपदेशक महर्षि पतंजलि ने योग शब्द का अर्थ चित्तवृत्ति-निरोध बताया है। प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा एवं स्मृति ये [illegible] वृत्तियाँ [illegible] अभ्यास एवं वैराग्य [illegible] मन में [illegible] हो जाती है और मन [illegible] के स्वरूप में अवस्थित हो जाता है, तब योग होता है।

महर्षि [illegible] योग का अर्थ समाधि [illegible] है। [illegible] में युज् धातु [illegible] शब्द की व्युत्पत्ति होती है, जिसका अर्थ [illegible] पाणिनि के अनुसार दिवादिगण में युज् समाधौ, रुधादिगण में युजिर् योगे तथा चुरादिगण में युज् संयमने अर्थ में युज् धातु आता है। [illegible] के द्वारा योग [illegible] (ईश्वर) [illegible] का आनन्द [illegible] होता है।

अनेक ऋषियों की मान्यताओं के अनुसार योग का तात्पर्य [illegible] और चेतना के [illegible] जाता है। [illegible] होने पर [illegible] के [illegible] होता है [illegible] इन्द्रियों [illegible] के सम्पर्क में आता है [illegible] पाँच [illegible] राग, [illegible], [illegible] एवं [illegible]। [illegible] योग [illegible] नहीं [illegible]। [illegible] और [illegible] अवस्था में [illegible] के शिथिल होने पर [illegible], तत्पश्चात [illegible] और [illegible] की प्राप्ति होती है।

भारतीय चिन्तन में योग का [illegible] महत्वपूर्ण स्थान है। [illegible] की आधुनिक [illegible] ने योग के [illegible] विषय में [illegible] में [illegible] कृष्ण योग [illegible] बताते हुए कहते हैं कि जो कुछ भी कर्म किए जाए वो पूर्ण होंगे न होंगे हैं तथा उनके फल से तटस्थ रहने का नाम समत्व योग है। 'कर्मों में कुशलता (निपुणता) को', केवल इसे गीता में योग कहा गया है।

मनुस्मृति के अनुसार ध्यान योग से ही आत्मा को जाना जा सकता है इसलिए ध्यान योग परायण होना चाहिए। और मनुस्मृति में बताया गया है कि सदाचार न त्यागने [illegible] देखना चाहिए। जैनाचार्यों के अनुसार जिन साधनों से आत्मा की सिद्धि और मोक्ष की प्राप्ति होती है वह योग है आचार्य [illegible] ज्ञान से मन, वाणी एवं शरीर की वृत्तियों का भी कर्मयोग कहा गया है।

आधुनिक युग के योगी अरविन्द के अनुसार परमेश्वर के साथ एकत्व की प्राप्ति के लिए [illegible] सभी योगों का [illegible] है।

इस प्रकार योग का विभिन्न अर्थों में प्रयोग किया जाता है, परन्तु [illegible] होता है।

योग के प्रकार :– [illegible] में योग के चार प्रकार बताये हैं कर्मयोग, भक्ति योग, हठयोग, राजयोग (बुद्धि योग)। मनुष्यों की प्रवृत्तियाँ भिन्न भिन्न प्रकार की होती है। अतः इन्हें [illegible] अलग अलग मार्गों का [illegible] है लेकिन लक्ष्य एक ही [illegible] की उपलब्धि है। [illegible] भिन्न भिन्न [illegible] एक ही है। ये चारों मार्ग परस्पर विरोधी न होकर एक दूसरे के सहायक है।

1. कर्मयोग :– फल और आसक्ति को त्यागकर [illegible] कर्तव्यबुद्धि से [illegible] रखते हुए [illegible] कर्म करना अर्थात् निष्काम कर्म, कर्मयोग कहलाता है। कर्मयोग से [illegible] होता है, चित्त की शुद्धि होती है और कर्मों में कुशलता आती है
2. भक्तियोग :– [illegible] ईश्वर के प्रति श्रद्धा, [illegible] एवं [illegible] भावना की [illegible] अपनाता होगा, [illegible] लक्ष्य की प्राप्ति में उतनी ही अधिक सफलता मिलेगी। भक्तियोग में [illegible] होता है और प्रेम एवं [illegible] होता है।
3. हठयोग :– स्थूल शरीर [illegible] सूक्ष्म शरीर [illegible] स्थूल शरीर [illegible] विभिन्न मुद्राओं, आसनों, प्राणायाम एवं [illegible] के अभ्यास से [illegible] किया जाता है।
4. राजयोग :– [illegible] के अभ्यास से [illegible] का [illegible] साक्षात्कार करना राजयोग कहलाता है। राजयोग शब्द का अर्थ है : राज् दीप्तौ धातु से राज का दैदीप्यमान, ज्योतिर्मय तथा योग का अर्थ [illegible] आत्मा [illegible] है।

गीता में भी [illegible] ज्ञानयोग एवं कर्मयोग के रूप में विस्तृत विवेचन है। [illegible] के [illegible] अध्याय में [illegible] एवं [illegible] को [illegible] दिया गया है।

महर्षि पातंजलि ने [illegible] में अष्टांग योग को प्रस्तुत किया है। वैदिक ग्रंथों के बारे में जब हम शास्त्रों को [illegible] करते हैं तो हमें निष्कर्ष मिलता है कि आध्यात्मिक साधनाओं के क्षेत्र में [illegible] के उपाय या [illegible] अर्थात् [illegible] को इन सबको योग के नाम से [illegible] किया जाता था।

अष्टांग योग :- अष्टांग योग के अभ्यास से शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक उन्नति [illegible] वाली अशुद्धि नष्ट होती है। अशुद्धि का नाश होने से [illegible] अन्तःकरण की अशुद्धियों का क्षय होता है और ज्ञान की [illegible] होती है। जैसे-जैसे साधक साधनाओं का आदरपूर्वक अनुष्ठान करता है वैसे-वैसे उसके चित्त की मलिनता का नाश होता जाता है और मलिनता के नाश के परिणाम में उसके चित्त में ज्ञान की [illegible] होती जाती है और अन्त में विवेक-ख्याति की प्राप्ति होती है।

अष्टांग योग का [illegible] अर्थात्, [illegible] होना [illegible] है तथा [illegible] को [illegible] देखना [illegible] है [illegible] अष्टांग योग [illegible] ही है। अष्टांग योग [illegible] मनोविज्ञान एवं विज्ञान की [illegible] को [illegible] करने के लिए [illegible] अष्टांग योग [illegible] रूप से [illegible] होगा। [illegible] के [illegible] अष्टांग योग

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये योग के आठ अंग हैं।

(1) यम :- अष्टांग योग का प्रथम अंग है यम। यम शब्द की व्युत्पत्ति [illegible] से निष्पन्न होता है जिसका अर्थ है [illegible] इन्द्रियों एवं मन को [illegible] हटाकर [illegible] करना। महर्षि पतंजलि के अनुसार अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह ये पाँच यम हैं।

(2) नियम :- [illegible] में [illegible] बाह्य और आन्तरिक [illegible] नियम हैं। [illegible] के [illegible] नियमों के [illegible] में [illegible] इसलिए [illegible] नियमों का पालन [illegible] चाहिए। महर्षि पतंजलि लिखते हैं :

शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान ये पाँच नियम हैं।

(3) आसन :- स्वस्तिक, सिद्धासन, [illegible] पद्मासन आदि किसी आसन में स्थिर और सुखपूर्वक बैठना आसन कहलाता है। आसन का मुख्य उद्देश्य है मेरुदण्ड (spine) और सिर को सीधा रखना। क्योंकि रीढ़ के अन्दर सुषुम्ना नाड़ी स्थित है जिसके भीतर क्रमशः वज्रिणी, चित्रिणी तथा ब्रह्मनाड़ी विद्यमान हैं, आसन सिद्ध हो [illegible] ध्यान द्वारा कुण्डलिनी शक्ति जागृत होती है और वह ब्रह्मनाड़ी के [illegible] पर [illegible] पहुँचती है जहाँ साधक [illegible] हो जाता है।

आसन की सिद्धि होने पर शीत उष्ण, क्षुधा तृषा, राग द्वेष आदि द्वन्द्वों से साधक को कष्ट नहीं पहुँचता है। इससे शरीर की स्वस्थता, तन्त्रिका तन्त्र की शुद्धि, चित्त की स्थिरता, मन की एकाग्रता और प्राणशक्ति का उर्ध्वगमन होता है तथा शरीर के अनेक रोगों की निवृत्ति होती है।

(4) प्राणायाम :– प्राण, अपान, समान आदि वायु के गति के नियंत्रण का अभ्यास करना अर्थात् श्वांस का नियमन प्राणायाम कहलाता है। प्राणायाम के तीन अंग हैं – रेचक, पूरक, कुम्भक। प्राणायाम के अभ्यास से शरीर का रक्तचाप सामान्य बनाने, उसे सामर्थ्यवान बनाने तथा शनैः शनैः इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने हेतु मन को धारणा में स्थिर करने के लिए प्राणायाम आवश्यक माना गया है। योग दर्शन के अनुसार प्राणायाम के चार प्रकार हैं – (1) बाह्यवृत्ति (2) आभ्यन्तर वृत्ति (3) स्तम्भ वृत्ति (4) बाह्याभ्यन्तर विषयाक्षेपी।

(5) प्रत्याहार :– प्रति+आहार = प्रत्याहार। इन्द्रियों का विषयों की ओर से पीछे की ओर लौटना अर्थात् वृत्ति का अन्तर्मुखी होना प्रत्याहार कहलाता है। अर्थात् इन्द्रियों की स्वाभाविक विषयों से विपरीत बल द्वारा निग्रह करके उन्हें अभीष्ट अभ्यास में लगा देना, सदा के लिए उनको अधीन बना लेना प्रत्याहार कहलाता है।

निर्विचार समाधि की सिद्धि के लिए इन्द्रियों का वस्तु से विमुख होना चित्त के अनुरूप हो जाना है। स्वरूपतः ये मन से भिन्न नहीं हैं। इन्द्रियों का विचार नहीं करतीं, चित्त के निरुद्ध होने पर वे अपने आप निरुद्ध होने लगती हैं। अतः ये सब प्रकार चित्तानुकारिणी समझी जाती हैं अर्थात् इन्द्रियाँ चित्त की अपेक्षा नहीं रखतीं और जिस जिस कार्य में चित्त प्रवृत्त होता है उसी में इन्द्रियाँ प्रवृत्त होने लगती हैं। प्रत्याहार के अभ्यास से इन्द्रियों की चञ्चलता, मन की निश्चलता, तप की वृद्धि, रोगों का क्षय, ध्यान की आकांक्षा और समाधि में प्रवृत्त करने की शक्ति की प्राप्ति हो जाती है।

अतः यम से लेकर प्रत्याहार पर्यन्त बहिरंग साधन हैं। इसके बाद धारणा, ध्यान तथा समाधि रूप अन्तरंग साधन हैं।

(6) धारणा :– धारणा वह साधन है जिससे चित्त को एकाग्र करने में सहायता मिलती है। जैसे मन को नाभि, किसी देव, देवी व महात्मा के रूप या मूर्ति, प्रतिमा, ईश्वर आदि की अथवा शरीर के किसी स्थान विशेष जैसे नासिका, भ्रूमध्य, हृदय अर्थात् आँखों के बीच के बिन्दु – त्रिकुटी, नाभि, नासिकाग्र, मूलाधार इत्यादि में किसी एक स्थान में स्थिर करना धारणा है। जैसे कि योग शास्त्र के महर्षि पतञ्जलि ने कहा है कि जो वस्तु ध्यान की अपेक्षा रखती है उस पर ही चित्त को एकाग्र करने में सहायता मिलती है।

चित्त की वृत्तियों को एकाग्र करके किसी एक स्थान पर लगा देना धारणा है। धारणा में चित्त की वृत्तियों को एकत्र करके किसी स्थान पर बाँधा जाता है।

(7) ध्यान :– चित्तवृत्ति का निरन्तर, अविच्छिन्न प्रवाह तथा मन का निर्विषयक होना ध्यान कहलाता है। धारणा के स्थान पर ध्येय विषयक ज्ञान की एकाग्रता का नाम ध्यान है। परन्तु ध्यानावस्था

में ध्येय का [illegible] है। ध्यान में ध्येय तथा ध्येय [illegible] का [illegible] ध्याता और ध्यान [illegible] जाने को वह ध्यान है और यही ध्यान समाधि का रूप ग्रहण कर लेता है।

(2) समाधि :- ध्यान ही जब ध्येयाकार होकर जागृत रूप में निर्भासित होने लगता है तब के ध्येय स्वरूप [illegible] के कारण आत्मरूप वृत्तियों का [illegible] होने से जब ध्याता ध्यान ध्येय से शून्य सा हो जाता है तब वही समाधि कहलाने लग जाता है। अर्थात् ध्यान ही जब ध्येयाकार रूप में [illegible] हो जाता है।

ध्यान में ध्याता, ध्येय और ध्यान का [illegible] रहता है और समाधि में [illegible] भान नहीं रहता है केवल ध्येयाकार रूप से ही उसकी प्रतीति रहती है। यही तात्पर्य धारणा ध्यान में [illegible] है। समाधि के प्रकार दो होते हैं।

(1) सम्प्रज्ञात समाधि :- इस समाधि का नाम सबीज समाधि भी कहा है जिसमें ध्यान और [illegible] के विकल्प रूप की अपेक्षा हो और [illegible] के आकार की आवश्यकता हो।

इसमें चित्त की वृत्ति का ध्येय में लय हो जाना होता है और इसका कुछ विषय नहीं रहता [illegible] किसी न किसी आलम्बन की आवश्यकता रहती है। इसमें प्रज्ञा के संस्कार भी रह जाते हैं। सम्प्रज्ञात समाधि चित्त की एकाग्रता अवस्था में होती है।

(2) असम्प्रज्ञात समाधि :- इसे निर्विकल्प समाधि भी कहते हैं। इसमें ध्याता ध्यान ध्येय के भेद की कोई अपेक्षा नहीं रहती। जैसे जल में लवण घोलकर जल-रूप हो जाता है उसी प्रकार ब्रह्म में चित्त वृत्ति लीन हो जाने से ब्रह्म के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं दिखाई देता।

इसमें कोई आलम्बन नहीं रहता। सब वृत्तियाँ विलीन हो जाती हैं। यह समाधि चित्त की निरुद्धावस्था में होती है और परवैराग्य इसका कारण है। इसके अन्त में चित्त का विनाश हो जाता है। इसी स्वरूप को आत्मसाक्षात्कार की अवस्था भी कहते हैं। यही योग का अंतिम लक्ष्य है।

[illegible] समाधि [illegible] एक ऐसा प्रभावशाली है जिसे प्राप्त करके योगी इस प्रकार अनुभव करता है कि प्राप्त करने योग्य सब कुछ [illegible] क्लेश नष्ट हो गये हैं [illegible] सिद्ध करने में समर्थ हो गया है। समाधि द्वारा जो आनन्द प्राप्त होता है, उसका वर्णन नहीं हो सकता; उसकी केवल अन्तरात्मा में अनुभूति मात्र होती है।

ध्यान की उपादेयता

[illegible], मुण्डक [illegible] आदि में [illegible] में [illegible] अखण्ड प्रवाह ध्यान है। जैसे नदी जब समुद्र के साथ प्रवेश करती है तब वह समुद्र का रूप धारण कर लेती है [illegible] है। वैसे ही ध्यान के [illegible] सच्चिदानन्द परमेश्वर के अतिरिक्त अन्य विषय का स्मरण नहीं करता, अपितु उसी अन्तर्यामी सत्ता के आनन्दमय, ज्योतिर्मय [illegible] स्वरूप में [illegible] है।

ऐसा [illegible] समय से [illegible] प्रचलित हुआ [illegible] है। भारतीय संस्कृति में तो ध्यान प्रत्येक क्रिया का मूल रहा था। [illegible] आज भी हमें अपने [illegible] से [illegible] ध्यान [illegible]। कार्य को विशिष्ट [illegible] करते हैं तो [illegible] सफल होता है। ध्यान से पढ़ना, ध्यान से चलना, प्रत्येक कार्य को ध्यान से करना। आज हम ध्यान शब्द का प्रयोग तो करते हैं परन्तु सच्चे ध्यान का [illegible] ओर किसी का ध्यान नहीं जाता है। दैनिक जीवन के प्रत्येक कार्य के साथ जुड़े इस ध्यान शब्द [illegible] से यह तो ज्ञात हो सकता है कि ध्यान जीवन का अभिन्न अंग है। ध्यान के बिना जीवन अधूरा है। ध्यान के बिना हम अपने किसी भी भौतिक व आध्यात्मिक लक्ष्य में सफल नहीं हो सकते। ध्यान [illegible] तथा आनन्दमय व शान्तिमय जीवन जी सकता है। यद्यपि ध्यान अपने आप में एक बहुत बड़ी वैज्ञानिक प्रक्रिया है फिर भी ध्यान की कुछ विधियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला जा रहा है :

(1) ध्यान करने से पहले प्राणायाम अवश्य करें क्योंकि प्राणायाम से हमारा मन पूर्ण शान्त व एकाग्र हो जाता है। शान्त मन से ही ध्यान को ठीक प्रकार से किया जा सकता है।

(2) [illegible] और अनुलोम-विलोम-प्राणायाम विधिपूर्वक करने से मन निर्विचार हो जाता है। अतः ध्यान [illegible]। [illegible] 3 मिनट कपालभाति और 3 से 10 मिनट अनुलोम विलोम प्राणायाम करने से [illegible] मूलाधार चक्र में सन्निहित ब्रह्म की दिव्यशक्ति जागृत होकर ऊर्ध्वगामी होने लगती है, जिससे समस्त चक्रों और नाड़ियों का शोधन हो जाता है। आध्यात्मिक दृष्टि से, एक विलक्षण दिव्यता में [illegible] आनन्द [illegible] आलोकित हो जाता है। [illegible] चंचल मन भी प्राणायाम के द्वारा एकाग्र हो जाता है।

(3) ध्यान करते समय ध्यान को ही सर्वोपरि महत्त्व देना चाहिए। ध्यान के समय किसी भी अन्य क्रिया का, चाहे वह कितना ही [illegible] हो, महत्त्व नहीं देना चाहिए। ध्यान के समय चिन्तन, मनन, निदिध्यासन व [illegible] का लक्ष्य रखें।

(4) ध्यान के समय मन एवं इन्द्रियों को अन्तर्मुखी बनाएं तथा ध्यान से पहले [illegible] मन [illegible] चिन्तन में [illegible] करना चाहिए कि मैं प्रकृति, धन, ऐश्वर्य, बुद्धि, मकान, पुत्र, परिवार [illegible] नहीं हूँ [illegible] नहीं हूँ। मैं [illegible] व चेतन [illegible] भी [illegible] नहीं हूँ। मैं [illegible], निर्मल, [illegible], शान्तिमय, [illegible], [illegible] हूँ। मैं सदा प्रभु में हूँ और प्रभु मेरे [illegible] हैं, [illegible], [illegible] व [illegible] अनुभव करना।

(5) साधक को एक निश्चित [illegible] ध्यान में [illegible] चाहिए। [illegible] को [illegible] में [illegible] शुद्ध [illegible] की [illegible] करना चाहिए। [illegible] का [illegible] की अपेक्षा [illegible] का [illegible] ध्यान है।

(6) [illegible] मन [illegible] का [illegible] के [illegible] हुआ है। [illegible] में [illegible]

दूसरा [illegible] भगवान् [illegible]
[illegible] तस्य वाचकः प्रणवः (यो॰ 1/27)
तज्जपस्तदर्थभावनम् (योग 1/28)
ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म (गीता)
ओ३म् खं ब्रह्म (यजुर्वेद)
ध्यान के लिए अर्थ सहित ओंकार जप का अभ्यास बताया है। [illegible] की आकृति, आँख, नाक, [illegible], कान, हृदय व [illegible] की आकृति [illegible] है। इस प्रकार [illegible] सर्वान्तर्यामी, सच्चिदानन्द [illegible] को ही [illegible] अनुभव करता हुआ [illegible] में [illegible] होने लगता है।

(4) [illegible] इन्द्रियाँ [illegible] हैं क्योंकि [illegible] [illegible] निर्लेप [illegible] ओंकार [illegible] करना चाहिए। [illegible] और [illegible] श्वास के साथ ओंकार का ध्यान करें। [illegible] एक [illegible] एक [illegible] करें। इस प्रकार [illegible] ओंकार [illegible] ध्यान [illegible] है। [illegible] सच्चिदानन्द स्वरूप ब्रह्म के [illegible] समाधि के [illegible] आनन्द को भी [illegible] है।
[illegible] [illegible] हैं [illegible] सम्पूर्ण जीवन [illegible]

(5) इस प्रकार प्रत्येक मनुष्य को प्रतिदिन [illegible] सम्पूर्ण [illegible] की [illegible] है।

[illegible] भक्ति की [illegible] है [illegible] और [illegible] ध्यान [illegible] और [illegible] है। ध्यान [illegible] ध्यान [illegible] प्रदान करता है। ध्यान [illegible] के [illegible] होता है। [illegible]

[illegible] अनुभूति होती है।

सन्दर्भ सूची

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]
7. [illegible]
8. [illegible]
9. [illegible]
10. [illegible]
11. [illegible]
12. [illegible]
13. [illegible]
14. [illegible]
15. [illegible]
16. [illegible]
17. [illegible]
18. [illegible]
19. [illegible]
20. [illegible]
21. [illegible]
22. [illegible]
[illegible]
23. [illegible]
24. [illegible]
25. [illegible]
26. [illegible]
27. [illegible]
28. [illegible]

[illegible]

[illegible]

वेदमतानुसारेण व्याकरणस्योत्पत्तिः

सर्वेन्द्रकुमार पाठक

[illegible]

[illegible]

इदमन्धंतमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते॥"

[illegible]

[illegible]

[illegible]

उतत्वः पश्यन्न ददर्श वाचमुतत्वः शृण्वन्न शृणोत्येनाम्।
उतो त्वस्मै तन्वं विसस्रे जायेव पत्य उशती सुवासाः॥'

[illegible] इति पतञ्जलिः।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

यो वेद वेदवदनं सदनं हि सम्यक्

स वेदमपि वेद किमन्यशास्त्रम्॥

यस्मादतः प्रथमेतदधीत्य धीमान्।

शास्त्रान्तरस्य भवति श्रवणेऽधिकारी॥[1]

[illegible]

दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापतिः।[illegible] ॥19॥77॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

यद्यपि बहुनाधीषे तथापि पठ पुत्र व्याकरणम्।

स्वजनः श्वजनो माऽभूत् सकलं शकलं सकृत् शकृत्॥

शब्दशास्त्रमनधीत्य यः पुमान् वक्तुमिच्छति वचः सभान्तरे।

बद्धुमिच्छति वने मदोत्कटं हस्तिनं कमलनालतन्तुना॥

संदर्भग्रन्थाः–

1. [illegible] – 4/[illegible]
2. [illegible] – [illegible]
3. ऋग्वेद – 10/[illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]
7. शु.य.वे. 19/77
8. [illegible]
9. [illegible]

[illegible]

[illegible]

ज्योतिषशास्त्रे राजयोगानां निरूपणम्

डॉ. सुभाषचन्द्र मिश्र

[illegible] शुभफलप्रदाः [illegible] एवं योगानां [illegible] [illegible]। [illegible]

[illegible] शुभाशुभफलमपि [illegible]

[illegible] एवं [illegible] शुभाशुभं [illegible]। [illegible] त्रिकोण-केन्द्रेशाः [illegible] आदियोग-[illegible] यथा-

सर्वे त्रिकोणनेतारो ग्रहाः शुभफलप्रदाः ।
पतयः त्रिषडायानां यदि पापफलप्रदाः ॥

अत्र [illegible] त्रिषडायेशाः [illegible]। [illegible] यथोक्तम्-

लग्नाद्व्ययद्वितीयेशौ परेषां साहचर्यतः ।
स्थानान्तरानुगुण्येन भवतः फलदायकौ ॥

तथा च

भाग्यव्ययाधिपत्येन रन्ध्रेशो न शुभप्रदः ।
स एव शुभसन्धाता लग्नाधीशोऽपि चेत्स्वयम् ॥

[illegible] शुभाशुभफलं [illegible]। [illegible] योगानां [illegible] शक्यते ॥

राजयोगाः–

[illegible] ज्योतिषशास्त्रे [illegible] राजयोगाः [illegible]। अत्र [illegible] राजयोगाः [illegible] सूर्यादिग्रहाणां पापपुण्यफलात्मक- [illegible]। [illegible] राजयोग [illegible], [illegible] योग [illegible] योग। [illegible]

[illegible]

[illegible]

द्वितीयः गजयोगः तत् फलञ्च–

गजकेसरीयोगः तत्फलम्–

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पञ्चमहापुरुष योगः–

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

भद्रयोगफलम्– यस्मिन् योगे [illegible] जातकः [illegible] धनवान् [illegible] [illegible]

हंसयोगफलम्– [illegible] [illegible]

मालव्ययोगफलम्– [illegible] [illegible]

शशयोगफलम्– [illegible] [illegible]

फलदीपिकाकारमतानुसारेण–

[illegible]

[illegible] ॥

सारावली [illegible]–

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

फलदीपिकामतानुसारेण–

[illegible]

[illegible]

मानसागरीमतानुसारेण–

[illegible] ।

[illegible] ॥

आमलायोगतत्फलञ्च–

[illegible] गुणैः [illegible] ।

[illegible] ।

[illegible] ॥

मालिकायोगतत्फलञ्च

[illegible] ।

[illegible] । [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] । [illegible]।

[illegible] [illegible] ।

[illegible] [illegible] । [illegible] ।

[illegible] [illegible] । [illegible] ।

[illegible] [illegible]। एवं [illegible] ।

[illegible] [illegible] ।

[illegible] [illegible] । [illegible] ।

[illegible] [illegible] । [illegible]

[illegible] [illegible] ।

[illegible]

[illegible] । [illegible] । [illegible] ।

[illegible] । [illegible] ।

[illegible] । [illegible] भवति

[illegible] – [illegible] ([illegible]) [illegible] ।

[illegible] – [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible]

[illegible] । [illegible] । [illegible] ।

[illegible] । [illegible] भवति ।

[illegible] । [illegible] ।

[illegible] । ( ) [illegible] ( ) [illegible] ( )

[illegible] (4) [illegible] (5) [illegible] (6) [illegible] (7) [illegible] (8) [illegible] (9) [illegible] (10) [illegible] (11) [illegible] (12) [illegible] (13) [illegible] (14) [illegible] (15) [illegible] (16) [illegible] (17) [illegible] (18) [illegible] (19) [illegible] (20) [illegible]।

[illegible]

1. गदायोगः– [illegible]

2. शकटयोगः– [illegible]

3. विहगयोगः– [illegible]

4. शृङ्गाटकयोगः– [illegible]

5. हलयोगः– [illegible]

वज्रादियोगः

6. वज्रयोगः– [illegible]

7. यवयोगः– [illegible]

8. कमलयोगः– [illegible]

9. वापीयोगः– [illegible]

यूपादि योगः

10. यूपयोगः– [illegible]

11. [illegible]

12. शक्तियोगः– [illegible]

13. दण्डयोगः– [illegible] भवति।

नौकादियोगाः

14. नौकायोगः [illegible]

15. कूटयोगः– [illegible]

16. छत्रयोगः– [illegible] अस्मिन् योगे [illegible]

17. चापयोगः– [illegible] भवति।

18. अर्धचन्द्रयोगः– [illegible]

[illegible]

19. चक्रयोगः– [illegible] चक्रवर्ती सम्राट् भवति।

20. समुद्रयोगः– [illegible]

संख्यायोगाः– गोलयोगः – [illegible] अस्मिन् योगे [illegible] भवति

युगयोगः– [illegible] भवति

शूलयोगः [illegible] भवति।

केदारयोगः [illegible]

पाशयोगः [illegible] भवति

[illegible]

[illegible]

अन्यराजयोगाः–

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

संदर्भग्रन्थाः–

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]
7. [illegible]
8. [illegible]
9. [illegible]
10. [illegible]

[illegible] वाक्यपदीय, ब्रह्मकाण्ड श्लोक-[illegible]

[illegible] वाक्यपदीय, ब्रह्मकाण्ड श्लोक-[illegible]

[illegible] वाक्यपदीय, ब्रह्मकाण्ड श्लोक-[illegible]

[illegible] वाक्यपदीय, ब्रह्मकाण्ड श्लोक-[illegible]

[illegible] वाक्यपदीय, ब्रह्मकाण्ड श्लोक-[illegible]

[illegible] [illegible] वाक्यपदीय, ब्रह्मकाण्ड श्लोक-[illegible]

[illegible] [illegible] श्लोक-[illegible]

[illegible] वाक्यपदीय, ब्रह्मकाण्ड श्लोक-171

[illegible] वाक्यपदीय, ब्रह्मकाण्ड श्लोक-[illegible]

[illegible] वाक्यपदीय, ब्रह्मकाण्ड श्लोक-[illegible]

[illegible] वाक्यपदीय, ब्रह्मकाण्ड श्लोक-[illegible]

[illegible] वाक्यपदीय, ब्रह्मकाण्ड श्लोक-[illegible]

[illegible] वाक्यपदीय, ब्रह्मकाण्ड श्लोक-[illegible]

[illegible] वाक्यपदीय, [illegible]

[illegible] वाक्यपदीय, [illegible]

[illegible] वाक्यपदीय, [illegible]

[illegible]

[illegible]

रसे सारश्चमत्कारः

डॉ. [illegible]शर्मा

[illegible] कश्चिदपि [illegible] रस एव काव्यस्यात्मा [illegible] आस्वाद्यत्वात् इति [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] न हि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्तते [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] काव्यात्मत्वम् (Soul of the poetry) [illegible] न (life of the poetry) [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आस्वादनत्वेन [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आस्वाद्य [illegible]

रत्नाश्रो [illegible] रसः।
सहृदं [illegible] [illegible] [illegible]॥

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आस्वाद [illegible] [illegible] आस्वादन [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible]। [illegible], अद्भ्यः पृथिवी पृथिव्या ओषधयः। ओषधीभ्योऽन्नम्। अन्नात् पुरुषः। [illegible] पुरुषोऽन्नरसमयः। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] लब्ध्वाऽऽनन्दी भवतीति। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भवति। [illegible] [illegible] आनन्दाद्ध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते। आनन्देन जातानि जीवन्ति। आनन्दं प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति।[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] यथा

> मत्तो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
>
> [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥
>
> [illegible] [illegible] [illegible] च [illegible] [illegible]।
>
> निर्याते [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]॥[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

> सम्यक् [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
>
> स तु [illegible]॥[illegible]

मोक्षस्य [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

एवं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]—

> पाठ्यं गेयं च [illegible] [illegible]।
>
> [illegible]॥
>
> रसैः [illegible]।
>
> [illegible] [illegible] गायताम्॥[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] शृङ्गारादिषु [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]— विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः।[illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] न भवति। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

प्रवर्तते।[5] यथा हि नानाव्यञ्जनौषधिद्रव्यसंयोगाद्रसनिष्पत्तिर्भवति यथाहि गुडादिभिर्द्रव्यैर्व्यञ्जनैरोषधिभिश्च षाडवादयो रसा निर्वर्त्यन्ते तथा नानाभावोपगता अपि स्थायिनो भावा रसत्वमाप्नुवन्ति। अत्राह रस इति कः पदार्थः। उच्यते आस्वाद्यत्वात्। कथमास्वाद्यते रसः? यथा हि नानाव्यञ्जनसंस्कृतमन्नं भुञ्जाना रसानास्वादयन्ति सुमनसः पुरुषा हर्षादींश्चाधिगच्छन्ति। तस्मान्नाट्यरसा इत्यभिव्याख्याताः।[6] [illegible] [illegible] [illegible]

दृष्टपूर्वा अपि ह्यर्थाः काव्ये रसपरिग्रहात्।
सर्वे नवा इवाभान्ति मधुमास इव द्रुमाः॥[7]

यथा [illegible] [illegible]

व्यङ्ग्यव्यञ्जकभावेऽस्मिन्विविधे सम्भवत्यपि।
रसादिमय एकस्मिन् कविः स्यादवधानवान्॥[8]

[illegible] [illegible] —

शैलैर्गलबन्धनैश्च [illegible]
रत्नौ फलान्यपि [illegible]।
नूनं विना [illegible]
काव्याधिरोहणमर्हति न प्रबन्धः॥[9]

[illegible] किन्तु [illegible] [illegible] [illegible] न स्यात् [illegible] [illegible]

साधुपाकेऽप्यनास्वाद्यं भोज्यं निर्लवणं यथा।
तथैव नीरसं काव्यमिति ब्रूमो रसान् इयम्॥[10]

अर्थात् [illegible] [illegible] —

यामिनीवेन्दुना मुक्ता नारीव रमणं विना।
लक्ष्मीरिव ऋते त्यागान्न वाणी भाति नीरसा॥[11]

[illegible]

[illegible] एवं रसात्मके ध्वनौ [illegible] [illegible] । [illegible]

[illegible] काव्यम् [illegible]—

एवं रसा सत्यता रसयन्ति पुनः
सम्यग् विभज्य [illegible]।
[illegible] = [illegible]–
काव्यं विधातुमलमत्र [illegible]॥[illegible]

[illegible]

अनुसरति [illegible]
[illegible]।
[illegible]
भवति विरसमेवानेन [illegible] काव्यम्॥[illegible]

अतः काव्ये [illegible]

[illegible] काव्य [illegible] एवं [illegible]
[illegible] एव [illegible]।
[illegible]॥[illegible]

[illegible]
आनन्दः [illegible] व्यक्तो स कथ्यते।
[illegible]॥[illegible]

[illegible]

रसादिभिर्नियोगोऽस्य काव्ये [illegible]।
[illegible]॥[illegible]

[illegible]

[illegible]॥[illegible]

[illegible]

अस्ति चेद्गुडसम्पत्तिः अलङ्कारैः वृथा इव।
नास्ति चेद्गुणसम्पत्तिः अलङ्कारैः वृथैव हि॥

[illegible] सकलप्रयोजनमौलिभूतं [illegible]

[illegible] Aesthetic experience, according to him, is intellectual joy accompanied passion or emotion that may be aroused by reading a strange adventure, a creation of free imagination or by presentation of it on the stage. [illegible]

[illegible]

यथा बहुद्रव्ययुतैर्व्यञ्जनैर्बहुभिर्युतम्।
आस्वादयन्ति भुञ्जाना भक्तं भक्तविदो जनाः॥
भावाभिनयसम्बद्धान् स्थायिभावांस्तथा बुधाः।
आस्वादयन्ति मनसा तस्मान्नाट्यरसाः स्मृताः॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अस्याय सार – [illegible]

[illegible]

[illegible]

अनुगाम्... [illegible]

– [illegible]

विमर्शः [illegible]

[illegible]

श्रीशंकुका... [illegible]

[illegible] न [illegible] न [illegible]।
[illegible]॥
[illegible]।
[illegible]॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अभिधा–लक्षणा–[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अस्यायं [illegible] लौकिक [illegible]

[illegible]

विभावाः — [illegible]

[illegible]

[illegible]

कारणान्यथ कार्याणि सहकारीणि यानि च।
रत्यादेः स्थायिनो लोके तानि चेन्नाट्यकाव्ययोः॥
विभावा अनुभावास्तत् कथ्यन्ते व्यभिचारिणः।
व्यक्तः स तैर्विभावाद्यैः स्थायी भावो रसः स्मृतः॥

[illegible]

स्थायिभावः [illegible]

[illegible] अविरुद्धा विरुद्धा वा यं तिरोधातुमक्षमाः।

आस्वादाङ्कुरकन्दोऽसौ भावः स्थायीति सम्मतः॥[illegible]

[illegible] स्थायिभावम्। [illegible] प्रधानः स्थायी नाट्यशास्त्रे

यथा नराणां नृपतिः शिष्याणां च यथा गुरुः।

एवं हि सर्वभावानां भावः स्थायी महानिह॥[illegible]

[illegible] कथ्यते –

[illegible]

न तिरोधीयते स्थायी तैरसौ पुष्यते परम्॥[illegible]

[illegible]

[illegible]

भावाः – [illegible]

[illegible] भावयन्तीति [illegible] इति।

विभावेनाहृतो योऽर्थो ह्यनुभावैस्तु गम्यते।

वागङ्गसत्त्वाभिनयैः स भाव इति संज्ञितः॥

वागङ्गमुखरागेण सत्त्वेनाभिनयेन च।

कवेरन्तर्गतं भावं भावयन् भाव उच्यते॥

नानाभिनयसम्बद्धान् भावयन्ति रसानिमान्।

यस्मात्तस्मादमी भावा विज्ञेया नाट्ययोक्तृभिः॥[illegible]

[illegible]

[illegible] अर्थात् [illegible]

[illegible]

विभावाः — [illegible] साहित्यदर्पणे

रत्याद्युद्बोधका लोके विभावाः काव्यनाट्ययोः।[illegible]

[illegible]

[illegible]

बहवोऽर्था विभाव्यन्ते वागङ्गाभिनयाश्रयाः।
अनेन यस्मात्तेनायं विभाव इति संज्ञितः॥[illegible]

अर्थात् [illegible]

[illegible] विभावयन्ति आविर्भावयन्ति [illegible] विभावाः।[illegible]

अयं विभावः द्विविधः [illegible]

आलम्बनोद्दीपनाख्यौ तस्य भेदावुभौ स्मृतौ।[illegible]

1. आलम्बनविभाव — [illegible] आलम्बनविभावः। यथोक्तम्

आलम्बनं नायकादिस्तमालम्ब्य रसोद्गमात्।[illegible]

अर्थात् [illegible] आलम्बनविभावः। [illegible] आलम्बनविभावाः। [illegible]

2. उद्दीपनविभाव — ये [illegible] उद्दीपनविभावाः कथ्यन्ते। यथोक्तम् —

उद्दीपनविभावास्ते रसमुद्दीपयन्ति ये। आलम्बनस्य चेष्टाद्या देशकालादयस्तथा॥

अर्थात् ये पदार्थाः [illegible]

अनुभावाः — [illegible] अनुभावयन्तीति अनुभावाः [illegible]

वागङ्गाभिनयेनेह यतस्त्वर्थोऽनुभाव्यते।
शाखाङ्गोपाङ्गसंयुक्तस्त्वनुभावस्ततः स्मृतः॥[illegible]

४. [illegible] लक्षणं यथा

उद्बुद्धं कारणैः स्वैः स्वैर्बहिर्भावं प्रकाशयन्।

लोके यः कार्यरूपः सोऽनुभावः काव्यनाट्ययोः॥'

यः खलु लोके [illegible] स्वैः स्वैरालम्बनोद्दीपनकारणै रामादेरन्तरुद्बुद्धं [illegible] कार्यमित्युच्यते, स काव्यनाट्ययोः पुनरनुभावः। [illegible] अनुभावयन्ति इति अनुभावाः।

[illegible] नाट्यदर्पणकारोऽपि अनुभावस्य लक्षणं [illegible]। यथा–

'अनु लिङ्गनिश्चयात् पश्चाद् [illegible] स्थायिव्यभिचारिणः [illegible]।'[12]

[illegible] अनुभाव [illegible] चतुर्विधः [illegible] 1. [illegible] 2. [illegible] 3. [illegible] 4. बुद्ध्यारम्भानुभावा।

1 [illegible]।

2 [illegible]।

3 [illegible]।

4 [illegible]।

[illegible] लक्षणं [illegible]।

सात्त्विका भावाः– [illegible] सात्त्विकभावाः। [illegible] कथनानाम [illegible]

विकाराः सत्त्वसम्भूताः सात्त्विकाः परिकीर्तिताः।'

[illegible]

[illegible] – [illegible]।

व्यभिचारिभावाः – [illegible]

[illegible]

[illegible]

विशेषादाभिमुख्येन चरणाद्व्यभिचारिणः।

स्थायिन्युन्मग्ननिर्मग्नास्त्रयस्त्रिंशच्च तद्भिदाः॥'

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] रसं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

पाश्चात्यमते भावस्वरूपविचारः– [illegible] Passion, Emotion, Taste, Sentiment इत्यादिभिः [illegible] [illegible] Passion [illegible] Sidney [illegible] [illegible] यथा– Sidney makes passion quality of virtue a necessary element in all forms of poetry [illegible]

[illegible] (Katharsis) [illegible] [illegible] यथा –

"The Separation of the soul from the body is what Plato calls katharsis or Purification. The philosophical enterprise is devoted to solving the problem of death, in knowing the self and in freeing the immortal soul from imprisonment in the body. The insight is clear that we experience in tragedy is a mimetic rehearsal of our death which the fates have already determined"[illegible].

[illegible]

[illegible] रसं विना न [illegible] रसं विना न [illegible]

रसं विना न [illegible]

सन्दर्भाः

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]
7. [illegible]
8. [illegible]
9. [illegible]

10. [illegible]

11. [illegible]

12. [illegible]

13. [illegible]

14. [illegible]

15. वही [illegible]

16. वही [illegible]

17. [illegible]

18. [illegible]

19. [illegible]

20. [illegible]

21. [illegible]

22. वही, [illegible]

23. [illegible]

24. [illegible]

25. [illegible]

26. [illegible]

27. वही [illegible]

28. [illegible]

29. वही [illegible]

30. वही [illegible]

31. [illegible]

32. [illegible]

33. [illegible]

34. Western Aesthetics, page [illegible]

35. [illegible]

36. [illegible]

37. [illegible]

38. [illegible]

39. [illegible]

40. [illegible]

41. [illegible]

42. [illegible]

43. [illegible]

44. [illegible]

45. [illegible]

46. वही [illegible]

47. [illegible]
48. [illegible]
49. [illegible]
50. [illegible]
51. [illegible]
52. [illegible]
53. The History of Literary Criticism [illegible]
54. Ibid., Page 40
[illegible]

सन्दर्भग्रन्थसूचिः

1. [illegible] 1983, [illegible]
2. [illegible] 2006, [illegible]
3. The History of Literary Criticism (H.L.C.) S.S. Shastry, Lakshmi Narayan Agrawal, Educational Publishers, Agra, First Edition, 1969
4. Kavyaprakash, Translated by Dr. Ganganath Jha, Bharatiya Vidya Prakashan, Delhi 1985.
5. [illegible] 2008, [illegible]
6. [illegible] 1997, [illegible]
7. [illegible] 2011 [illegible]
8. [illegible] 2008, [illegible]
9. [illegible] 201[illegible] [illegible]
10. Natyasastra in the Modern World, Radhavallabh Tripathi, Rashtriya Sanskrit Sansthan, New Delhi, 2014.
11. [illegible] 1977 [illegible]
12. [illegible] 1990 [illegible]

[illegible]
[illegible]

तत्त्वार्थश्लोकवार्तिकवर्णितद्रव्यनिक्षेपस्य स्वरूपं तस्य च समीक्षा

डॉ. राकेशकुमारजैन

[illegible]

[illegible]

[illegible]

किं नाम निक्षेपः

[illegible]

[illegible]

* [illegible] 'निक्षेप' [illegible]
* [illegible]
* [illegible] 'निक्षेप' [illegible]
* [illegible]

निक्षेपविधेः प्रयोजनम्

[illegible]

* [illegible]
* [illegible]
* [illegible]
* [illegible]

निक्षेपस्य भेदः

[illegible]

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः[1]

[illegible]

[illegible]

द्रव्यनिक्षेपस्य स्वरूपम् –

[illegible]

[illegible]

[illegible]

यत्स्यतोऽभिमुखं यत् भविष्यत्पर्याय याति।
तद्द्रव्यं द्विविधं ज्ञेयमागमेतरभेदतः॥

[illegible]

तत्र निक्षेपस्य लक्षणं च भेदाः

[illegible] द्विविधं [illegible] – [illegible]

1} आगमद्रव्यनिक्षेपः –

आत्मा तत्प्राभृतज्ञायी यो नामानुपयुक्तधीः।
सोऽऽगमः समाम्नातः स्याद्द्रव्यं लक्षणान्वयात्॥

[illegible]

[illegible]

[illegible] 'द्रव्य' [illegible]

[illegible]

(2) नोआगमद्रव्यजीवः

[illegible] (1) ज्ञायकशरीरम्, (2) भाविनोआगमद्रव्यजीवः, (3) तद्व्यतिरिक्तनोआगमद्रव्यजीवः

(i) ज्ञायकशरीरम् –

[illegible]

(ii) भाविनोआगमद्रव्यजीवः

[illegible]

(iii) तद्व्यतिरिक्तनोआगमद्रव्यजीवः

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

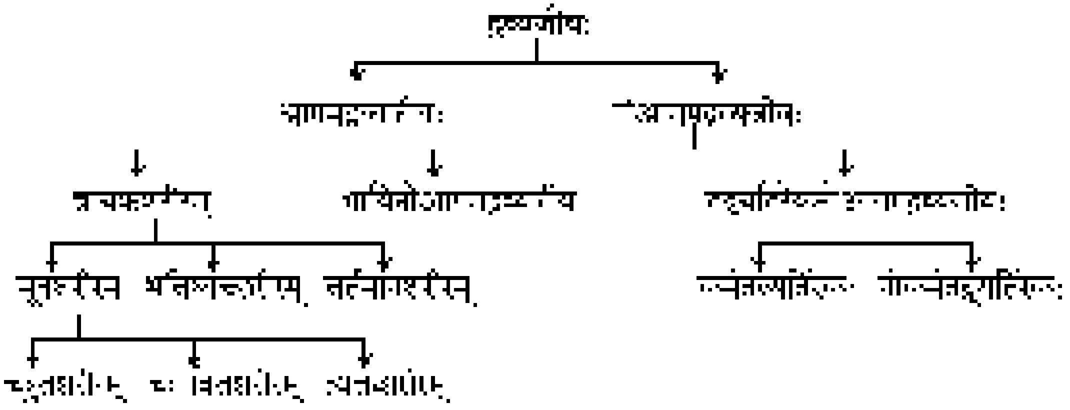

[illegible] समीक्षा—

[illegible]

(१) [illegible]

[illegible]

(२) [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

(3) जिज्ञासा – [illegible]

व्याख्यानम् – [illegible]

(4) [illegible]

[illegible]

(5) जिज्ञासा – एवं तर्हि [illegible]?

व्याख्यानम् – न [illegible]

(6) जिज्ञासा – [illegible]?

व्याख्यानम् – न [illegible]

(7) जिज्ञासा – [illegible] इति चेत्?

[illegible]

[illegible] (i) [illegible] (ii) [illegible]। [illegible] यथा – 'कुन्दकुन्दाचार्यं सिद्धम्' इति कथनं [illegible] कुन्दकुन्दाचार्यस्य न [illegible] 'सिद्ध' इति कथनं गौण

दृश्यनिर्माणस्य कार्यम् –

(i) [illegible]

(ii) [illegible]

[illegible]

अहं [illegible] करोमि

अथ [illegible]

– [illegible]।

– [illegible]।

उपसंहारः–

[illegible]

सन्दर्भसूची।

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]
7. [illegible]
8. [illegible]
9. [illegible]
10. [illegible]
11. [illegible]
12. [illegible]
13. [illegible]
14. [illegible]
15. [illegible]
16. [illegible]
17. [illegible]
18. [illegible]
19. [illegible]
20. [illegible]

[illegible],
[illegible],
[illegible] ([illegible])

वैश्विकपरिप्रेक्ष्ये अध्यापकशिक्षा नैतिकविकासश्च

डॉ. दिवाकरमिश्र

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] पाश्चात्यानां [illegible] नहि, [illegible]
[illegible] नैतिकतायाः [illegible] नैतिक [illegible] अध्यापक [illegible] पुनः [illegible] आवश्यकी [illegible]। यतः, [illegible] शास्त्राणि [illegible] कर्तव्यम् [illegible] नैतिक [illegible]

एतत् कर्तव्यम् एतत् न कर्तव्यम् इत्यात्मको यो धर्मः सा नीतिः इति [illegible]

[illegible] निश्चिता नीतिर्न भवति। तेन नियमाः [illegible] सर्वकालिकाः [illegible] प्रजाः यतः, [illegible] आनयनं कुर्युः। [illegible] नैतिक [illegible]

वस्तुतः [illegible] शिक्षणम्, अशिक्षणम् च [illegible]। [illegible] शिक्षक–अभिभावक अध्यापक–[illegible]

वर्तमाने [illegible] नैतिकतायाः [illegible]

अतः [illegible]

[illegible]

[illegible]

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]

[illegible] 'युनेस्को' [illegible] 1994 [illegible] जापानदेशे [illegible] 'अध्यापकशिक्षासम्मेलने' [illegible] प्रशिक्षणं [illegible]

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]
7. [illegible]
8. [illegible]
9. [illegible]

वस्तुतः 'युनेस्को' [illegible]

[illegible] नैतिकशिक्षायाः [illegible] [illegible]

वस्तुतः अस्माकं [illegible] शिक्षणव्यवस्था [illegible] नैतिकमूल्यानां [illegible] [illegible]

सन्दर्भाः –

1. डॉ. भटनागर [illegible], अध्यापक शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. डॉ. [illegible] उभरते भारत में प्रगतिशील अध्यापक शिक्षा, आगरा
3. [illegible] एल.एन., सिंह के.के., गोस्वामी आर.के., अध्यापक शिक्षा, [illegible]
4. [illegible] शिक्षण कला, [illegible] पब्लिकेशन्स, दिल्ली
5. [illegible]
6. [illegible]
7. [illegible]
8. [illegible] शिक्षा [illegible], नई दिल्ली
9. डॉ. [illegible]
10. [illegible], दिल्ली
11. भर्तृहरि, नीतिशतकम्
12. [illegible] आचार्य, [illegible], चौखम्बा [illegible] भवन।
13. डॉ. [illegible] समाज मनोविज्ञान, वि.पु.म., आगरा
14. डॉ. [illegible] अध्यापक शिक्षा, वि.पु.म., आगरा
15. डॉ. [illegible] शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, वि.पु.म., आगरा
16. एन.सी.ई.आर.टी., [illegible] अध्यापक शिक्षा की पाठ्यचर्या, नई दिल्ली

[illegible]
[illegible]

Cultural and Literary study of Āmra as Depicted in Sanskrit Literature

Dr. Dhananjay Vasudev Dwivedi

ABSTRACT

[illegible]

KEY WORDS: [illegible]

INTRODUCTION

Plants have played a [illegible] role in [illegible] human civilization. [illegible] Āmra is very popular tree of India. Native of India it is huge deciduous tree with spreading branches. [illegible] The fruits of this tree are [illegible] the bunch of flowers of this tree, which are better known as *Mañjarī* are used for religious purposes. Poets [illegible] *Madana*. The leaves of this tree are known for their [illegible] properties and are used for [illegible]. They are used for religious and [illegible] purposes around the year.

MENTION OF ĀMRA IN VARIOUS TEXTS

[illegible] was regarded as one of the [illegible][7]

ORIGIN OF ĀMRA

[illegible]

---

[1] [illegible]
[2] [illegible]
[3] [illegible]
[4] [illegible]
[5] [illegible]
[6] [illegible]
[7] [illegible]

[illegible] with this tree reveals Lord Śiva [illegible]. That land is known as [illegible] spread in India.[5] The word [illegible] means [illegible]. This [illegible] an interesting story [illegible] forms. According to [illegible] the origin of the [illegible] tree is deeper in mythology. The daughter of Sūrya, the Sun God was harassed by an enchantress. To escape her, the girl threw herself in [illegible] and turned into lotus. [illegible] saw the flower and wished to possess [illegible]. But before he could take possession, the enchantress burnt it, and from the ashes of the flower arose the mango tree.[6] *Skanda Purāṇa* mentions the churning of Milk Ocean by gods and demons. Various plants rose up from the churning including [illegible] and [illegible].[7]

RELIGIOUS SIGNIFICANCE OF ĀMRA

The [illegible] is held sacred by the Hindus. [illegible] to be a transformation of Lord [illegible]. It provides one of the [illegible]. The leaves are used in worship of Śiva on the *Śivarātri*. The flower of the *Āmra* is considered to be one of the five arrows of *Kāmadeva*. The flowers of [illegible] dedicated to the Moon. There is a belief that Śiva married *Pārvatī* under this tree. [illegible] are found in [illegible] of [illegible]. In some [illegible] legend it is said that the tree was brought by [illegible] from Lanka to India.[8] The priest [illegible] mantras and sprinkle holy water on people present at the function with a small sheet of leaves. The leaves are tied on a string and hung in front of houses and temples in social and religious ceremonies.[9] [illegible] with the leaves [illegible] in ceremonies [illegible] with the leaves

[illegible][10]

[illegible] Purāṇa discusses the vow named [illegible]. This *vrata* has to be started on the first day of the bright fortnight of the month of *Mārgaśīrṣa*. [illegible] [illegible] with [illegible].[11] Performing this *vrata* [illegible] the king [illegible] prayed to [illegible]. He said "Bless me with a son, O Lord, who will be long lived, very famous, highly virtuous, proficient in Vedas and [illegible]."

पुत्रं मे देहि [illegible] ।।[12]

After [illegible] by the [illegible] under a big *Āmra* tree, the [illegible] became very [illegible].

[illegible] ।।[13]

The *Bhagavān* came there in form of a [illegible] *Brāhmaṇa*. As soon as he came, the big *Āmra* tree also became small one. Seeing that great wonder, the [illegible] king began to think about how the big tree became small. Then he was able to understand that arrival of the Brāhmaṇa was the cause and [illegible] showed that the visitor was the *Bhagavān* himself. Thereafter the *Bhagavān* said the

[1] [illegible]
[2] [illegible]
[3] [illegible]
[4] [illegible]
[5] [illegible]
[6] [illegible]
[7] [illegible]
[8] [illegible]
[9] [illegible]
[10] [illegible]

[illegible] has been [illegible] the king [illegible] Matsya [illegible]. After giving the [illegible], the Manu [illegible] said "Since [illegible] [illegible] this expansive form [illegible] become small, [illegible] Kubjāmraka?"

[illegible] कुब्जतामागतः [illegible] कुब्जाम्रं भविष्यति ॥ [illegible]

This tīrtha related to [illegible] is of great religious importance. Those [illegible] gave up death in this tīrtha are bound to attain [illegible].

When asked about the [illegible] and Kubjāmraka by Earth, [illegible] said [illegible] all [illegible] the welfare of the world [illegible] Kubjāmraka [illegible] holy [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

Talking about the history of Kubjāmraka, Bhagavān said-Once a sage named [illegible] performing tapasyā. I was very much pleased by his supreme devotion [illegible] Raibhya and I was well [illegible] by him. Then [illegible] that great yogi performing penances, the foot of [illegible] tree on the bank of Ganges, [illegible] was pointed out to me by someone, but when I came near [illegible] became dwarf. This made this place to be called Kubjāmraka. [illegible] Bhagavān said-[illegible] to my world-

[illegible] कुब्जाम्रके [illegible] मम लोकाय केवलम् ॥ [illegible]

Describing about the [illegible] tīrtha, [illegible] said - In this holy and pleasant [illegible] there [illegible] with [illegible] which [illegible] -

तीर्थे तु [illegible] ॥ [illegible]

In the [illegible] of Māgha, Mārgaśīrṣa and Vaiśākha, [illegible] one who ends one's life here [illegible] heaven [illegible]

[illegible] ॥

[illegible] मम लोके [illegible] ॥ [illegible]

There is yet another tīrtha called [illegible]. By bathing in this, one goes to divine garden Nandana and enjoys there with [illegible] for [illegible] thousand [illegible]. At the end of this period of [illegible] years, he is born in a high family with abundant wealth and [illegible]. There is a [illegible] tīrtha in Kubjāmraka [illegible]. Bathing [illegible] one gets here the same merit as performing Aśvamedha sacrifice. There need be no doubt in this. If one happens to die there, he [illegible] becomes [illegible]. And after enjoying the merit of performing ten Aśvamedha sacrifices one becomes [illegible] and [illegible] place in Bhagavān's

---

[illegible] Ibid. [illegible]

[illegible] Ibid. [illegible]

[illegible] Ibid. [illegible]

[illegible] Ibid. [illegible]

[illegible] Ibid. [illegible]

[illegible] Ibid. [illegible]

[illegible] Ibid. [illegible]

Ibid. [illegible]

[illegible] Ibid. [illegible]

abode.[1] The man who bathes in [illegible] in [illegible] attains the merit equivalent to that of seven [illegible] sacrifices.[2] One who resides in [illegible] in [illegible] performing daily ablutions attains the merit of [illegible] sacrifice.[3] One who resides in this [illegible] and performs worship for fifteen days, he will not have births and rebirths in this world.[4]

During initiation [illegible] several processes are to be followed. [illegible] ten pots of [illegible] mixed with [illegible] should be placed on each side.

[illegible][5]

One who plants [illegible] [illegible]

[illegible][6]

[illegible][7]

There is an interesting story narrated in [illegible] where [illegible] has been described taking [illegible] to the [illegible] tree.[8] Describing the greatness of [illegible], the [illegible] says that there were many [illegible] all round [illegible] like [illegible] and glittering [illegible] among them.[9]

By [illegible] one would attain heaven.[10] [illegible] can be used in worship of the deities.[11] [illegible] because [illegible] Lord Buddha was [illegible]. The [illegible] therefore consider it as a holy [illegible].[12] [illegible] enlightenment [illegible] is also [illegible] with [illegible] accompanied by [illegible] as a symbol of [illegible].[13]

RELIGIOUS SIGNIFICANCE OF [illegible]

While performing rituals of [illegible], [illegible] of various [illegible] useful to put them [illegible] [illegible] [illegible]. The [illegible] of these are to be kept should be placed in east direction.[14] [illegible] has discussed the process of installation of [illegible] in a temple. The installation of such an emblem [illegible] in this life and salvation [illegible].[15] There is [illegible] of [illegible] this process [illegible] would

[1] Ibid. 17/5/47-4
[2] Ibid. 13/5/127-75
[3] Ibid. 17/5/74
[4] Ibid. 17/5/80
[5] Ibid. 17/5/75
[6] [illegible] 6
[7] Ibid. 123
[8] [illegible] 17/7/150-4
[9] Ibid. 2/1/20/14-22
[10] Ibid. 5/3/20/128-42
[11] [illegible]
[12] [illegible] 194
[13] Ibid. p. 56
[14] [illegible]
[15] Ibid. 3/41

measure eighteen [illegible] in length, half as much in breadth, and [illegible] would measure [illegible] in height, and should be hung round with festoons of [illegible] leaves.

[illegible] [1]

The [illegible] of [illegible] such as [illegible] should be collected [illegible] of the season in order to [illegible] phallic emblem.

[illegible] [2]

[illegible] has been described in [illegible] in *Agni Purāṇa*. There is a very interesting story in this regard in this Purāṇa. According to it once upon a time a holy sage holding a pitcher in his one hand and [illegible] of the same plant in the other used to sprinkle water over the roots of *Āmra* tree, which grew on the bank of sacred pool [illegible]. Thereby he [illegible] [illegible] of *Āmra* tree. This [illegible] proved [illegible] way.

[illegible]

[illegible] [3]

The [illegible] mentions the similar story. According to it there is a [illegible] tree in [illegible] in the [illegible] of [illegible]. He who waters [illegible] will [illegible].[4] Importance of *Āmra* in *Śrāddha* [illegible] has also being discussed in [illegible]. It is said that by performing *Śrāddha* [illegible] the [illegible] shall [illegible] the world of [illegible]. The *Āmra* trees [illegible] by [illegible]. Merely by sprinkling them with water [illegible] will [illegible]. [illegible] that [illegible] grown out of [illegible] and [illegible] all the *Devas* and that is the embodiment of [illegible] for the sake of [illegible]. A man who performs [illegible] never [illegible].[5] During the process of constructing a divine [illegible], the [illegible] should decorate [illegible] with [illegible] of [illegible] leaves.

[illegible] [6]

[illegible] of *Āmra* [illegible] should be [illegible] pairs. One who performs [illegible] of [illegible] becomes [illegible] in this world and [illegible] to heaven in his mortal frame.[7] [illegible] should be performed with the object subduing all diseases and [illegible] in the course [illegible] leaves of [illegible], *Bilva*, [illegible] and *Āmra* dipped in clarified butter.[8] While [illegible] by the king, [illegible] should be painted by [illegible].[9] The tree is considered to be a [illegible] of prosperity and auspiciousness. Hence the leaves of *Āmra* are [illegible] as a

---

[1] [illegible]
[2] [illegible]
[3] [illegible]
[4] [illegible]
[5] [illegible]
[6] [illegible]
[7] [illegible]
[8] [illegible]
[9] [illegible]

[illegible] in the door of the house on almost all religious and social ceremonies. The Śamī [illegible] placed on [illegible] and is used as [illegible] for [illegible]. [illegible] the plant [illegible]. There is no religious occasion or festivity when Śamī leaf is not used.[3] Describing [illegible] says that there are twelve Śamīs [illegible] Lord. These [illegible] should be worshipped on full moon day in [illegible] month starting from Mārgaśīrṣa. Certain [illegible] should be offered to this [illegible] Śamī is [illegible] should be offered in [illegible]. In order to get full benefit one should [illegible]. The devotee should make gold images of twelve Śamīs [illegible] in accordance with his capacity. These Śamīs should be placed in twelve pots. These pots should be covered with [illegible] leaves separately and draped with white cloths. They must contain perfumed water with tender leaves of Śamī put in them.[4] During [illegible] festival, after worshipping [illegible] the [illegible] should place four pots in front of the Lord. They should be filled with water and covered with [illegible]. Flower garlands should be put upon them. The tender leaves of Śamī should be also put upon them. They should be wrapped in white cloth.[14]

Śamī is pure and [illegible] of [illegible]. Oblations of Śamī fruits increase the [illegible] "[illegible]".[15]

During [illegible] month, flowers of Śamī should be offered to [illegible].[16]

[illegible] and M. [illegible] in their book entitled "Sacred Plants of India" have described this aspect of Śamī which is worthy to be quoted in [illegible] — "The Śamī is given as Prasād to devotees, to bring them prosperity and wealth. Small branches and leaves of Śamī tree are used in [illegible]. The [illegible] may [illegible] only that tree which [illegible]. Some people use its small twigs as toothbrush. But it is strictly prohibited to use it for this purpose on Sundays and Tuesdays. In the sacred thread ceremony, the Śamī is used in various capacities as a [illegible] seat to sit on and as a staff on [illegible]. While performing the marriage rites, the bridegroom sits on a seat of Śamī wood. The funeral pyre of [illegible] is made of Śamī wood, which is [illegible]. Śamī is [illegible] plant used as [illegible], especially on [illegible] day of [illegible] in the month of [illegible]. It is sinful to remove the leaves from the tree at night. [illegible] is never cut down for it may bring disaster to the person who does so. Its fruit is symbolic of male progeny. [illegible] neither he nor his wife may taste the fruits until [illegible] [illegible] In the Sthala Purāṇa of [illegible] temple at [illegible], the sacred tree is Śamī, which has four branches of four different species. Each branch bears a fruit of a different [illegible]. The [illegible] says [illegible] of the fruits [illegible] good, but [illegible] many are eaten, few are [illegible]. They are usually [illegible] and ripened [illegible]. [illegible] preserved in syrup. [illegible] the Śamī is the best [illegible] of [illegible]. [illegible]

[14] [illegible]
[15] [illegible]
[16] [illegible]
[illegible]

the *Rasāl* mango. [illegible] It is eaten [illegible] hole in it, and suck out the juice; the other is just cut it [illegible] the *Rasāl* [illegible]. Akbar, the Mughal emperor planted a garden of [illegible] *Āmra* trees near [illegible]. According to [illegible] folklore, the *Āmra* tree was brought by *Hanumān* to India. The *Āmra* tree appears in the murals of several Hindu festivities. Hindu brides dressed in yellow, worship *Pārvatī* and *Śiva* so they will keep their wedding [illegible] happy marital life [illegible] *Āmra* tree painted on a wall, between the Sun and the crescent Moon. *Āmra* leaves are used to make garlands to decorate [illegible] and [illegible] occasions symbolising [illegible] prosperity [illegible] from the doors of temples and houses. Twigs are used as toothbrushes and leaves as plates in several ceremonies, such as [illegible]. Twigs are also used to light the sacred fire [illegible] at the [illegible] to appease the [illegible]. *Āmra* leaves are included in the mixture of [illegible] is used to purify pregnant Hindu women. The [illegible] is surrounded by *Āmra* leaves [illegible]. According to [illegible] women who embrace the [illegible] embrace the *Āmra* tree [illegible] before their marriage. In tribal areas, the bride and bridegroom walk several times around the *Āmra* tree before the actual marriage ceremony takes place. The groom smears the *Āmra* trunk with vermilion and embraces it. The bride does the same [illegible]. Tribal [illegible] the *Āmra* [illegible].

ĀMRA DEPICTED IN SCULPTURES

Āmra is depicted in various *Buddhist* and *Jain* sculptures such as [illegible] on the [illegible] standing [illegible] *Āmra* [illegible] of [illegible] and [illegible] sculptures are depicted bearing *Āmra* branch, symbolising the [illegible] of the fruit and the woman. The *Āmra* tree frequently [illegible] the reliefs of [illegible]. [illegible] the *Āmra* tree and its fruits are carved on [illegible] *Śiva* and [illegible]. The [illegible] are flanked by [illegible] and [illegible] hold up branches of [illegible] fruit.[31]

ĀMRA AND *VĀSTU*

According to *Agni Purāṇa*, *Āmra* tree should be planted on the south direction of the dwelling of man.[32] [illegible] mentions that [illegible] of all trees. *Āmra* is considered to be [illegible] for all purposes. *Āmra* tree on the east side of the house is considered [illegible] wealth.

सर्वत्र [illegible] मनोहरः। रसालवृक्षः [illegible]॥

[illegible] is of the view that [illegible] *Āmra* planted in any direction is considered to be fruitful. However it is not recommended for [illegible] purposes.[33]

Āmra plant was planted in the premises of house.[34]

ĀMRA AND ASTROLOGY & TANTRA

The person who does [illegible] by putting [illegible] of *Āmra* [illegible] grass [illegible] bath with the [illegible] from troubles [illegible] planets. [illegible] taken [illegible] and peace [illegible] for the health, wealth, peace and prosperity [illegible] person [illegible]

[30] [illegible] 196-202
[31] [illegible]
[32] [illegible]
[33] [illegible]
[34] [illegible]

[illegible] his palm [illegible] keeps his palm on any painful part of his body [illegible] the pain goes [illegible]. This [illegible] should only be performed on [illegible] [illegible] who keeps [illegible] of [illegible] *[illegible] Phālgunī* constellation with him in his house, he gets a very favourable [illegible] of his [illegible]. The [illegible] in *[illegible]* kept [illegible] [illegible] him. [illegible] fruits of [illegible] further [illegible] receive invaluable blessings of Almighty. This tree is [illegible].[21] Astrological science has discussed significance of various *Nakṣatras* [illegible] to various [illegible] and other heavenly bodies. According to [illegible] the [illegible] of *Pūrva Phālgunī* [illegible].[22]

[illegible] of [illegible] is [illegible] found [illegible].[23] [illegible] foretelling of great danger to the [illegible].[24]

TREES IN SANSKRIT KAVYAS

VALMIKI RAMAYANA

The *Vālmīki Rāmāyaṇa* is read all over India with great reverence and love as it contains the most authentic story of Lord *Śrī Rāma*, one of the most popular *Avatāras* who lived amongst us thousands years ago [illegible] has left an indelible impression on our life, which is as fresh today as it was during the time of *Vālmīki*, a contemporary of *Śrī Rāma*. [illegible] the [illegible] character and excels all in the most appealing [illegible] finds mention in *Rāmāyaṇa*.

After *Śrī Rāma* along with his consort *Sītā* and with his brother *Lakṣmaṇa* [illegible] the celebrated Sage *Bharadvāja* [illegible] he was in the first phase of exile, the Sage *Bharadvāja* [illegible] proceed towards *Citrakūṭa* Forest, which was rich in [illegible] and fruits.[25] The beautiful *Citrakūṭa* Mountain was enriched with [illegible] of plants and trees [illegible] among them.[26]

Pañcavaṭī is yet another place which finds description in *Rāmāyaṇa*. When *Rāma* along with *Sītā* and *Lakṣmaṇa* reached there, he asked his brother to look for a site [illegible] enriched with [illegible] flowers etc.[27] The site which was selected by [illegible] full of numerous trees [illegible] there.[28]

Showing the way to *Ṛṣyamūka*, *Kabandha* [illegible] path which [illegible] with [illegible] number of trees. The [illegible] "[illegible]".[29]

When *Śrī Rāma* approached the *Pampā* Lake the sight of the lovely surrounding intensified his pangs of separation from *Sītā*. Full in mind of *Sītā*, he [illegible] The flowers of [illegible] were [illegible] during Spring season.[30] While searching *Sītā* [illegible] *Rāvaṇa* [illegible] *Aśoka* Grove, which was [illegible] with trees [illegible] of [illegible]

21 [illegible]
22 [illegible]
23 [illegible]
24 [illegible]
25 *Vālmīki Rāmāyaṇa* [illegible]
26 Ibid. [illegible]
27 Ibid. [illegible]
28 Ibid. [illegible]
29 Ibid. [illegible]
30 Ibid. [illegible]

[illegible] praise. The Aśoka's fragrant [illegible] [illegible]. The Aśoka wood was used to make weapons [illegible] battle with Rāvaṇa [illegible] as well as [illegible] in Bhāgavata [illegible] other tree [illegible] various species in the course of combat.

[illegible]

Thus [illegible] Aśoka [illegible] blossoms [illegible] spring season in Aśoka Grove [illegible]. This [illegible] in the garden of Rāvaṇa's palace.

[illegible]

[illegible] has been composed by Mahākavi Kālidāsa. There is mention of Aśoka tree in [illegible]. Aśoka tree is growing on [illegible] Mountain [illegible] plains [illegible] its top, the mountain [illegible] covered with forest [illegible] trees [illegible] ripe fruits [illegible] trees [illegible] in the middle and white on the rest of its surface [illegible] of being gazed at by the [illegible].

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] is a lyrical poem of more than [illegible] verses [illegible] ascribed to Kālidāsa, descriptive of the six seasons of the year. Aśoka has been found [illegible] in [illegible] specially where the beauty and effect of spring season has been depicted. The descriptions are quite [illegible]. Here are some stanzas, wherein Aśoka has been mentioned.

With the young Aśoka shoots for his sharp arrows and with row of bees forming his bow string, the spring season arrives like a mighty warrior. O darling, in order to pierce the hearts of [illegible].

[illegible]

This spring season [illegible] the waters of ponds, [illegible] jewelled [illegible] moon [illegible] women and Aśoka trees abounding in flowers.

[illegible]

The [illegible] mango juice kisses his mate with passion [illegible] humming bee on the lotus [illegible] his mate.

[illegible]

पुंस्कोकिलश्चूतरसासवेन मत्तः प्रियां चुम्बति रागहृष्टः। गुञ्जद्द्विरेफोऽप्ययमम्बुजस्थः प्रियं प्रियायाः प्रकरोति चाटु॥ [illegible]

The mango trees bent with the bunches of reddish leaves and looking beautiful with their branches full of flowers and being gently swayed by the breeze, produce impatience in the hearts of women.

ताम्रप्रवालस्तबकावनम्राश्चूतद्रुमाः पुष्पितचारुशाखाः। कुर्वन्ति कामं पवनावधूताः पर्युत्सुकं मानसमङ्गनानाम्॥ [illegible]

The pretty trunks of the [illegible] trees whose freshly blossomed [illegible] surrounded by the intoxicated bees, whose leaf-sprouts are swayed by the gentle breeze, produce [illegible] excitement in the minds of young lovers.

मत्तद्विरेफपरिचुम्बितचारुपुष्पा मन्दानिलाकुलितनम्रमृदुप्रवालाः।

कुर्वन्ति कामिमनसां सहसोत्सुकत्वं चूताभिरामकलिकाः समवेक्ष्यमाणाः॥ [illegible]

Shaking the blossomed branches of the mango trees, spreading in all directions the notes of the cuckoo [illegible] the Spring breeze, charming by the cessation of dew, [illegible] distracting the minds of youthful persons.

[illegible]

[illegible]

The traveller whose mind is [illegible] distressed [illegible] from his wife, on beholding the blossom-laden [illegible] trees, closes his eyes, weeps, sobs and [illegible] covering his nose by his hand.

[illegible]

[illegible]

The charming Spring season [illegible] with sharp arrows in the form of [illegible] in order to [illegible] by means of the cries of cuckoo birds and [illegible] the blossomed [illegible] as well as [illegible].

[illegible]

[illegible]

May that bodiless one, the conqueror of the world, accompanied by the Spring season ever grant you happiness, he whose sharp shafts are the beautiful mango blossoms, whose mighty bow is the lovely [illegible], the string of which [illegible] is formed by the rows of bees, whose [illegible] umbrella is the Moon, whose lordly elephant is the breeze from the Malaya mountain and whose bards are the cuckoo birds.

[illegible] 6/14
[illegible] 6/15
[illegible] 6/17
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

The [illegible] in [illegible] on his way [illegible] which when shaken by the gentle breeze [illegible] showers of blossoms [illegible] [illegible] he is greeted by [illegible]

[illegible]

[illegible]

The hearts of [illegible] ladies [illegible] [illegible] pleasant to the ears [illegible]

[illegible]

[illegible]

RAGHUVAṂŚA

Raghuvaṃśa in 19 cantos narrates the history of the race of *Raghu* and [illegible] cantos [illegible] 15, the story of *Rāma's* life is recounted [illegible] follows an account of the successors of *Rāma* until *Agnivarṇa*. The last canto presents to us the [illegible] of his [illegible]

During the *svayaṃvara* ceremony of *Indumatī* [illegible] found *Aja* faultless in all his limbs, the maiden stopped from going to another prince; a swarm of bees would not pass on to another tree, when it has once found the mango in full flower.

तं प्राप्य सर्वावयवानवद्यं व्यावर्ततान्योपगमात् कुमारी। न हि प्रफुल्लं सहकारमेत्य वृक्षान्तरं काङ्क्षति षट्पदाली।।[illegible]

It is an amazing poetic expression. As *Aja* was most handsome and worth to be king, hence the Princess *Indumatī* dropped the idea of finding any other prince. *Aja* is considered to be king of all kings. This is why the row of bees [illegible] to shift to any other tree after reaching to fragrant mango tree.

Clasping the bride's (*Indumatī's*) hand in his, the prince *Aja* gained greater lustre, as [illegible] with [illegible] of the *Aśoka* plant [illegible]

हस्तेन हस्तं परिगृह्य वध्वाः स राजसूनुः सुतरां चकासे। अनन्तराशोकलताप्रवालं प्राप्येव चूतः प्रतिपल्लवेन।।[illegible]

Here *Aja* is compared to [illegible] and *Indumatī* to [illegible], hence it is an example of simile, for which *Kālidāsa* is well known.

When suddenly *Indumatī* breathed her last, *Aja* [illegible] He says [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

The [illegible] tree, full of blossoms [illegible] were shaken by the Malaya breeze, seemed [illegible] preparing [illegible] those who had [illegible] and hatred.

[illegible]

While returning from Lankā after conquering Rāvaṇa [illegible] air route, Rāma [illegible] Pañcavaṭī [illegible] lived during exile period. Seeing the natural beauty of Pañcavaṭī, [illegible] Rāma says: This Pañcavaṭī [illegible] the black antelopes have raised their heads [illegible]

[illegible]

The time of the [illegible] together the [illegible] of [illegible] fresh [illegible] flowers [illegible]

[illegible]

Kāmadeva [illegible] brought [illegible] by the southern breeze [illegible] and not suffer [illegible] conciliated him [illegible]

[illegible]

The [illegible] season [illegible] of fresh leaves [illegible] being [illegible] the glances of the [illegible]

When [illegible] king [illegible] which was [illegible] with [illegible] though in his [illegible] which was [illegible] by the passing away of spring, was [illegible]

[illegible]

KUMĀRASAMBHAVA

Kumārasambhava, a poem in 17 cantos, describes the birth of Kumāra, the War God. As [illegible] history, the poem narrates the supplication of Gods to Lord Śiva for the creation of a [illegible] destroying their enemy Tāraka [illegible] Then [illegible] as daughter of Himavān and his marriage with Śiva. With the [illegible] of Śiva and [illegible] canto closes and the remaining cantos describe the story of birth of Kumāra and destruction of Tāraka.

[illegible]

The [illegible] of [illegible] though [illegible] was never [illegible] with [illegible] this [illegible], the [illegible] indeed, [illegible] more [illegible] to [illegible] blossoms, though the vernal season blooms the countless flowers.

[illegible]

Then that Love [illegible] God, having his bow, [illegible] were as beautiful as the [illegible] graceful women, [illegible] bearing [illegible] the bracelets of *Rati*, and having [illegible] young sprouts [illegible] depends on the hands of his friend *Madhu* (vernal season), approached with folded hands [illegible] hundred [illegible].

[illegible]

[illegible]

Here the [illegible] of *Rati's* bracelets over the [illegible] of *Madhu* indicates their [illegible].

Madhu (the vernal season), [illegible] the [illegible] of young [illegible] with [illegible] leaves [illegible] beautiful feathers, [illegible] of the [illegible] and Cupid [illegible] the [illegible].

[illegible]

The Vernal Beauty, [illegible] displayed [illegible] *Tilaka* [illegible] flower [illegible] with black pigment [illegible] the shape [illegible] lip in the form of young [illegible] the light of morning Sun.

[illegible]

The [illegible] of [illegible] was [illegible] by the male Cuckoo when [illegible] had been [illegible] by the [illegible] became the [illegible] of [illegible] pride of high minded dames.

[illegible]

It is a general [illegible] that the voice of cuckoo becomes melodious after [illegible] sprouts of mango tree. [illegible] that [illegible] has yet blossomed. Hence [illegible] *Kalidasa* [illegible] by which [illegible] and the sprouting of which [illegible] proclaimed by the [illegible] of the male [illegible] this [illegible].

[illegible]

O *Madhu* [illegible] of *Kama* [illegible] blossom, [illegible] leaves [illegible].

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] ॥[illegible]

VIKRAMORVAŚĪYA

The drama [illegible] represents [illegible] partly terrestrial and partly celestial. This play has been composed by Mahākavi Kālidāsa. Poetic description of [illegible] has also been found in this drama of Kālidāsa.

King Purūravā says to Vidūṣaka: Already the [illegible] god of love has pierced my heart, which is difficult to get [illegible], how much more [illegible] when the mango trees of the garden, whose pallid leaves have been blown away by the Malaya breeze, are showing fresh sprouts.

इदमसुलभवस्तुप्रार्थनादुर्निवारं प्रथममपि मनो मे पञ्चबाणः क्षिणोति।

किमुत मलयवातोन्मूलितापाण्डुपत्रैरुपवनसहकारैर्दर्शितेष्वङ्कुरेषु॥[illegible]

King Purūravā further adds: Here is the Kurabaka flower red at the tip like a woman's nails, and black at the sides; the young Aśoka has charming, owing to increased redness, is ready to burst into flower; the new flowers of the Cūta is yellow at the ends as its pollen is yet imperfectly formed; [illegible] the beauty of Spring stands [illegible] between childhood and youth.

अग्रे स्त्रीनखपाटलं कुरबकं श्यामं द्वयोर्भागयोर्बालाशोकमुपोढरागसुभगं भेदोन्मुखं तिष्ठति।

ईषद्बद्धरजःकणाग्रकपिशा चूते नवा मञ्जरी मुग्धत्वस्य च यौवनस्य च सखे मध्ये मधुश्रीः स्थिता॥[illegible]

MĀLAVIKĀGNIMITRA

Mālavikāgnimitram is a [illegible] of love intrigue in the court of King Agnimitra of Vidiśā of the Śuṅga dynasty.

[illegible] the beauty of Spring season, the King Agnimitra says to his friend: By the sweet notes of the slightly intoxicated cuckoos he seems to be compassionately inquiring whether I can bear the torture of love, while the south breeze with its soft touch and its [illegible] mango blossoms is [illegible] like the palm of a [illegible] spring time.

[illegible] वसन्तः । सखे पश्य

आमत्तानां श्रवणसुभगैः कूजितैः कोकिलानां सानुक्रोशं मनसिजरुजः सह्यतां पृच्छतेव।

अङ्गे चूतप्रसवसुरभिर्दक्षिणो मारुतो मे सान्द्रस्पर्शः करतल इव व्यापृतो माधवेन॥[illegible]

King says to Vidūṣaka: The [illegible] and the bee clinging to [illegible] opened [illegible] blossom [illegible] by [illegible] strong [illegible]

[illegible] ॥[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

When [illegible] becomes faint, [illegible] addressing [illegible] says, give up, Oh [illegible], [illegible] fear of [illegible] and now that I, who have for long been devoted to you, have become like the [illegible]

[illegible]

Addressing [illegible] the King [illegible] says: Here [illegible] before us the youth of Spring [illegible] adorning [illegible] with [illegible] flowers [illegible] and [illegible] fills the mind with longing.

[illegible]

ABHIJÑĀNAŚĀKUNTALA

It is one of the most popular plays in Sanskrit. It has attracted attentions of scholars across the world. The play of [illegible] considered [illegible] of Kālidāsa's poetry. Kālidāsa is the greatest [illegible] of aesthetic [illegible] of [illegible]. His main achievement is to have taken every [illegible] elements [illegible] and [illegible] them in a harmonious artistic perfection [illegible] the key of [illegible] beauty. The appreciation of beauty in nature [illegible] of the [illegible] and forests [illegible] and rivers, the [illegible] of [illegible] life had become a part of contemporary culture.

Before journey of Śakuntalā [illegible] to her husband's house [illegible] approaches to the creeper and said: O [illegible]! Best of [illegible] among creepers although wedded to the [illegible], give [illegible] embrace me, with your arms, these branches which are turned in [illegible] direction. I shall be faraway from you after this day-

[illegible]

Listening [illegible] says: The [illegible] have gained thee husband equal to yourself [illegible] originally [illegible] by me [illegible] the [illegible] to the [illegible], so that now [illegible] for thee and for her is [illegible]

[illegible]

[illegible]

Addressing to [illegible] the King [illegible] says: He said [illegible] that I may listen. O [illegible] comes in that [illegible] long [illegible] after having kissed [illegible] in that way would have forgotten it being now satisfied with mere dwelling in the lotus

[illegible]

In Act VI [illegible] at the [illegible] blossom and [illegible] behind her

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible] p. 14
[illegible]
[illegible]

Then first ... says, (O ... blossom, ...) ... [illegible] ... of the ... of spring ... [illegible] ... blessings of the ... [illegible]

[illegible][115]

The first ... [illegible] ... [illegible]

[illegible][116]

Then the ... [illegible] ... [illegible]

[illegible][117]

Now the second ... says ... [illegible] ... [illegible]

[illegible]

[illegible][118]

Now ... [illegible] ... [illegible]

[illegible]

[illegible][119]

... [illegible] ... the ... tree whose young leaves are glistening ... [illegible] ... [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] 199

ĀMRA IN PURĀṆIC LITERATURE

[illegible] ... [illegible] ... Describing

[illegible]

[illegible] Purāṇa says that it was bordered with [illegible] trees. These trees were bending down with the weight of fruits and flowers.[13] This very Purāṇa, while describing the beauty of [illegible] of Vṛndāvana, [illegible] the [illegible] of flowers [illegible] by the winds, [illegible] and Tulasī [illegible] like [illegible] in their hands.[14] [illegible] has described the [illegible] and manifestation of Aśoka: [illegible][15]

When the king [illegible] entered [illegible] garden [illegible] consisted of many trees where blossoms had not faded, the [illegible] of which were large, and had a grassy [illegible] all round, and which had clearly [illegible] and cool shades. All round in every quarter, the cuckoos cooed loudly [illegible], as their throats [illegible] due to their [illegible] the tender [illegible] of the tips of the Aśoka tree:

[illegible][16]

While [illegible] the [illegible] Brahmavaivarta Purāṇa, the beauty of [illegible] and [illegible] has [illegible] from many [illegible], it was beautified by the [illegible] of Aśoka: [illegible][17]

King [illegible] once reached [illegible] near to Himalaya. It was surrounded by number of trees. Aśoka was one of them, which was quite attractive and [illegible].[18] [illegible] of Aśoka was considered to be [illegible]. [illegible] says that [illegible] by the [illegible] they become [illegible].[19]

[illegible] is a description of [illegible]. According to it, midway between the great mountains [illegible] and [illegible], there is a [illegible] a grove called [illegible] on the [illegible] of the [illegible]. It is [illegible] by the [illegible] of the [illegible]. The [illegible] have splendid flowers. They [illegible] in various colours, [illegible] in all seasons. The grove is [illegible] and [illegible]. The trees have the [illegible] of gold, [illegible] of the [illegible] and [illegible] spreading all round. [illegible], Aśoka, [illegible] and [illegible] the [illegible] of that great grove. [illegible] the [illegible] of [illegible], are [illegible] and [illegible]:

[illegible]।।
[illegible]।
[illegible]।।
[illegible]।।
[illegible]।[20]

CONCLUSION

[illegible] the above [illegible] it is [illegible] that Aśoka is well known for its [illegible] and [illegible] importance. [illegible] for [illegible] their [illegible]. [illegible] parts of this tree are used for various religious purposes and rituals. From [illegible] point of view this [illegible] is considered to be of great importance.

[illegible]

BIBLIOGRAPHY

[illegible] ([illegible]), [illegible] Kapoor [illegible], [illegible]

Bakhru H.K., Foods That Heal, Orient Paperbacks, New Delhi, 2010

Banerji Suresh Chandra, *Kalidasa-kosa*, Chowkhamba Sanskrit Series Office, Varanasi, [illegible]

Basu S.K. & Gupta P.C. and Rao R.V. [illegible], *[illegible] Plants*, Indian Council of Forestry Research and Education, Dehradun, 1992

Brahmavaivarta Mahāpurāṇa (Ed.), K.N. Sharma, Krishnadas Academy, Varanasi, [illegible]

[illegible] (Ed.) [illegible] Hindi Sahitya Sammelan Prayaga, Allahabad, [illegible]

Chatterji Suniti Kumar (Ed.), *The Cultural Heritage of India*, The Ramakrishna Mission Institute of Culture, Calcutta, [illegible]

[illegible] of Kālidāsa (Ed.), Devadhar C.R., Motilal Banarsidass Publishers Private Limited, Delhi

Devadhar C.R., *Works of Kalidasa*, Motilal Banarsidass Publishers Private Limited, Delhi, 1977

Dwivedi, Dhananjay Vasudev, *Importance of Plants as Depicted in Purāṇas*, [illegible], 271-274

Dwivedi Dhananjay Vasudev, *Sanskrit Sahitya mein Paryavarana Chetana*, Sri Krishna Sahitya Sadan, [illegible]

Gupta Shakti M., *Plant Myths and Traditions*, Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd., New Delhi, [illegible]

Harshananda Swami, *A Concise Encyclopaedia of Hinduism*, Ramakrishna Math, Bangalore, 2008

[illegible] (Ed.), [illegible], Chowkhamba Vidya Bhawan, Varanasi, [illegible]

Krishnamurthy K.H., *Fruits*, Books for All, Delhi, 2005

Krishnamachariar M., *History of Classical Sanskrit Literature*, Motilal Banarsidass Publishers Private Limited, Delhi, [illegible]

Krishna Nanditha & Amirthalingam M., *Sacred Plants of India*, Penguin Books, Gurgaon, [illegible]

Kumari Dr. Chandrakala [illegible], *Mahābhārata [illegible] Adhyayanam*, Rashtriya Sanskrit Sansthan, New Delhi, [illegible]

[illegible], *Flora & Plant Kingdom in Sanskrit Literature*, Eastern Book Linkers, Delhi, [illegible]

Kumārasambhavam of Kalidasa (Ed.) Kale M.R., Motilal Banarsidass Publishers Private Limited, Delhi, [illegible]

The Meghadūta of Kālidāsa (Ed.) Nandargikar Gopal Raghunath, [illegible] Corporation, Delhi, [illegible]

Padma Purāṇa (Tr.) [illegible], Motilal Banarsidass Publishers, Delhi, [illegible]

[illegible], *Medicinal Plants*, [illegible], Agra, [illegible]

Raghuvaṃśam of Kalidasa (Ed.) Devadhar C.R., Motilal Banarsidass Publishers, Delhi, 2005

[illegible] of Kālidāsa (Ed.), Arya Dr. Ravi Prakash, Parimal Publications, Delhi, [illegible]

Skanda Mahāpurāṇa (Ed.), [illegible], New Delhi, [illegible]

Skanda-Purāṇa (Tr.), Tagare Dr. G.V., Motilal Banarsidass Publishers, Delhi, [illegible]

Swami Harshananda, *A Concise Encyclopaedia of Hinduism*, Ramakrishna Math, Bangalore, 2008

The Agni Mahāpurāṇam (Ed.), Kumar Dr. [illegible], Eastern Book Linkers, Delhi, [illegible]

The Bṛhadāraṇyakopaniṣad, Sri Ramakrishna Math, Chennai, [illegible]

The Matsyamahāpurāṇam (Ed.), Kumar Prof. Pushpendra Kumar, Eastern Book Linkers, Delhi, [illegible]

[illegible] Purāṇa (Tr.), [illegible], Parimal Publications, Delhi, [illegible]

[illegible] (Ed.), [illegible], Varanasi, [illegible]

Vāyu Purāṇa (Tr.), Sharma Sudarshan Kumar, Parimal Publications, Delhi, [illegible]

Vṛkṣāyurveda The Science of Plant Life by Surapala, Sadhale Nalini (Tr.), Asian Agri-History Foundation, Secunderabad, [illegible]

[illegible] (Ed.), [illegible], Chowkhamba Sanskrit Series Office, Varanasi, 2004

[illegible] (Ed.), Tripathi Prof. [illegible], Krishnadas Academy, Varanasi, [illegible]

Constructive Paradigm of Teaching and Learning Process

Dr. Vijay Kumar Dadhich

1. Introduction

An important restriction of education is that teachers cannot simply transmit knowledge to students, but students need to actively construct knowledge in their own minds. That is, they discover and transform information, check new information against old, and revise rules when they do not apply. This constructivist view of learning considers the learner as an active agent in the process of knowledge acquisition. Constructivist conceptions of learning have their historical roots in the work of Dewey (1929), Bruner (1961), Vygotsky (1962), and Piaget (1980) have proposed several modifications of constructivist theory for instructional development stressing that learning outcomes should focus on the knowledge construction process and that learning goals should be determined from authentic tasks with specific objectives. Similarly, Von Glasersfeld (1995) states that learning is not a stimulus-response phenomenon, but a process that requires self-regulation and the development of conceptual structures through reflection and abstraction. It is important to note, in this respect, that constructivism is embodied in numerous ways and that these different views share important overlaps, but also contain major differences. Constructivism is an approach to teaching and learning based on the premise that cognition (learning) is the result of "mental construction." In other words, students learn by fitting new information together with what they already know. Piaget's theory of Constructivist learning has had wide ranging impact on learning theories and teaching methods in education and is an underlying theme of many education reform movements. Research support for constructivist teaching techniques has been mixed. Some research supporting these techniques and other research contradicting those results.

Constructivism Theory of Learning Explained Constructivism is basically a theory which is based on observation and scientific study about how people learn. It says that people construct their own understanding and knowledge of the world, through experiencing things and reflecting on those experiences (Bereiter, 1994). When we encounter something new, we have to reconcile it with our previous ideas and experience, maybe changing what we believe, or maybe discarding the new information as irrelevant. In any case, we are active creators of our own knowledge

To do this, we must ask questions, explore, and assess what we know. In the classroom, the constructivist view of learning can point towards a few different teaching practices. In the most general sense, it usually means encouraging students to use active techniques (experiments, real-world problem solving) to create more knowledge and then to reflect on and talk about what they are doing and how their understanding is changing. The teacher makes sure he/she understands the students' preexisting conceptions, and guides the activity to address them and then build on them (Oliver, 2000). Constructivism has roots in philosophy, psychology, sociology and education. But while it is important for educators to understand constructivism, it is equally important to understand the implications this view of learning has for teaching and teacher professional development (Tam, 2000). Constructivism's central idea is that human learning is constructed, that learners build new knowledge upon the foundation of previous learning. Objectivists believe that information itself is knowable outside the bounds of any human mind, and that any individual interpretation of knowledge can be said to be either correct or incorrect. Objectivists view individual pieces of information as symbols or currency that can be acquired by humans and can be transferred from human to human should the correct learning conditions exist (Jonassen, 1991). While much of the early work in formal instructional design derived from objectivist theory, modern academic minds have come to accept that learning environments which more closely match the needs of constructivist learning may be more effective.

Principles of Constructivism: -

Constructivist teaching is based on recent research about the human brain and what is known about how learning occurs. Caine and Caine (1991) suggest that brain-compatible teaching is based on 12 principles:

1. The brain is a parallel processor. It simultaneously processes many different types of information, including thoughts, emotions, and cultural knowledge. Effective teaching employs a variety of learning strategies.
2. Learning engages the entire physiology. Teachers can't address just the intellect.
3. The search for meaning is innate. Effective teaching recognizes that meaning is personal and unique, and that students' understandings are based on their own unique experiences.
4. The search for meaning occurs through "patterning." Effective teaching connects isolated ideas and information with global concepts and themes.
5. Emotions are critical to patterning. Learning is influenced by emotions, feelings, and attitudes.

6. The brain processes parts and wholes simultaneously. People have difficulty learning when either parts or wholes are overlooked.
7. Learning involves both focused attention and peripheral perception. Learning is influenced by the environment, culture, and climate.
8. Learning always involves conscious and unconscious processes. Students need time to process 'how' as well as 'what' they've learned.
9. We have at least two different types of memory: a spatial memory system, and a set of systems for rote learning. Teaching that heavily emphasizes rote learning does not promote spatial, experienced learning and can inhibit understanding.
10. We understand and remember best when facts and skills are embedded in natural, spatial memory. Experiential learning is most effective.
11. Learning is enhanced by challenge and inhibited by threat. The classroom climate should be challenging but not threatening to students.
12. Each brain is unique. Teaching must be multifaceted to allow students to express preferences.

Basic characteristics of Constructivist Learning Environments Tam (2000) lists the following four basic characteristics of constructivist learning environments, which must be considered when implementing constructivist instructional strategies:

1) Knowledge will be shared between teachers and students.
2) Teachers and students will share authority.
3) The teachers role is one of a facilitator or guide.
4) Learning groups will consist of small numbers of heterogeneous students.

Pedagogical Goals of Constructivist Learning Environments

There are seven pedagogical goals of constructivist learning environments as:

1) To provide experience with the knowledge construction process (students determine how they will learn).
2) To provide experience in and appreciation for multiple perspectives (evaluation of alternative solutions).
3) To embed learning in realistic contexts (authentic tasks).
4) To encourage ownership and a voice in the learning process (student centered learning).
5) To embed learning in social experience (collaboration).
6) To encourage the use of multiple modes of representation (video, audio text, etc.)
7) To encourage awareness of the knowledge construction process (reflection, metacognition).

Benefits of Constructivism -

1. Children learn more, and enjoy learning more when they are actively involved, rather than passive listeners.
2. Education works best when it concentrates on thinking and understanding, rather than on rote memorization. Constructivism concentrates on learning how to think and understand.
3. Constructivist learning is transferable. In constructivist classrooms, students create organizing principles that they can take with them to other learning settings.
4. Constructivism gives students ownership of what they learn, since learning is based on students' questions and explorations, and often the students have a hand in designing the assessments as well. The students are also more likely to retain and transfer the new knowledge to real life.
5. By grounding learning activities in an authentic, real-world context, constructivism stimulates and engages students. Students in constructivist classrooms learn to question things and to apply their natural curiosity to the world.
6. Constructivism promotes social and communication skills by creating a classroom environment that emphasizes collaboration and exchange of ideas.

Difference between Traditional Classroom and Constructivist Classroom

Traditional Classroom	Constructivist Classroom
Curriculum begins with the parts of the whole. Emphasizes basic skills. expanding to	Curriculum emphasizes big concepts, beginning with the whole and include the parts.
Strict adherence to fixed curriculum is interests is highly valued	Pursuit of student questions and valued
Materials are primarily textbooks and workbooks.	Materials include primary sources of material and manipulative materials.
Learning is based on repetition. what the	Learning is interactive, building on student already knows.
Teachers disseminate information to students;	Teachers have a dialogue with students,
students are recipients of knowledge.	helping students construct their own knowledge.

Teacher's role is directive, rooted in authority.	Teacher's role is interactive, rooted in negotiation.
Assessment is through testing, correct answers.	Assessment includes student works, observations, and points of view, as tests. Process is as important as well as product.
Knowledge is seen as inert.	Knowledge is seen as dynamic, ever changing with our experiences.
Students work primarily alone.	Students work primarily in groups.

Implications of constructivism for teaching and learning

Constructivism requires a teacher to act as a facilitator whose main function is to help students become active participants in their learning and make meaningful connections between prior knowledge, new knowledge, and the processes involved in learning. Brooks and Brooks (1993) summarize a large segment of the literature on descriptions of constructivist teachers. They conceive of a constructivist teacher as someone who will:

1. Encourage and accept student autonomy and initiative.
2. Use a wide variety of materials, including raw data, primary sources, and interactive materials and encourage students to use them.
3. Inquire about students' understandings of concepts before sharing his/her own understanding of those concepts.
4. Encourage students to engage in dialogue with the teacher and with one another.
5. Encourage student inquiry by asking thoughtful, open-ended questions and encourage students to ask questions to each other and seek elaboration of students' initial responses.
6. Engage students in experiences that show contradictions to initial understandings and then encourage discussion.
7. Provide time for students to construct relationships and create metaphors.
8. Assess students' understanding through application and performance of open-structured tasks.

Hence, from a constructivist perspective, the primary responsibility of the teacher is to create and maintain a collaborative problem-solving environment, where students are allowed to construct their own knowledge, and the teacher acts as a facilitator and guide.

Conclusion

Constructivism is a theory that asserts that learning is an activity that is individual to the learner. This theory hypothesizes that individuals will try to make sense of all information that they perceive, and that everyone will, therefore "construct" their own meaning from that information. Constructivism represents one of the big ideas in education. Its implications for how teachers teach and learn to teach are enormous. If our efforts in reforming education for all students are to succeed, then we must focus on students. To date, a focus on student-centered learning may well be the most important contribution of constructivism. Constructivist teachers encourage students to constantly assess how the activity is helping them gain understanding. By questioning themselves and their strategies, students in the constructivist classroom ideally become "expert learners." This gives them ever-broadening tools to keep learning. With a well-planned classroom environment, the students learn HOW TO LEARN.

References

[1]. Bednar, A. K., Cunningham, D. J., Duffy, T. M., & Perry, J. D. (1992). *Theory into practice*: How do we link? In T. M. Duffy & D. H. Jonassen (Eds.), *Constructivism and the technology of instruction* (pp. 17-34). Hillsdale, NJ: Lawrence Erlbaum Associates.

[2]. Bereiter, C. (1994). Constructivism, socioculturalism, and Popper's World 3. *Educational Researcher*, 23 (7), 21-23.

[3]. Bruner, J. S. (1961). The act of discovery. *Harvard Educational Review*, 31 (1), 21-32.

[4]. Brooks, J.G and Brooks, M.G. (1993) *In Search of Understanding: The Case for Constructivist Classrooms*. Alexandria, VA: American Society for Curriculum Development.

[5]. Caine, R.N., & Caine, G. (1991). *Making connections: Teaching and the human brain*. Alexandria, VA: Association for Supervision and Curriculum Development.

[6]. Driscoll, Marcy. (2000). *Psychology of Learning for Instruction*. Boston: Allyn & Bacon.

[7]. Duffy, T.M., & Jonassen, D.H. (Eds.). *Constructivism and the technology of instruction* (pp. 17- 34). Hillsdale, NJ: Lawrence Erlbaum Associates.

Assistant Professor (Cont.)

Dept. of Education

Central Sanskrit University, Jaipur

लक्ष्यलक्षणं व्याकरणम्

डॉ. संजीवकुमारझा

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] । [illegible] प्रयुक्ता भवन्ति । [illegible] तु सूत्रेण [illegible] भवति । अतः [illegible] । तथापि अत्र [illegible] । [illegible] 'शब्दः [illegible]' [illegible] ।

[illegible] 'शब्द' एव व्याकरण [illegible] । तत्र [illegible] भवति ।

[illegible] । [illegible] ।

[illegible]

[illegible] व्याकरणस्य [illegible] । [illegible] ।

संदर्भग्रन्थाः

1. वाक्यपदीयम्, [illegible], कारिका [illegible]
2. [illegible], [illegible], पृष्ठ [illegible]
3. व्याकरणदर्शनम्, डॉ. [illegible] झा, भूमिका पृ. [illegible]

4. [illegible], [illegible]
5. तत्रैव
6. आपस्तम्ब... 1/1/1
7. [illegible], [illegible], पृष्ठ [illegible]
8. तत्रैव
9. आपस्तम्ब... [illegible]
10. तत्रैव - 4/1/[illegible]
11. तत्रैव - 4/1/100
12. [illegible], [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

पद्मश्रीरघुनाथशर्मकृतस्य शनिस्तवस्य समालोचनम्

डॉ. अंजु शर्मा

शनिस्तव-

[illegible]

[illegible]

वैशुकर्पणि कालांककीलमान[illegible] शीशरे।

नपमंडलिजन्यागपि [illegible]ते॥

[illegible] कथा- [illegible]

आरि[illegible]

भानुभानुप्रभा[illegible]ते नम॥[illegible]

[illegible]

[illegible]

शनिं शरणमायामि [illegible]॥[illegible]

अपि च

नं सर्वपापशमनं [illegible] प्रभुम्।

शनिं शरणमायामि [illegible]ऽहमाकुलः॥[illegible]

[illegible]

सप्ताश्व महादेव [illegible]।
[illegible] मम दुःखं विदूरय॥

अपि च

पितृ[illegible]जानवं।
[illegible]मानसं कल्याणाकृते॥

[illegible] लौकिक[illegible] [illegible]। [illegible]

तथा –

[illegible] देव [illegible]।
[illegible] शरणं यामि सात्वम्॥

अस्मिन् [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible] कुरुत

तथाच

[illegible] सर्वकल्याणसुन्दरः।
[illegible] तस्मै देवाय ते नमः॥

तथा –

[illegible] भवेत्।
[illegible] तस्मै देवाय ते नमः॥

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कुरुत

[illegible]

[illegible] भवेद् [illegible]॥

[illegible]।

[illegible] निरन्तरम्॥

[illegible]

'[illegible] भानुनन्दनः [illegible]।

[illegible]॥'

[illegible]।

[illegible]॥

[illegible]

यस्मिन् [illegible]।

धार्मिको धनवान् [illegible] राजा [illegible]परिपालकः॥

अपि च

[illegible]।

पुरोहित[illegible]॥

[illegible]

[illegible]

शुक्र[illegible] राजा [illegible]।

नीचकर्मोऽपि [illegible] शीलयुक्तो नृपो भवेत्॥

[illegible] मनुष्य, [illegible] यथोक्तं [illegible]

[illegible] [illegible] शक्रो [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।। [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भवन्ति। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] इति [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। तथाहि –

शान्तिः प्रसादात् [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible] सदा [illegible]।। [illegible]

तथा च

शान्तिप्रसादात्सर्वे [illegible] शुभावहाः।
[illegible] [illegible] [illegible]।। [illegible]

सन्दर्भाः–

1.	शुक्लनीतिः, [illegible]	2.	शान्तिशतक, श्लोक सं. [illegible]
3.	शान्तिशतक, श्लोक सं. [illegible]	4.	शान्तिशतक, श्लोक सं. [illegible]
5.	शान्तिशतक, श्लोक सं. [illegible]	6.	शान्तिशतक, श्लोक सं. [illegible]
7.	शान्तिशतक, श्लोक सं. [illegible]	8.	शान्तिशतक, श्लोक सं. 24
9.	शान्तिशतक, श्लोक सं. [illegible]	10.	शान्तिशतक, श्लोक सं. [illegible]
11.	शान्तिशतक, श्लोक सं. [illegible]	12.	शान्तिशतक, श्लोक सं. [illegible]
13.	शान्तिशतक, श्लोक सं. [illegible]	14.	शान्तिशतक, श्लोक सं. [illegible]
15.	शान्तिशतक, श्लोक सं. [illegible]	16.	शान्तिशतक, श्लोक सं. [illegible]
17.	शान्तिशतक, श्लोक सं. [illegible]	18.	शान्तिशतक, श्लोक सं. 105
19.	शान्तिशतक, श्लोक सं. 106		

वैदिकवाङ्मये काव्यत्वम्

प्रकाशचन्द्र मिश्र

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] विधानम्–

[illegible] मध्ये [illegible] प्रथमं [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] भवति । [illegible] कृतम् ।

[illegible] –

[illegible] [illegible] ॥

[illegible] ।

[illegible] । [illegible] भवति ।

शृङ्गारस्य उपयोगः

[illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible] । [illegible] –

'[illegible] ।
[illegible] ॥'

[illegible] भवति । [illegible] ।

अलङ्कार–विधानम्

[illegible] । [illegible]

[illegible]

[illegible]

'[illegible]
[illegible]॥'

[illegible]

[illegible]

'[illegible]
[illegible]॥'

[illegible]

[illegible]
[illegible]॥'

[illegible] नरिष्यम् अपि त्वं [illegible]

अज्ञ कृष्णानि पिङ्गा कृत्वा [illegible] त्वं [illegible] तनुषि।
अज्ञ राजन् पशुरूपं न [illegible] न [illegible] नसिष्यम्॥

[illegible] अपत्यपोषण [illegible] यावन्ती।

[illegible]

[illegible] मूर्धन्य [illegible] अन्यथा॥

[illegible] (घृतप्रतीको बृहता दिवि स्पृशा) [illegible] कृता अपि

चत्वारि शृङ्गास्त्रयोऽस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ आविवेश॥[4]

आपि [illegible] –

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति॥

[illegible] सुपर्णा [illegible] अभिचाकशीति [illegible] भवति [illegible]

[illegible] अर्थ [illegible] अनुष्ठीयमानं [illegible] कथ्यते [illegible]

'[illegible] वाचं [illegible] विप्रमाणाम्।

सर्वं [illegible] ॥5॥'

[illegible]।

[illegible]

[illegible] कृणुते [illegible]॥

[illegible]

'[illegible] शत्रून् बाधते [illegible] अजिता न [illegible]॥'

[illegible]

[illegible] चित्रा सुभगा प्रथाना सिन्धुर्न [illegible]।

[illegible]

उप. प्रतीची युवतानि [illegible]॥

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible] ।

[illegible]

प्रकृतिवर्णना–

(1) अनावृतं वर्णनम् – [illegible]

(2) अलङ्कृतवर्णनम् – [illegible]

[illegible]

[illegible] ।

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible]

संदर्भः—

1.	[illegible]	2.	[illegible]
3.	[illegible]	4.	[illegible]
5.	[illegible]	6.	[illegible]
7.	[illegible]	8.	[illegible]
9.	[illegible]	10.	[illegible]
11.	[illegible]	12.	[illegible]
13.	[illegible]	14.	[illegible]
15.	[illegible]	16.	[illegible]
17.	[illegible]	18.	[illegible]
19.	[illegible]	20.	[illegible]
21.	[illegible]	22.	[illegible]
23.	[illegible]	24.	[illegible]

[illegible]

How Far the campaign of women empowerment has really empowered women?

Dr. Laxmi Sharma

The World in recent times has seen a rapid growth in all the spheres, be it social, economical or Political. Countries have tried and been continuously trying to pull themselves out from the various stigmas the society has suffered for years. In such a quest to attain perfection 'empowerment' has come up as the buzz word "Women Empowerment, Reminder of the Day".

Empowerment is the process of providing equal opportunities and choices to the weaker sections of the society. It deals with the weaker social sections who were neglected in the past and did not get ample and equal opportunities to grow themselves at par with the stronger sections. 'Weaker sections' may include poor women, Dalits etc. The life of these people has always remained void of not only the basic facilities but also the meaningful choices. Empowerment hence also concerns with the measures which are taken by the various agents like government, civil societies and even the individuals to provide these sections with equal opportunities. The empowerment efforts deal with equity rather than equality. To make for the atrocities these sections have faced as it is said "Abla Nari teri yehi kahani, Aanchal mai hai doodh aur Aankho mai pani".

In the ancient past, women had been treated at par with men in Indian society. The early vedic period is a witness to the reputation held by the women in the society. The women were allowed to exercise a great freedom in the society. They were given the opportunities to study vedas and also to profess the same. They were allowed to do this without any restrictions. Women in the early vedic period were also treated equal by the parents. They were given legal rights over the property. The daughter could only loose the right over the parental property if she got married.

History has also seen eminent women personalities like Lopamudra, Maitri and Gargi. These women are still seen with great respect on the account of works they have done in the past.

The conditions of women started decreasing from the 500 BC with the arrival of Varna based system. All the equal rights given to women were ceased and heavy restrictions were imposed on them. They were not allowed to study and also lost all the legal rights on the Parental properties. Women were also forced to remain

professions like prostitution. Afterwards, the status and self esteem of the women and their journey of exploitation started.

With the breakdown of French Revolution, the dawn of their rise again began. Indeed, the rise of women started in the 18th century when a group of people revealed the need for a change.

In the beginning of 19th century, malpractices towards women like the Sati, dowry system were at its peak. Raja Rammohan Roy, Savitribai Phule, Jyotirao Phule etc. are the people known for their contribution in the field of women empowerment. People started realizing the importance of women in the society. After the First War of Independence 1857 the society took inspiration from Rani Laxmibai who single-handedly dare to fight against the Britishers. The society then started to realize the need to get rid of shackles of the prevailing malpractices against women widows. Remarriage was made legal and purdah system also got banned. Mahatma Gandhi was always reluctant towards the participation of women in the movements and active politics. But the large participation of women in the Non-cooperation movement, Dandi March and Civil disobedience movement changed his perception as well. After that Gandhiji also advocated for women empowerment. After Independence, women were given some active participation in the actual politics.

In 1960s and 1970s, the Indian economies realised the importance of women participation in the human resource development of the country. But a need was also there to get rid of the prevailing practices in the society. The patriarchal society in India did not allow a brisk rise of women. In 1961, the Dowry Prohibition Act was passed to abolish the practice of dowry.

The excellent participation of women in Chipko Movement realised them need for their political representation as well.

In the LPG (Liberalization, Privatization and Globalization) reforms of 1991, a large number of opportunities came up for the women. The LPG reforms facilitated the establishment of Multi National companies in India. This led to the flow of western world ideas to India where women enjoyed rights way better than India. The MNCs has almost equal rights for both men and women. This changed the perception towards women from a liability to an asset.

Urbanisation is seen to bring more opportunities for the women. Urbanisation is the function of Industrial development. Urbanisation has widened the opportunities for women - from MNCs (Multinational corporations) to teaching, banking etc. The work-population ratio of women in India has been on a constant rise of post LPG.

In Rural areas, women have formed various SHGs (Self help groups) on

Micro-finance development. "Kudumba Shree", TANWA (Tamil Nadu women in Agriculture) etc. are in the progress which got worldwide acclamation for the efforts they made.

Women, though only govern four of India's political practices, have come a long way when it comes to political representation. From 1980-1985, 4.7% of candidates and 70% of the electoral races had no women at all. As of 2015, it has been reported of the member of parliament 11% were women in Lok Sabha and 10.6% in Rajya Sabha. In 2016, Lok Sabha's women representation increased to a highest of all time to 11%.

Despite of a great leap women had taken to ensure their rights still a lot of challenges persist.

Even after so many amendments to the 1961 Dowry Act, there has been many cases of dowry like rape, sexual harassment, women trafficking etc. are always on the rise. Women with a good education and a financial base, are the only segment which have the fruits of women empowerment. In rural areas the condition of the women is still a cause of major concern. The literacy levels in the rural areas are very low. Malpractices like the abortion of girl-child is also affecting the overall sex ratio of the country.

Government has come up with various policies and schemes like Beti Bachchao, Beti Padhao Yojna, Janani Suraksha Yojna etc. for the nurturing of women from the basics. The implementation of such schemes could not be ensured in the villages. The incidents of rape, domestic violence, etc. are prevalent and rising mostly in villages.

The political representation of women has increased but the increment is very low as compared to the women population. The women Representation Bill 2008, which demanded 33% representation of women in the LS and Legislative Assemblies is still in a dead lock. There has been only one women Prime Minister and only one President of India since Independence.

There is a need to take initiatives to catalyse the process of women empowerment. Firstly, The govt. should consider root-lines based schemes which should equally address the plight of rural women as it does to Urban women. Secondly, the male population should also be made aware of the contribution which can be made by women if empowered. Thirdly, the political representation of women should be at least 33% demanded by the women representation Bill, 2008. More initiatives like the Delhi Commission for women (DCW) should come up. Crimes against women must be dealt by the fast-track courts and an effective and unbiased

decision should be given. Fake feminism which is prevalent now-a-days should also be encountered.

Hence, it can be said that women might have suffered from centuries but their conditions have definitely improved in the recent past, women who contributes to almost 50% of the total population should contribute equally in all social economic and political spheres. Government has continuously addressed the issues of concern one should also keep a close eye on the future as well. The contributions made by women in shaping the history are unmatchable. More and more awareness of women empowerment in the society will address this problem.

Asst. Professor
Modern Dept., CSM, Jaipur

Toy as a Myth in Roland Barthes' Toys

Dr. Kanta Galani

Abstract

"Toys" is one of the essays composing Mythologies, regarding which Barthes explained: "the starting point of these reflection was usually a feeling of impatience at the sight of the "naturalness" with which newspaper, art and common sense constantly dress up a reality which even though it is the one we live in, is undoubtedly determined by history." He uses the term 'myth' for the way cultural phenomena work to persuade people how social forces shaping them are in fact 'natural'.

In this sense, any aspect of modern culture functions as a myth – soap advertisement, wrestling matches, toys, women's magazines, and striptease shows. All these can be analysed as 'Texts' and all have an underlying ideology which Barthes brings out into the open. In 'Toys', Barthes analyses the cultural significance of children's plaything.

KEYWORDS : Children, Toys, Future roles, Gender, playthings, Myths

Myth means a belief or explanation that many people believe but it is actually untrue. Every society has its own system of beliefs, practices and traditions that contribute to regions that have stood the test of time highlighting their persistent hold on human imagination.

I have chosen the essay "Toys" from Barthes' Book Mythologies. This essay analyses the denotation & connotation of children's playthings and what underlying message the playthings convey. He was the one of the first theorists to understand and assert these toys. Toys are pre-condition of children to the specific gender roles that they will be expected to assume in later stages of their life.

He says that "All the toys one commonly sees are essentially a microcosm of the adult world" (Barthes1972, 153) and that, for instance, a girl doll "means to condition her to her future role as mother" (Barthes1972,153)

This article proceeds to point out the unfairness of limiting the imagination of the children to the gender roles that they have to play in later stages of their lives. French toys are usually based on imitation, they are meant to produce children who are users not creators," (P-51) where toys are "microcosm" of life. Acc. to

Barthes, French toys are an illustration of the belief that children are a miniature reflection of adults. Barthes argues that toys offer too much direction to children in their play: they don't allow children to indulge in their own imagination.

Here I have analysed the element of language. Barthes uses the concept of language as a semiotic. The same approach was first used by Vanda Leonora (1975). As indicated by Ferdinand Saussure (1983, P-101), signifiers (basic objects) are connected to signified (concept) by signification process—

Barthes's explanation of semiotics in a language goes beyond this. Acc. to him sign can take part in a new level of significance when sign becomes a signifier for a new signified at another level.

The basic level of signification or denotation as Barthes calls it can become the basis for another signification or connotation. To Barthes, this second level of meaning at the level of connotation is the mythological meaning or cultural association that underlies the primary linguistic meaning.

He names the language system that myth appropriates the "language-object", while myth itself is termed "meta language" i.e. that language which is used to structure and manipulate everyday language.

On the level of everyday land the signifier is the "meaning" but on the level of myth becomes the "form". The signified remains the "concept" in both cases that which is the "sign" on the first level however, is equated to "significant" at the level of myth.

Barthes uses his linguistic analogy to provide insight to the inborn character of society & culture. It shows that Barthes has the view that language has dual functions-- one being the public view which is available for all to see in a social context and second is the psychological view that underlies within the public view and communicates the society's real message behind it public view.

The same system of denotations (sense) and connotations (implicit ones) in the language analysis of the essay toys, where the everyday toys used for play by children is a denotation that is employed by the French society acc. to Barthes to define gender roles for children.

As Barthes says in his essay "French toys: one couldn't find a better illustration of the fact that the adult French Man sees the child as another self. All the toys one commonly sees are essentially a microcosm of the adult world; they are all reduced copies of human objects, as if in the eyes of public the child was, all told, nothing but a smaller man, a homunculus to whom must be supplied objects of his own size".

So acc. to Barthes and what I think toys are objects that condition the uses for future roles and that predetermined our roles in the society in indirect way. So here it is a toy which is a myth. Because toys have certain associations with certain categories and people which are already fixed by the society and that is myth.

This theory acts as the connotation of the French society, that is the society is sending an underlying message to the children in terms of their preparation for future roles in the society.

Barthes writes on how doll conditions little girls for example: "There exist, for instance, dolls which urinate; they have an oesophagus (gullet/food pipe) one gives them a bottle, they wet their nappies; soon, no doubt, milk will turn to water in their stomachs. This is meant to prepare little girls for the causality of house-keeping, to condition her to her future role as mother.

We apply this to games played in our modern society, we can immediately see that semiotics as applied to ideology might shed more light on the role that games play in our globalized society. We have assigned different roles to our children since their childhood through different child play different toys.

So in "Toys" Barthes portrays the effects and messages conveyed by the society to children by categorizing their play things, preparing them to follow their gender roles at a later stage in life. Hence Barthes uses semiotics for uncovering the underlying message of the society through innocent children's toys.

Myth here is categorized with the toys that certain toys for boys and another certain for girls so this is an old system or belief which we follow in any form may be.

Bibliography

- Sood, Vinay et al. "The Individual Society", Pearson, 2011. PP [illegible]
- Barthes, Roland. "Toys and Gender" UMT English Dept., Feb 17, 2017
- Barthes Toys & gender. wordpress.com

Asst. Professor

Dept. of English, [illegible], Indore

INFORMATION RESOURCES IN RAJASTHANI ARTS AND CULTURE FROM THE USERS PERCPECTIVE

** Sunita Pandey ** Dr. Shailendra Kumar

*Research Scholar, Department of Library and Information Science, University of Delhi. Email: sunitapandey10@bhu.com

**Associate Professor, Department of Library and Information science, University of Delhi. Email: shail5@yahoo.com

Abstract

Preservation and conservation of art and cultural heritage create awareness in people's mind for their heritage. This paper gives a brief introduction about the users of selected universities, Institutes and Museum Libraries, their area of specialization in Rajasthani art and culture, it also aims to add to understanding the information behavior of the faculty members and scholars of the selected institute's libraries and about the benefits and purpose of searching information. Various types of information resources, reference sources as well as problems and hindrances they face while searching them. The study also considers the heritage collection in Rajasthan, the literature about the arts and culture of Rajasthan is available in different forms. Different types of information resources used by users who come to library to search information on arts and culture of Rajasthan. The main purpose of this study is to examine the role of libraries to promote art and culture of Rajasthan as per the opinion of the users of the selected nine museum universities and institutes of Rajasthan.

Keywords: Information Seeking Behavior, Rajasthani Art and Culture, Cultural Library, User Satisfaction.

1. Introduction

'Art' is the medium to express the aesthetic ideas or purposes by the use of skills by the imagination to create an object and experience that can share with others. A kind of narration of experiences with the help of different media whether it's a painting from the Renaissance or a modern sculpture item

Culture represents a set of shared attitudes, values, goals and practices. Culture and creativity manifest themselves in almost all economic, social and other activities. When people come together as learners under the aegis of a library or a museum, they get an opportunity to understand that cultural institutions (Departments and Centre of Universities, libraries, museums, centre of art and culture, archives) are grounded on the idea that a culture requires places, forums, workshops where artists work for cognitive change, where ideas and imaginations get shapes.

2. Information Needs of Artists, Art Scholars and Art Historian

The literature describes the information needs of users searching information in Art and Culture as well as differentiates the information seeking behaviour of art faculty, art historians, art students and practicing visual artists. The literature noted how they are accessing information resources, especially in academic libraries. The role of information in the creative process as well as different artistic communities and varying information resources availability in the libraries is also evaluated.

Information behavior is an embedded assumption of the user oriented paradigm which focuses upon what people think, do and feel when they seek and use information. (Wilson 1981) In the recent article, Lo and Chu (2015) discussed the information seeking behavior and library usage of students at the Hong Kong Design Institute. The results revealed that the popularity of traditional printed materials is still high. The users found the library more suitable as not only the sources of accessing inspirational materials but also a useful place for social networking.

Budd (1989) have noted that researcher in humanities take more time in information seeking endeavour and prefer to make their own efforts to find their information themselves without taking help from library professionals. Visual artist's priorities are print media and most preferred format in the humanities is monographs as easy in retrospective conversion. In fine arts reference sources like encyclopedia, Janson's History of Art, Arnason's History of Modern Art find to be useful.

Research scholars initiate their research with standard books and handbooks, periodicals and articles are very valuable although indexing and abstracting sources are not widely used in visual arts. However, bibliographies, indexes, abstracts and other bibliographic tools are used by art researchers to look for relevant articles (Lonnqvist 1990).

Art historians, technicians, members of digital arts and design programs, painters, photographers, printmakers, art therapists, art educator and sculptor use print media and internet as traditional print media is regarded a highly preferred source of inspiration with art journals, periodicals and auction catalogues (Larkin 2010). Art

historians are dependent on their personal libraries, occasionally they use computerized databases and their bibliographies, general reference materials, indexes, image slides, digital images, photographs and photographic reproductions (Stam, 1984). Online sources are only preferred to reach on original print sources (Beaudoin, 2005). Younger artists may widely use the different information resources in comparison to their senior peers as well as electronic resources are more popular among the younger artists (Hemmig 2008) whereas emerging artists generally use same type of information sources as more established artists. Along with social networks they use traditional information sources and libraries (Mason and Lyon, 2010). Two basic reasons of the artists behind using books are to obtaining technical information and to find inspiration, while artists are not bounded themselves only to the arts for searching information (Downey, 1993).

Hemmig (2008) found slight difference in artists, those who are associated with academic institutions and those who are not. Although the affiliated artists use the information sources more frequently adding social networks. Frank (1999) examined that student artists need materials to increase their subject knowledge, information resources to resolve their problems and finally most importantly, resources to 'inspire' the users. Cowan (2004) found that natural environment and artist's own work of art is the main source of inspiration for them. Although Walker (1991) found that very few bibliographic databases are related to visual arts like Wilson line, Art abstracts, Art index, RILA, Avery index to architecture periodicals and some more specific for visual arts. Hence these online arts related databases have some difficulties as limited subject coverage, poor retrospective indexing of documents, lack of regular updating and of coordination between services.

Mason and Robinson (2011) found that illustrators and fashion/textile designers were most likely to cite current trends and practitioners in their field as source of inspiration, and were also influenced by other periods in fashion and older styles of illustration. Painters, sculptors and other artists, those working in mixed media get inspiration from Nature, Anatomy and Natural Art. Performance and installation artists appeared to be more engaged in current art writing and research as source of inspiration. At the end result shows that internet and the invisible community of practice are the most important resources for emerging artists

3. Role of University, Museum and Cultural Centre Libraries

Museums are heart of culture and civilization. The primary function of museums, cultural centres comprises of collection, documentation, preservation, display and interpretation of material evidence and related information for the benefit of coming

generations. In a very precise way, university, museum and culture centre libraries acquire books, journals and periodicals related to the field of history, art and culture of the world for specialized research and reference. It covers many disciplines like, Anthropology, Archeology, Conservation, Decorative Arts, History, Literature, Museum studies, Painting, Philosophy and Religion. University libraries serve academicians, research scholars and students who are registered in different course works offered by the university.

4. Need of the Study

It is observed that the information behavior and practices in art scholars have been studied less in comparison to other academic disciplines. So that in the vast spectrum of Rajasthani art and culture, the need of evaluating and nurturing art and artists was prominently felt. This phenomenon find out the information seeking behavior of users of select institution libraries which have apparently become the popular cultural destination and is giving a point of reference to the users of emerging art and cultural centers.

5. Objectives

The purpose of the study is to find the answers to the following questions:

- To know about the purpose of seeking information in Rajasthani arts and culture by the users of select libraries.
- To know about the sources to seek information resources in Rajasthani arts and culture.
- To highlight the problems and difficulties users faced while searching information resources in Rajasthani arts and culture.

6. Research Methodology, Scope and Limitations

The study used survey method with the help of questionnaire followed by interview of the library users to bring out the clarity to the study. Services offered by the select libraries have been analyzed by tabulated method on the basis of the data collected from the users during the survey.

In this study the term "Sources of information" is used for contents of the collections of a library which includes books, reference books, tourism related sources, photos books, journals, pamphlets, atlas and maps. Art and culture create the cultural heritage of the nation. The users of Nine major Universities, Institutes and Museum libraries of Rajasthan are selected for the study as these libraries are actively working and dealing with information resources in Arts and culture of Rajasthan which are as follows.

1. Albert Hall Museum, Jaipur (AHM established in 1887)

2. Banasthali Vidhyapeeth, Niwai Tonk (BV established in 1935)
3. Indian Institute of Craft and Design, Jaipur (IICD established in 1995)
4. Jawahar Kala Kendra, Jaipur (JKK established in 1993)
5. Maharaja Sawai Mansingh Museum (II) Jaipur (MSMSM established in 1959)
6. Mohan Lal Sukhadia University, Udaipur (MLSU established in 1962)
7. Rajasthan School of Art, Jaipur (RSA established in 1857)
8. Rajasthan Sangeet Sansthan, Jaipur (RSS established in 1858)
9. University Of Rajasthan, Jaipur (UR established in 1947)

In social sciences research personnel characteristics of respondents have very significant role to play in expressing and giving the responses about the problem, keeping this in mind, in this study a set of personal characteristics namely, age, sex, education, work specialization etc. of the 146 out of 274 respondents have been examined and presented in this study. The select users are from different groups, categories and specialization even then they have one similarity to search information on any form of Arts and Culture of Rajasthan. Out of these above selected users, some of them are faculty members of universities, institutions etc. whereas some of them are research scholars, staff of museums are also respondents as users, postgraduates and undergraduate students. Members of institution are also incorporated as the users of select museums library of Rajasthan.

In this study the researcher have taken 9 institutes i.e. Albert Hall Museum Jaipur, Banasthali Vidyapeeth Niwai Tonk, Indian Institute of Craft and Design Jaipur, Jawahar Kala Kendra Jaipur, Maharaja Sawai Man Singh Museum Jaipur, Mohan Lal Sukhadia University Udaipur, Rajasthan School of Arts Jaipur, Rajasthan Sangeet Sansthan Jaipur and University of Rajasthan Jaipur. All above 9 institutes are from Rajasthan.

Table 5.5.1.3 Qualification- Wise Distribution of Institutions Library Users

Education is one of the most important characteristics that might affect the person's attitudes and the way of looking and understanding any particular social phenomena. In a way, the response of an individual is likely to be determined by his educational status and therefore it becomes imperative to know the educational background of the respondents. Hence the variable 'Educational level' was investigated by the researcher and the data pertaining to education is presented in

Table 5.3.1.3

S.No.	Institutions	Bachelor	Master	NET	Ph.D.
1	AIIM	00	12	00	04
2	BV	00	16	03	05
3	DCD	05	09	00	00
4	JKK	06	07	00	03
5	MSMSM	00	02	00	01
6	MLSU	00	17	5	05
7	RSA	04	06	00	02
8	RSS	06	00	00	03
9	UR	04	21	00	08
Total	23 (15.75%)	84 (57.53%)	08 (05.47%)		31 (21.23%)

Note: Figures in parentheses give percentage

Table 5.3.1.3 shows that about 57.53% of the respondents are educated up to post graduate level they are maximum number, 05.47% are NET qualified lesser number of them. The numbers of respondents attaining higher education (Ph.D.) 21.23% are average in number. Only 15.75% of the respondents are educated up to bachelor level.

Table 5.3.3.2 Sources Used by the Respondents for Seeking Information

Except books, reference books, photo books, pamphlets, atlas, maps there are many other sources and methods from them scholars collect information on Rajasthan arts and culture. These sources are attending conferences/ seminars/ workshops, Book reviews, Consultation with experts in the field, Conversation with colleagues, Internet discussion forums or newsgroups etc. therefore, in this regard the following table 5.55 lists many of the sources which can be used to collect information on different aspects of Rajasthani Arts and Culture and asked to the users to mention their preference of sources they adopt to get required information.

S.N.	Sources	AIIM	BV	DCD	JKK	MSMSM	MLSL	RSA	RSS	UR	Total
1	Abstracting journals	9	24	0	10	0	10	3	6	27	89
2	Attending conferences/ seminar/workshops	9	31	9	16	0	11	5	8	27	116
3	Book reviews	12	23	2	10	0	11	6	7	27	102
4	CAS of libraries	0	23	6	13	0	11	5	6	22	86

5	Citations (references used)	12	22	6	9	0	7	5	5	17	84
6	Consultation with experts in the field	8	23	3	13	3	27	6	6	23	112
7	Conversation with colleagues	10	23	6	15	0	8	6	6	15	95
8	Conversation with library staff	12	7	0	6	0	8	1	5	29	81
9	Electronic databases	0	21	3	9	0	11	1	6	24	78
10	Indexing journals	0	33	2	11	0	7	3	4	11	75
11	Internet discussion forums or newsgroups	12	21	6	11	0	11	4	6	25	96
12	Internet search engines	10	21	3	13	3	16	1	5	23	98
13	Library catalogues	12	27	3	16	0	5	5	5	24	99
14	Media: TV, Radio and newspapers	12	22	6	10	0	11	5	1	25	94
15	Publisher catalogues	14	24	6	16	5	11	6	6	21	86
16	Review articles	14	33	6	10	5	7	3	4	22	96
17	Visiting book stores	14	7	3	12	5	7	1	3	24	81

(Respondents are allowed for giving multiple responses)

The *table 5.3.3.2* reveals that out of 17 above mentioned information sources the majority of respondents i.e. 116 users fulfilled their information need through Attending conferences/seminars/ workshops and least number of users i.e. 75 users search information on Indexing journals in order to fulfill their requirement. The average number of users used Consultation with experts in the field, Book reviews, Media: TV, Radio and newspapers, Library catalogues, Internet search engines, Internet discussion forums or newsgroups, Review articles and Conversation with colleagues as a source adopted to get required information.

Table 5.3.3.4 Purpose of Seeking Information by Respondents

The following *table 5.3.3.4* determines the purpose of seeking information of respondents

S.N.	Purpose	AHM	BV	BCD	JK	MSM SM	ML SL	RSA	RSS	UR	Total
1	For research and reference	08	24	9	12	02	18	00	00	24	95
2	For teaching and enrichment	00	21	2	03	00	15	00	09	00	68

3	Getting information for creative works	04	18	6	05	00	12	00	00	05	49
4	To know the latest arrivals in the library	22	21	3	03	03	09	06	09	03	59
5	To read journal articles pertaining to their subject	2[illegible]	8	6	10	00	09	00	09	00	63
6	To read newspapers/ magazines	20	18	06	10	03	12	02	00	09	61
7	Workshop and seminar presentations	20	18	00	08	00	09	00	00	06	41
8	Writing a book or article	20	8	09	03	03	13	06	09	00	65
9	To collect materials in their subject	08	15	09	06	05	09	00	00	15	65
10	Guiding Research Scholar	04	06	03	00	00	09	00	00	00	22
	Total	23	177	45	68	05	117	21	36	87	588

(Respondents are allowed for giving multiple responses)

It is apparent from the above table that out of 145 respondents the maximum number of users i.e. 95 visited library in order to fulfil their research and reference queries/needs apart from that the minimum number of users 13 use library to fulfil their requirements against guiding their Research scholars. That is very obvious because all the users are students, research scholars or academicians so that research and study is their major work for that they consult the library. Some other purposes are also similar to that as 'for teaching and enrichment', for writing a book or article, and 'to collect materials in their subjects'.

Table 5.5.1.2 Availability of Reference Sources on Rajasthani Arts and Culture

Reference sources are the research tools that help the scholars with their paper or project. Reference sources provide answers to specific questions such as brief, facts, statistics and technical instructions. Such as dictionaries, encyclopedias, almanac, atlases etc. generally in libraries reference sources do not circulate and are located in a separate reference collection.

S.N	Option	AHM	BV	HCD	JKK	MSMSM	MLSU	RSA	RSS	UR	Total
1	Yes	16	24	06	6	03	5	06	00	36	104 (71.23%)
2	No	00	06	06	06	00	2	06	06	03	42 (28.77%)

Note: figures in parentheses give percentage

Table 5.3.2.2 represents the data about availability of Reference Sources in Rajasthani Arts and Culture. As according to the responses received from the user of the library we came to know that out of 89 Institute libraries 104 (71.23%) of users responds that the libraries has the availability of reference sources on Rajasthani arts and culture along with this 42 (28.77%) users responds the library has not the availability of reference sources on Rajasthani arts and culture. As there are various aspects in Arts like Performing arts, visual arts, sculpture, painting, pottery, photography, is the reason that some users are satisfied with reference sources available in some aspects of Rajasthani arts and culture whereas others are not satisfied with that.

Table 5.3.2.3 Commonly Used Reference Sources on Arts and Culture

As far as reference sources concern, reference sources are the research tools that help the scholars with their paper or project. Reference sources provide answers to specific questions, such as brief facts, statistics with technical instructions, such as dictionaries, encyclopedias, directories, almanacs, atlases, etc. generally in libraries, reference sources do not circulate and are located in a separate reference collection. List of reference sources in arts and culture is provided in *table 5.3.2.3* and respondents were asked to reply the name of reference sources which are commonly used while getting information on Rajasthani arts and culture.

S.N.	Reference Sources	AHM	BV	HCD	JK	MSMSM	MLSU	RSA	RSS	UR	Total
1	Bibliography of modern India Art	00	21	3	9	0	17	0	5	0	49
2	[illegible] Kala Shabd Kosh	5	21	3	6	0	19	0	0	0	60
3	Dictionary of Indian art & artists including technical art term	2	19	0	0	0	18	0	0	12	[illegible]
4	Durgal Kosh	16	21	0	14	5	25	0	9	21	[illegible]

5	Encyclopedia of the arts	00	12	11	8	3	15	6	0	6	61
6	Encyclopedia of Indian culture	12	13	0	8	3	11	4	8	17	77
7	Gazetteer of India Indian Union history and Culture	6	18	9	8	2	13	6	0	6	75
8	Kala Kosh	12	21	7	11	3	21	6	0	3	83
9	Mana Sanskrit Kosh	00	22	0	13	3	25	6	0	15	85
10	Rajasthan state gazetteer: history and culture	9	15	0	8	3	23	4	8	3	73
11	Rajasthani Hindi Sabad Kosh	2	24	7	15	0	27	4	0	3	90
12	Rajasthani Kahawat Kosh	13	21	7	16	3	26	1	0	3	89
13	Rajasthani Sabd Kosh	6	34	0	16	0	27	4	0	24	111
14	Rajasthan Itihas Sanskriti encyclopedia	6	[illegible]	1	16	3	27	4	0	3	91
15	The art of India	2	16	7	8	0	13	6	0	15	68
16	Bibliography of modern India Art	12	21	0	6	0	9	0	0	9	57

(Respondents are allowed for giving multiple responses)

Table 5.3.2.3 discussed the commonly used reference sources on Arts and Culture. As per users responds *Dangal kosh* is commonly used by the users and the total number of users who used this reference source are 118 that is the largest number on the other side *Bibliography of modern India art* is less used by the users and their response is 49. Followed by this 111 users prefer *Rajasthani Sabd Kosh*, 91 and 90 responds for *Rajasthan Itihas Sanskriti Encyclopedia* and *Rajasthani Hindi Shabd Kosh*. 89, 85, and 83 users says the most commonly used reference source are *Rajasthani Kahawat Kosh, Mana Sanskrit Kosh* and *Kala kosh*. To one side according to 75, 73, and 71 users *Gazetteer of India, Indian Union: History and Culture, Encyclopedia of Indian culture, Rajasthan state gazetteer: history and culture* and *Dictionary of Indian art & artists including technical art term* responds that these are commonly used reference sources in the libraries. Lastly 58, 64 and 61 responds for the art of India, *Bharatiya Lok Shabd Kosh* and *Encyclopedia of the arts* are commonly used by the library users correspondingly.

As we know from the above table that the institute libraries has 16 types of

reference sources that is mentioned in above table along with that some other reference sources are used by the users of the library and they are:

- *Dictionary of Music, Dance and Drama: Encyclopedia of Indian Theater*: The reference source trying to bring out a performing arts lexicography dealing with ancient Indian Music, Dance and Drama from the huge corpus of traditional Sanskrit treatises from *Sangitaratnakara*, *Natyashastra*, *Abhinayadarpanam* a manual on Indian dance.
- *Cambridge guide to theatre*: It contains a wealth of information on all aspects of theater past and present. Major playwrights, works, important traditions, theories, companies, practitioners, venues and events, including folk drama, street theater and mummers plays; the work of actors, directors, and designers.
- *Art & Architecture thesaurus*: Art & Architecture thesaurus is a controlled vocabulary used for describing items of art, architectural and material culture. The AAT is used by museums, art libraries, archives, cataloguers, and researchers in art and art history, fine art, architecture, decorative arts, archival materials and materials culture.
- *Encyclopedia Britannica*: Encyclopedia Britannica is a general knowledge English language encyclopedia. Only 1% of knowledge is devoted to art in encyclopedia Britannica, rest is based on other knowledge.
- *Phaidon Dictionary of twentieth century art*: This dictionary is some 1600 entries cover artists, art groups and movements of the 20th century painting, sculpture and graphics.
- *The Oxford Dictionary of Art and Artists*: The Oxford Dictionary of Art and Artists covering western Art from the ancient Greece to the present day, it is a wide range authoritative dictionary, contains over 2500 clear and concise entries on styles and movements, materials and techniques and museums and galleries, it also includes biographical entries for artists, critics, collectors, dealers and patrons with other general information.
- *Kalatattvakosa*: A lexicon of fundamental concepts of the Indian Arts
- *Encyclopedia of the World Art*: Subject matter consists of representational arts in the broadest sense, architecture, sculpture, painting and other man made objects with no limits as to time, place or cultural environment.
- *Hall's dictionary of subjects and symbols in art*: The dictionary relates in a concise, intelligible manner the topics, book and common on which the collection of European workmanship is based. Cross-references empower the person to recognize the subject of an image just from some trademark article

or figure in it. Here in a solitary volume are consolidated religious and aesthetic subjects. The "Lexicon" likewise investigates the "lost language" of image and myth, in this way opening up the entire field of purposeful anecdotes.

Who's who in graphic art: An world- illustrated view of the leading contemporary graphic and typographic designers, illustrators, and cartoonists, with a short illustrated history of the graphic arts.

The Oxford Encyclopedia of the music of India. Comprehensive, authoritative and up to date. The Oxford Encyclopedia of the music of India details the story of Indian music through 3000 years of history. Entries cover forms of music from classical to film, originated, as well as dance styles, technical terms, instruments and biographies of vocalists, musicologists, saints, poets, gurus, composers and instrumentalist. The work spans not only all regions of India, but also covers the music of the subcontinent, including Nepal, Bangladesh, Pakistan and Sri Lanka.

The Darkroom Handbook: A complete book to guide and reference manual for all photographers, from beginners to professionals, to all aspects of darkroom work-processing, printing and special manipulative technique for modifying and creating new image.

Sangita Ratnakara is the "Ocean of music and Dance" and one of the most important Sanskrit musicological texts from India. Composed by "Sharngdeva" in the 13th century, both Hindustani music and carnatic music traditions of Indian classical music regard it as a definitive text. The text is divided into seven chapters which deal various aspects of music and musical instruments and the last chapter deals with dance.

Roget's International Thesaurus 7th edition: The most comprehensive, user friendly thesaurus available, Roget's features more than 325000 words and phrases, including more than 2000 all new entries that reflect the very latest in culture and technology.

The photographer's Handbook: A classic bestselling photographer's manual is issued for the first time in paperback, revised and updated. Illustrated photographs, diagrams and charts cover the entire range of subject matter, from choosing a camera to storing finished prints.

Table 5.4.2.5 Reason behind Not Using Library Frequently

The above table reveals the data regarding why users are not using the library on regular basis.

S.N.	Reason	AHM	BV	HCD	JK	MSMSM	MLSL	RSA	RSS	UR	Total
1	Class lectures and notes are sufficient	00	02	03	08	02	03	0	00	06	20
2	Inconvenient library	00	00	00	00	00	00	0	00	09	9
3	Less support from library staff	00	00	00	00	00	00	6	00	03	9
4	Library environment is not congenial	07	02	00	00	02	00	0	01	00	11
5	Required books are not available	08	03	03	09	06	03	5	08	21	56
6	Shortage of time	15	15	06	15	03	21	6	09	27	117

(Respondents are allowed for giving multiple responses)

The above data regarding the reason behind not using library frequently, the opinion of the select library users in this context are collected and tabulated. It is evident from table 5.4.2.5 the reasons responsible for users not using library frequently. The maximum number of users (117) not visiting library frequently because they have shortage of time. the number of users (09) do not visit library on regular basis due to inconvenient library hours and less support from library staff. Apart from that in average the responses regarding not using library frequently due to 56 user's responds that required books are not available that's why they are not using library on regular basis. on the other side 20 user respond that class lectures and notes are sufficient, so they do not feel the requirement to go to the library. lastly 11 users respond that library environment is not congenial due to that they do not visit the library on regular basis.

Table 5.4.4.2 Problems Faced While Seeking Information

The value of information resources in libraries and safeguarding its usage seems not encouraging. Library user's quest to use e-resources for their academic as well as research work encounters some difficulties in terms of access and usage. Therefore, in order to improve the services of Institute libraries and information centres, it is imperative to better understand the impediments users encounter in accessing these resources. Table 5.4.4.2 explores the data regarding problem faced by the users while seeking information.

S.N.	Problem	AHM	BV	HCD	JK	MSM SM	ML SL	RSA	RSS	UR	Total
1	Information is scattered in too many sources	00	24	12	12	03	09	06	09	30	102
2	Information sources are very expensive	16	03	09	12	03	13	06	09	30	91
3	Lack of information sources	16	03	09	12	03	09	06	09	30	88
4	Lack of knowledge in using the library	20	03	03	10	03	08	06	09	28	64
5	Lack of support from library staff	20	03	09	08	03	03	06	09	24	53
6	Lack of training in electronic resources/ products	12	06	09	12	03	09	06	01	27	79
7	Language barrier (most of the material is in E/H language)	20	03	06	06	03	09	06	04	27	58
8	Non availability of electronic resources (e-journals and databases)	20	05	05	10	03	10	06	09	30	80
9	Latest information sources are not available	20	03	09	10	03	10	06	09	30	56

(Respondents are allowed for giving multiple responses)

According to the data 102 of users faced information is scattered in too many sources that is highest in response. 91 and 88 faced the problem that information sources are very expensive and lack of information sources. 80 and 79 of users faced Non availability of electronic resources (e-journals and databases) and Lack of training in electronic resources/products. 64, 58, 56 and 53 of users faced Lack of knowledge in using the library, Language barrier (e.g. most of the material is in E/H languages), Latest information sources are not available and Lack of support from library staff while seeking information. The highest number of user's i.e. 102 responds that they faced problem due to scattered of information in too many sources apart from that lowest problem is lack of support from library staff while seeking information.

7. Conclusion

Libraries and museums provide a plethora of resources and services for their users and communities. They preserve rich and diverse culture and history and transmit it from one generation to the next. "Music" is the most preferred area of art and their in culture. They seek information for research reference, for teaching, and enrichment.

The users are found to be enthusiastic users of text books, reference books, websites and photobooks. except these information resources users are found to be satisfied with magazines and journals, reference sources available in Rajasthani arts and culture. Not only using information resources available in the libraries, users are interested to seek different type of sources to search information except traditional print information resources, as attending conference/seminar/workshops. They consult with the experts related to their fields. Majority of the users search their required information with the help of internet. it shows that internet is integral to their source of information access but majority go with consultation and discussion on subject. Libraries provide different information finding aids to search information. Although the users face some problems also still they are satisfied with the Library collection. Generally the users are satisfied with books and reference books in Rajasthani arts and culture available in select libraries.

An overall result shows that the users of Rajasthan are quite similar to artists as a whole; they are also seen to be proactive users of traditional books, magazines and journals, reference sources. As well as also prefer socialization among their colleagues as many of the information needs are better satisfied with the help of this.

References :

1. Beaudoin, Joan E. (2005). Image and text: a review of the literature concerning the information needs and research behavior of art historians. *Art Documentation*, 24 (2), 34-36.
2. Budd, J. M. (1989). Research in the two cultures: the nature of scholarship in science and humanities. *Collection management*, 11 (3/4), 1-21.
3. Cowan, Sandra (2004). Informing visual poetry: information needs and sources of artists. *Art Documentation*, 23 (2), 14-20.
4. Downey, M. C. (1993). A survey of the information-seeking practices of artists in the academic community (Master's Thesis). Kent State University.
5. Frank, P. (1999). Student artists in the library: an investigation of how they use

general academic libraries for their creative needs. *Journal of Academic Librarianship*, 25 (6), 445-455.
6. Gaur, Ramesh C. (2011). Development of the digital repository of Indian cultural heritage initiatives at the Indira Gandhi National Centre for the Arts. *Art Documentation: Journal of the Art Libraries Society of North America*, 30 (2), 56-62.
7. Goodrum, Abby A. & Spink, A. (2001). Image searching on the World Wide Web: analysis of visual information retrieval queries. *Information processing and management*, 37 (2), 295-311.
8. Goodrum, Abby A. (2003). Visual resource reference: collaboration between digital museums and digital libraries. *D-Lib Magazine*, 9 (5).
8. Graffe, N. (2004). Artistic jobs in the digital age. *Journal of Arts Management, Law and Society*, 34 (1), 79-96.
10. Hemmig, W. S. (2008). The information-seeking behavior of visual artists: a literature review. *Journal of Documentation*, 64 (3), 343-362.
11. Hemmig, W. S. (2009). An empirical study of the information seeking behavior of practicing visual artists. *Journal of Documentation*, 65 (4), 682-703.
12. Larkin, Catherine. (2010). Looking to the future while learning from the past: information seeking in the visual arts. *Art Documentation: Journal of the Art Libraries Society of North America*, 29 (1), 49-60.
13. Lo, Patrick & Chu, Wilson (2015). Information for inspiration: understanding information-seeking behaviour and library usage of students at the Hong Kong Design Institute. *Australian Academic & Research Libraries*, 46 (2), 101-120.
14. Lonnqvist, H. (1990). Scholars seek information: information-seeking behavior and information needs of humanities scholars. *International journal of information and library research*, 2 (3), 195-203.
15. Mason, Helen & Robinson, Lyn (2011). The information-related behaviour of emerging artists and designers. *Journal of Documentation*, 67 (1), 159-180.
16. Singh, Anil (2012). Digital preservation of cultural heritage resources and manuscripts: An Indian government initiative. *IFLA Journal*, 38 (4), 289-296.
17. Stam, Deirdre (1984). The information seeking practices of art historians in museums and colleges in the United States. (D.L.S. Diss.), Columbia University.
18. Walter, Nadine (1991). Computerization in research in the visual arts. *Art Documentation*, 10 (1), 5-12.
19. Wilson, T.D. (1981). On user studies and information needs. *Journal of Documentation*, 37(1), 3-15.

Concept of Women Empowerment in Ancient Indian Tradition

Kapil Gautam

Abstract:

The paper presents the perspectives of women empowerment in Indian culture on the basis of philosophical analysis of Indian feminine words. Women Empowerment refers to increasing the spiritual, political, social or economic strength of women. It often involves the empowered developing confidence in their own capacities. To resolve the women problems a feminist movement for women rights starts. In ancient India women never struggled for her place in society. Woman recognized her role in society and performs accordingly her duty. Modern women demand for her right. As [illegible] changes [illegible] and [illegible] and our needs. But a change in [illegible] original thoughts is not [illegible]. Both women and men have equal importance in this world. They are helpmate each other. And in this way their life is meaningful. Women were the symbol of sacrifice. In modern time women have lack of spiritual power. They are [illegible] their [illegible]. Feminine role [illegible] Indian culture. Here is an effort to explore the empowerment of women in Indian culture.

Key Words: empowerment, culture, *Śakti*, [illegible], organization, [illegible], rights, [illegible] principles.

Introduction:

The word women empowerment essentially means that the women have the power or capacity to regulate their day-to-day lives in the social, political and economic terms – a power which enables them to move from the periphery to the centre stage. In Indian culture all power *Śakti* is female. *Śakti* is the fundamental strength of the feminine that means 'power' and 'strength' which [illegible] Goddess. [illegible] words for strength and power are feminine. All male [illegible] for the feminine. In Vedic times women and men were equal as far as education and religion was concerned. Women participated in the public sacrifices alongside men. Among the many societies that can be found in the world, we have seen that some of the most venerating regard for women has been found in Indian society. Throughout the many years of Indian culture, women have always been given the highest level of respect and freedom [illegible]. There is a saying: *Yatra nāryastu pūjyante ramante tatra devatāḥ* (Manusmṛti 3.56)

The status of women in India has been subject to many great changes over the past few millennia. From equal status with men in ancient times through the low points of the

medieval period. In this way, the change in the attitude towards women in India was due to a loss of culture and of the true Vedic standards. Thus, it should be easy to see the need for organisations that will keep and teach the proper views, which were once a basic part of the great Vedic traditions. [illegible] made to the promotion of equal rights by many reformers in modern times. The principle of gender equality is enshrined in the Indian constitution in the preamble, fundamental rights, fundamental duties and directive principles. The constitution not only grants equality to women but also empowers the state to adopt measures, of positive discrimination in favour of women. Within the framework of democratic polity, our laws, development policies, plans and programs are aimed at women's advancement in different spheres. Women of India are now uplifted and emancipated and granted equal status with men in all walks of life-political, social, domestic and educational.

1. Philosophical base of the Unity of Man and Woman:

The unity of man and woman is explained in Vedic and classical literature. The idea of equality was most forcibly expressed in the Rig Veda (5.61.8). The wife and husband, being the equal halves of one substance, are equal in every respect; therefore both should join and take equal parts in all works, religious and secular. According to Bṛhadāraṇyakopaniṣad, at the starting of cosmos *Prajāpati* create man from his half part of [illegible] and women from rest half part.[1] Śrīmadbhāgavata explained the *Prajāpati* has [illegible] into two part [illegible]. Women from left part and man from right part. *[illegible]*[2]

This also mentioned in Manusmṛti as —

[illegible]

[illegible] (1.32)

The seed of these thought is found in Bṛhadāraṇyakopaniṣad – *Sa vai naiva reme, tasmādekākī na ramate sa dvitīyamaicchat sa haitāvānāsa yathā strīpumāṃsau sampariṣvaktau sa imamevātmānaṃ dvedhā apātayat tataḥ patiśca patnī [illegible]*[3]

It is clearly explained that the '*Prajāpati*' himself converted into '*Pati*' and '*Patnī*'. In his famous commentary on Bṛhadāraṇyakopaniṣad, Ācārya Śaṅkara explained the etymology of the words '*Pati*' and '*Patnī*' as *[illegible]*[4]

This concept of the spiritual equality of souls [illegible] the status of women [illegible] Vedic [illegible]. [illegible] 'Yājñavalkya' and '[illegible]' [illegible]. [illegible] jointly [illegible]. She sit left side of her husband. [illegible] Rāmāyaṇa Vālmīki [illegible] the unity of men and women.[7] The equal status of women and men [illegible] in classical literature. According to Kālidāsa women and men are created from the Ātmasvarūpa of Brahma.

[illegible]

[illegible]

Thus we came to know that in Indian culture Vedic and classical literature everywhere origin of women and men is from one Ātmatattva. By this we can conclude that naturally both women and men are equal and have same importance in society.

2. The Feminine Divinities:

In the Vedic tradition it is common to see the pairing of the Vedic male Gods with a feminine counterpart, thus combining both sets of powers and qualities that each would have. We can easily see this in *Rādhā Kṛṣṇa, Sītā Rāma, Lakṣmī Viṣṇu, Durgā Śiva, Sarasvatī Brahmā, Indrāṇī Indra,* etc. Thus, we have the combination of male and female Divinities that make the complete balance in the divine spiritual powers. Through the medium of pure affection, the feminine Divinities have been able to [illegible] the most powerful [illegible] known to creation, especially those of evil. The divine mystery of life is that the most powerful force in the universe [illegible] by love and that love is most completely [illegible] through the feminine energy and personality. For example, "Durgā" means the one who is difficult to know. Yet, being considered the mother of the universe, or the personification of the material energy (*[illegible]*) [illegible] her children can approach her through love. And she will [illegible] with love. [illegible] the form of *Mahiṣāsuramardinī*, or the one who destroyed the dark demon known as *Mahiṣāsura*. She was generated out of the anger and energy of *Brahmā, Viṣṇu, Śiva*, and others, and was the combination of their powers. They could not defeat the demon, but the Goddess could. Symbolically, *Durgā* can destroy the demonic darkness of the mode of ignorance (*[illegible]*) and the quality of laziness within each of us.

3. Socio-economic Empowerment of Women

3.1. Family Status

In Rig Veda women are considered as home [illegible]. On this basis there is a saying in Sanskrit.

[illegible]

[illegible]

It means *grihini* is called as home. After marriage she is required to serve her husband, father-in-law, mother-in-law and [illegible] presiding her as *grihalakshmi* she [illegible]. No married man shall perform any religious rite, ceremony or sacrifice without being joined in by his wife. The wife is considered a partner and partner in the spiritual life of her husband. She is called, in Sanskrit, *Sahadharmini* 'spiritual helpmate'. This idea is very old, as old as the Hindu religion. Motherhood is considered the greatest glory of Hindu women. The Taittiriya Upanishad teaches, '*Matridevo bhava*' - 'Let your mother be God to you.'

According to K. Guru Dutt, the position of women in ancient India was free and emancipated, and women were well educated and respected members of society. A wife shared all her husband's privileges and was his companion and helpmate in his activities. The position of women was far better than in other countries of ancient times. How else could it be in a culture which placed the Mother before the Father in priority for reverence? *Matridevo bhava* - was the first Upanishadic exhortation to the young. So far as we know, Hinduism is the only religion whose symbolism places the Feminine on a par with the Masculine in the profound concept of *Shiva-Shakti* culminating in the image of *Ardhanarishwara*. The Hindu has revered his country as his Motherland - *Bharat Mata*, and his nationalism has grown up from the sacred Mantra - *Vande Mataram*.

According to Manu and Yajnavalkya women have right of inheritance -

[illegible]

[illegible]

In Vedic times women were engaged in industry. The [illegible] kinds of cloth present in Atharvaveda are mentioned. Those [illegible] like *Peshaskari*, *Rajayitri*, *Bidalakari*, *Kantakikari*, *Ayugakari* [illegible] especially done by women. In exploiting the important role played by women in electronics, information technology and food processing and agro industry and textiles has been crucial to the development of these sectors. They would be given comprehensive support in terms of labour legislation, social security and other support services to participate in various industrial sectors.

3.2 Women Education

In Vedic times women and men were equal as far as education and religion was concerned. Girls had Upanayana performed for them and carried out the sandhyā rites. A young daughter who has observed *Brahmacarya* should be married to a bridegroom who is learned like her.[?] According to Kāśikā there was *Upanayana Saṃskāra* for women and they were get higher education.[?] Apparently in early Vedic times women also received the sacred lore and could study the Vedas. According to the Hārītasmṛti two classes of women called *brahmavādinīs* remained unmarried and spent their lives in study and [illegible] and *Sadyovadhūs*.[?] Pāṇini's distinction between *ācāryā* (a lady teacher) and *ācāryānī* (a teacher's wife), and *upādhyāyā* (a woman preceptor) and *upādhyāyānī* (a preceptor's wife) indicates that women at that time could not only be students but also teachers of sacred lore. He mentions the names of several noteworthy women scholars of the past such as *Kaṭhī*, *Kalāpī* and *Bahvṛcī*. The Upanisads refer to several women philosophers who disputed with their male colleagues such as *Vācaknavī Gārgī*, who challenged *Yājñavalkya*. Women, who once enjoyed an honoured position and are found in the Upanishads conversing freely and discussing the highest philosophical topics. Some among the seers to whom the hymns of the Rig Veda were revealed were women *[illegible]* and *[illegible]*. There are a number of women who are considered as the seers of mantras, like *Sarasvatī*, *[illegible]*, *Viśvavārā*, *Apālā*, *Ghoṣā*, *Lopāmudrā* and so on. It is said that *[illegible]*, the daughter of Rsi Śāṇḍilya, spent her whole life in the study of the Vedas. Likewise, another girl *Śrutavatī*, the daughter of Sage Bharadvaja, also devoted her life to the study of the Vedas.

The names of *Gārgī* and *Maitreyī* are too well known as great scholars of Vedic. The Rāmāyaṇa describes the performance of *Sandhyā* and *[illegible]* by Kauśalyā and Sītā. The wife was a regular participant in the sacrificial offerings of the husband. Gobhila Gṛhya Sūtra state that the wife should be educated to be able to take part in sacrifices.[?]

3.3 Art

The description of dance, sing, musical instrument and dancing by *gaṇikā* shows their excellence in this area.[?] Kauṭilya's Arthaśāstra explains three types of arts-dance, song and musical instrument.[?] According to Baudhāyana Gopatha Brāhmaṇa Ātmā is purified by the arts.[?] Girls were educated with fine arts. In Rig Veda Goddess Uṣā is presented as

family dance. In Rig Veda, the family dance is described as all elder and younger brothers and sisters participated in it.

3.4 Military

In Rigveda and Yajurveda woman's presence as soldiers is described. In Yajurveda she is called as [illegible]. In Rigveda she is address with the names [illegible]. [illegible] is called leader. She was a great warrior.

She is considered as military Goddess [illegible]. Thus Hindu women were allowed to go to the battle fields to fight against enemies. *Saramā*, one of the most powerful women of her days, was sent by her husband in search of robbers. She discovered their hiding place and then destroyed them. There were *śaktikīs* or female spear bearers according to Patanjali's *Mahābhāṣya*, and women soldiers armed with bows and arrows in the Maurya army, according to Kautilya's Arthaśāstra. The Greek Ambassador Megasthenes mentions Chandragupta Maurya's women bodyguard. Thus war was not the only sphere of the men.

4. Political Empowerment of Women

Although the rulers in India mostly were male yet we find some sources about women rulers in Vedas. [illegible] described [illegible] as the ruler. [illegible]

Some kingdoms in the ancient India had traditions such as *nagarvadhu* (bride of the city). Women competed to win the coveted title of the *nagarvadhu*. Amrapali is the most famous example of a *nagarvadhu*.

The Indian woman's position in the society further deteriorated during the medieval period. In spite of these conditions, some women excelled in the fields of politics, literature, education and religion. Razia Sultana became the only woman monarch to have ever ruled Delhi. The Gond queen Durgavati ruled for fifteen years, before she lost her life in a battle with Mughal emperor Akbar's general Asaf Khan in 1564. Chand Bibi defended Ahmednagar against the mighty Mughal forces of Akbar in the 1590s. Jehangir's wife Nur Jahan effectively wielded

imperial power and was recognized as the real force behind the Mughal throne. The Mughal princesses Jahanara and Zebunnissa were well known poets, and also influenced the ruling administration. Shivaji's mother, Jijabai was deputed as queen regent, because of her ability as a warrior and an administrator. In South India, many women administered villages, towns, divisions and heralded social and religious institutions.[illegible]

In modern time the Constitution of India guarantees to all Indian women equality (Article 14), no discrimination by the State (Article 15(1)), equality of opportunity (Article 16), equal pay for equal work (Article 39(d)). In addition, it allows special provisions to be made by the State in favour of women and children (Article 15(3)), renounces practices derogatory to the dignity of women (Article 51(A) (e)), and also allows for provisions to be made by the State for securing just and humane conditions of work and for maternity relief (Article 42). The feminist activism in India picked up momentum during late 1970s. One of the first national level issues that brought the women's groups together was the Mathura rape case. The acquittal of policemen accused of raping a young girl Mathura in a police station, led to a wide scale protests in 1979–1980. The protests were widely covered in the national media, and forced the Government to amend the Evidence Act, the Criminal Procedure Code and the Indian Penal Code and introduce the category of custodial rape. Female activists united over issues such as female infanticide, gender bias, women health and female literacy. Since alcoholism is often associated with violence against women in India, many women groups launched anti-liquor campaigns in Andhra Pradesh, Himachal Pradesh, Haryana, Orissa, Madhya Pradesh and other states. Many Indian Muslim women have questioned the fundamental leaders' interpretation of women's rights under the Shariat law and have criticized the triple talaq system. In 1990s, grants from foreign donor agencies enabled the formation of new women-oriented NGOs. Self-help groups and NGOs such as Self Employed Women's Association (SEWA) have played a major role in women's rights in India. Many women have emerged as leaders of local movements. For example, Medha Patkar of the Narmada Bachao Andolan. The Government of India declared 2001 as the Year of Women's Empowerment (Swashakti). The National Policy For The Empowerment Of Women came was passed in 2001.

Conclusion :

By above discussion it is clear that in ancient time women had respected place in various fields like education, spiritual, social and political etc. Women were considered as the base of society. In the medieval time there were some bounds on women for keeping the chastity

which became the [illegible] in society and still [illegible] To give women the respect [illegible] some efforts were made by reformers in modern times. [illegible] women were empowered in Indian culture and today women have to need for own identification which can be only obtained through education and practicing Indian cultural values.

References:

[illegible] Part [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] Mahabharata [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] 241-242
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] Rig Veda [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Reference Books:

- [illegible], New Delhi, 2011.
- Kashyap, R.L., [illegible], Sri Aurobindo Kapali Shastri Institute of Vedic Culture, Bangalore, 2005.
- Swami [illegible], [illegible], Vijaykumar [illegible], Delhi, [illegible]
- Dutt, M.N. (Ed.), [illegible], [illegible] Publication, New Delhi, 2008
- Mishra, [illegible], [illegible], Shri Lal Bahadur Shastri Rashtriya Sanskrit Vidyapeetha, New Delhi, [illegible]

- Pandey, Umesh Chandra, *Āpastamba Dharma Sūtra*, Chaukhambha Sanskrit Pratishthan, Delhi, 2006
- Pandey, Umesh Chandra, *[illegible] Dharma Sūtra*, Chaukhambha Sanskrit Pratishthan, Delhi, 2009
- Adhikari, Amal Sarkar, *Kāma Sūtra of Vātsyāyana*, Chaukhambha Publications, Delhi, 2014
- Jolly, Julius, *Nārada Smṛti*, Asiatic Society, Calcutta, 1881.
- Jolly, Julius, *Bṛhaspati Smṛti*, Oxford University Press, New York, 1889
- Shastri, Raja Kishor, *Manu Smṛti*, Chaukhambha Publication, Delhi, 2015
- Vidyarnava, Kashinath, *Manu Smṛti*, Bharatiya Sanskrit Sansthan, New Delhi, 2017
- Ṛgvedasaṃhitā with Sāyaṇa Bhāṣya, Gita Press, Gorakhpur.
- Tandon, Dr. Kiran, 1996, *Bhāratīya Samāja*, Eastern Book Linkers, Delhi 2005.
- Bhargava, Rajeev, 2008, *Politics and Ethics of the Indian Constitution*, Oxford University Press, p.45
- Dutt, Romesh C., *The Civilization of India*, p 21-22
- Durant, Will, *Story of Civilization: Our Oriental Heritage*, MJF Books, 1935 p.401
- Dwivedi, Dr. Kapildev, *[illegible]*, Vishwabharati Anusandhan Parishad, Gyanpur(Bhadohi) U.P. 2002
- Altekar, A.S., *The Position of Women in Hindu Civilization*, Motilal Banarsidass Publishers, Delhi, 2005
- Mishra, Vidyaniwas, *Bhāratīya Nyāya*, Rajpal Prakashan, Delhi, 1997
- Radhakrishnan, S., Religion and Society, South Asia Books, Delhi, 1995.
- *Oxford Advanced Learner's Dictionary*, Oxford University Press, 9th Revised edition, 2015
- *Macmillan Dictionary English Dictionary*, MacMillan & A.C. Black, 2 Pap/Cdr edition, 2007.

योग दर्शन का विश्वव्यापी स्वरूप

डॉ. नवनीत कुमार

भौतिकता एवं वैज्ञानिकता की दौड़ में आज मानव अत्यन्त व्यग्र है। किन्तु मनोवैज्ञानिक, नैतिक, धार्मिक [illegible] दृष्टि से उसका विकास अवरुद्ध हो रहा है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में तरह-तरह की समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। [illegible] की तुलना में [illegible] आज जीवन में कई प्रकार की भयानक शारीरिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक आदि व्याधियाँ उत्पन्न हो रही हैं। ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति ऐसा वस्तुनिष्ठ समाधान का मार्ग ढूंढ रहा है। ऐसे में योग विद्या विश्वव्यापी समाधान के रूप में उभर रही है क्योंकि योग [illegible] की सर्वांगीणता को स्वीकार करता है। गरुड़ पुराण में कहा गया है –

भवतापेन तप्तानां योगोहि परमौषधम्।

अर्थात् विभिन्न प्रकार के सांसारिक कष्ट पीड़ा तथा दुःखों से पीड़ित व्यक्तियों के लिए योग ही एक मात्र परम औषधि है।

योगदर्शन की महत्ता एवं योगनिर्दिष्ट विधियों का वर्णन श्रुति, स्मृति, पुराणादि धार्मिक ग्रन्थों में व्यापक रूप से उपलब्ध होता है। वैदिककाल भारतीय संस्कृति का सर्वोत्कृष्ट समय माना जाता है। संहिताओं एवं उपनिषदों आदि में योग का विशद वर्णन देखने से उसकी अत्यन्त प्राचीन रूप से ही [illegible] ज्ञात होता है। ऋग्वेदीय संहिताओं में योग-ध्यान-सूचक मन्त्र बहुलता से उपलब्ध होते हैं और उसी प्रकार उपनिषदों में भी ब्राह्मण एवं आरण्यकों में भी योग-सम्बन्धी वर्णनों की कमी नहीं है। निःसंदेह उपनिषदें प्राचीन योग-विद्या का स्रोत हैं। मोहनजोदड़ो की खुदाई में [illegible] मूर्तियों की उपलब्धि से भी उसकी प्राचीनता प्रकट होती है। महाभारत, श्रीमद्भगवद्गीता, विष्णुपुराण, [illegible] स्मृति, [illegible] आदि में योग का विस्तृत विवरण मिलता है। जैन ग्रन्थों में भी योग-सम्बन्धी विचार वर्णित हैं। [illegible] ईसाइयत के अन्तर्गत तथा [illegible] ग्रन्थों में भी [illegible] का उल्लेख मिलता है। [illegible] की व्याख्या के अनुसार [illegible] सम्बन्धित है। [illegible] बौद्ध ग्रन्थों में योग का विशद वर्णन मिलता है। बौद्ध धर्म के मौलिक सिद्धान्त [illegible] हैं जिनमें [illegible] योग दर्शन [illegible] के तुल्य [illegible] है, जिसका अनुसरण करते हैं। इसके अतिरिक्त [illegible] जैन योग-दर्शन में योग का विशेष वर्णन है। तथा षड्-दर्शन बौद्ध, जैन सहित अन्य दर्शनों में ही योग का [illegible] महत्त्वपूर्ण स्थान है। [illegible] भारतीय [illegible]

जन-कल्याण के व्यावहारिक क्षेत्र में [illegible]

[illegible] को [illegible], किन्तु योग [illegible] की व्याख्या [illegible] आदि [illegible] के [illegible] अंग हैं। योग में [illegible] उनके [illegible] की [illegible] पर ही योग एवं मनोचिकित्सा का [illegible] हुई प्रतीत होती है। किन्तु पाश्चात्य मनोचिकित्सा जहाँ समाप्त होता है, वहाँ से भारतीय मनोचिकित्सा का प्रारम्भ होता है।

योग-चिकित्सा के सिद्धान्त [illegible] के [illegible] [illegible] मानसिक होते हैं और उनके प्रभाव से शरीर में जो विकार उत्पन्न होते हैं [illegible] [illegible] योग तो मन से पूर्णतः सम्बद्ध है। [illegible] जैसे कि [illegible] विश्लेषण वाले भी मानते हैं, [illegible] शारीरिक [illegible] [illegible] सम्भव है। [illegible] मनोविज्ञान के [illegible] अचेतन मन, [illegible] मन, [illegible], [illegible] भी योग के क्षेत्र के अन्तर्गत ही हैं। [illegible] हुए प्रतीत होते हैं।

डा. [illegible] ने [illegible] में लिखा है कि योग तथा मनोविश्लेषण दोनों ही मानसिक चिकित्सा पद्धतियाँ हैं किन्तु इन दोनों में [illegible] अन्तर है — "Yoga and Psycho-analysis are both therapeutic systems. Yoga goes much further than that."

योग दर्शन के अतिरिक्त अन्य [illegible] ग्रन्थों में [illegible] मिलता है, किन्तु योग के [illegible] [illegible] [illegible] के सिद्धान्तों [illegible] है। [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] के निर्णय, [illegible] आदि [illegible] [illegible] अनेक सिद्धान्तों के बीज [illegible] में विद्यमान हैं। [illegible] मनोवैज्ञानिकों [illegible] योग द्वारा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] की बहुत आवश्यकता है।

महर्षि पतञ्जलि ने ईसा से 200 वर्ष पूर्व 'योग दर्शन' की रचना की। पतञ्जलि कृत 'योग सूत्र' योग जगत का [illegible] ग्रन्थ है जो आज सम्पूर्ण विश्व का मार्गदर्शन कर रहा है। [illegible] का प्रथम सूत्र है 'अथ योगानुशासनम्'[15] अब योग की शिक्षा देने वाले ग्रन्थ का प्रारम्भ करते हैं। [illegible] पर [illegible] गुरुकुलों में, [illegible] में, आश्रमों में, विभिन्न योगाचार्यों द्वारा पढ़ाया जा रहा था; [illegible] माला के [illegible] बिखरे हुए थे पतञ्जलि ने इसे एक [illegible] में [illegible] का कार्य किया [illegible] यह ग्रन्थ चार पादों में विभक्त है और इसमें 195 सूत्रों [illegible] माना [illegible] आत्मानुभव से [illegible] हुए हैं।

योगेन चित्तस्य पदेन वाचां, मलं शरीरस्य च वैद्यकेन।
योऽपाकरोत्तं प्रवरं मुनीनां, पतञ्जलिं प्राञ्जलिरानतोऽस्मि॥[16]

[illegible] के चित्त की शुद्धि [illegible] मन की शुद्धि [illegible] शरीर की शुद्धि [illegible] जो [illegible] वृत्ति [illegible] को भी [illegible] होता है [illegible] चित्त की शुद्धि करता है न कि शरीर की। चित्त में मन, बुद्धि और अहंकार [illegible] चित्त [illegible] अत्यन्त सूक्ष्म है।

[illegible] का शरीर पर प्रभाव [illegible] है [illegible] कहा गया है कि [illegible] करने वाले का शरीर [illegible] और न ही [illegible] आता है [illegible] प्रकाश डालते हुए [illegible] में लिखा है—

न तस्य रोगो न जरा न मृत्युः प्राप्तस्य योगाग्निमयं शरीरम्॥ [illegible]

अर्थात् [illegible] रोग [illegible] कभी [illegible] हो [illegible] कारण [illegible] विभिन्न [illegible] में भी सम्पूर्ण [illegible] [illegible] है [illegible]

[illegible] का [illegible] और [illegible] सिद्ध होना अत्यन्त [illegible] है। [illegible] में भी [illegible] का पालन न करके [illegible] का [illegible] है, [illegible] का [illegible] भी [illegible] नहीं है [illegible]—

यमान् सेवेत सततं न नियमान् केवलान् बुधः।

यमान् पतत्यकुर्वाणो नियमान् केवलान् भजन्॥ [illegible]

'बुद्धिमान् पुरुष नित्य निरन्तर [illegible] का पालन [illegible] का [illegible], केवल नियम का नहीं, [illegible] का पालन न करके, केवल नियमों का [illegible] है [illegible] होता है। [illegible] [illegible], सत्य, [illegible] और [illegible] हैं। [illegible] [illegible] अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह इन पाँचों का नाम [illegible] है। [illegible] जाति, [illegible] और [illegible] काल में पालन होने के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सार्वभौम महाव्रतम्। [illegible]

[illegible] सार्वभौम पालन [illegible] है। [illegible] के [illegible] से [illegible] और [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] आदि [illegible] के [illegible] भी [illegible] के [illegible] में [illegible] महत्त्व है।

[illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] एवं [illegible] आदि [illegible] के पालन में [illegible] प्रकार [illegible] न [illegible] [illegible] महत्त्व होता है।

नाभि, नासा, पर्व, [illegible] जिह्वा, मुकुट, [illegible] एवं [illegible] आदि के भेदों से [illegible] में किसी प्रकार का भेद न होना [illegible] महत्व रखता है।

जाति, देश, कुल, शब्द, काल, निवास, व्यवसाय, कुल, शिक्षा, आजीविका आदि के भेदों से [illegible] में किसी प्रकार का भेद न रखना [illegible] महत्वपूर्ण है [illegible] किसी देश [illegible] किसी जीव का [illegible] हिंसा, असत्य, चोरी, व्यभिचार, आदि का आचरण न करना तथा परिग्रह आदि न रखना 'सार्वभौम महाव्रत' है।

ज्योतिष, आयुर्वेद, ब्रह्मचर्य जैसे अनेक वैज्ञानिक पद्धतियों में [illegible], द्वेष, ईर्ष्या, [illegible] व क्रोध आदि का त्याग करने का कोई उपाय नहीं है, परन्तु योग एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा इन सभी को नियंत्रित [illegible] किया जा सकता है। योग दर्शन केवल भारत में ही नहीं, अपितु विदेशों में भी [illegible] है। इसकी उपयोगिता, व्यावहारिकता एवं [illegible] सिद्धांतों ने विदेशों को भी आकर्षित किया और वे भी भारत में आकर योग [illegible] करते हैं।

[illegible] के साधुओं [illegible] आदि में [illegible] योग ध्यान [illegible] देशों में [illegible] योगिक क्रियाओं का [illegible] महत्व एवं [illegible] आदि में [illegible] अथवा [illegible] आदि [illegible] हैं। ये केन्द्र प्रयोगशालाओं के रूप में खुले हैं तथा इनमें भारतीय [illegible] के निर्देशन में, वहाँ के निवासी भारतीय [illegible] से आसन, प्राणायाम, ध्यान आदि का अभ्यास करते हैं। योग [illegible] मनोवैज्ञानिक [illegible] ज्ञान के कारण [illegible] योग के सिद्धान्तों [illegible] को स्वीकार करते हैं। योग को [illegible] का विज्ञान कहा गया है।

सारांश— [illegible] महर्षि पतंजलि [illegible] के साथ [illegible] करते हैं, [illegible] का आग्रह है— '[illegible]'। [illegible] कि [illegible] से [illegible] दर्शन करें। [illegible]

योग दर्शन ने हमेशा से ही विद्वानों, दार्शनिकों को अपनी ओर आकर्षित किया है। यह इसी बात का द्योतक है कि [illegible] से लेकर आधुनिक युग के विद्वानों ने योग दर्शन को समझने व समझाने के लिए टीकाएँ व भाष्य लिखे हैं। यह क्रम अनवरत रूप से आज भी चल रहा है। योग दर्शन और [illegible] आदि [illegible] लिखी है। आधुनिक युग में स्वामी [illegible], श्री बी.के.एस. अयंगार, आचार्य रजनीश, डॉ. [illegible], डॉ. [illegible] इत्यादि अनेकों नाम हैं जिन्होंने योग दर्शन एवं योग साधना पर कार्य किये हैं।

आधुनिक युग में व्यक्ति, अध्यात्म और आत्मज्ञान का विकास [illegible] पड़ा है। योग एक [illegible]

[illegible] है जिसके [illegible] की [illegible] कर सकता है।

संदर्भ :

[illegible]

2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible] – पृ. 66
6. [illegible] – 12
7. [illegible]
8. [illegible]
9. [illegible]
10. [illegible]
11. [illegible] – पृ. 44
12. [illegible] for the East and West [illegible]
13. [illegible]
14. [illegible]
15. [illegible] – 2012
16. [illegible]
17. [illegible]
18. [illegible]
19. [illegible] 2/30
20. [illegible]
21. [illegible] for the East and West [illegible]
22. [illegible]

[illegible]

[illegible]

गांधीवाद एवं भारत

डॉ. ज्योति गुप्ता

Non Violence is the greatest force at the disposal of mankind. It is mightier than mightiest weapons of destruction devised by the ingenuity of man.

अहिंसा को [illegible] महात्मा गांधी के [illegible] एवं प्रयोगों (Concept Practice) का [illegible] है। [illegible] कोई [illegible] दार्शनिक नहीं है, [illegible] दार्शनिक [illegible] व्यावहारिक जीवन के लिए [illegible] एक नवीन दृष्टिकोण [illegible] किया है।

[illegible]

[illegible] साम्प्रदायिकता, [illegible] जैसी अनेक [illegible] हैं जिनके [illegible] के [illegible] गांधी ने [illegible] किया एवं [illegible] एक नूतन [illegible] का [illegible] किया। गांधी ने [illegible] का [illegible] किया, [illegible] समानता पर बल दिया, अस्पृश्यता, [illegible] इत्यादि पर उनके [illegible] क्रांतिकारी, [illegible] तथा [illegible] किया।

उनके अनुसार [illegible] दृष्टिकोण [illegible] है। [illegible] वाली वस्तु मानते थे, [illegible] से [illegible] थी। [illegible] नहीं थे।

[illegible] के [illegible] समाज के [illegible] की [illegible]

के अनुसार, उनके कर्तव्यों के प्रति [illegible] वैज्ञानिक [illegible] [illegible] की भावना पैदा [illegible]

गांधी का अस्पृश्यता निवारण [illegible] आन्दोलन की दृष्टि से भारत के इतिहास की एक महत्वपूर्ण [illegible] का आरम्भ था। अस्पृश्यता के संबंध में उनका कहना था कि आजकल हिन्दुओं में अस्पृश्यता [illegible] आती है, वह [illegible] एक [illegible] है। अस्पृश्यता [illegible] नहीं है, [illegible] हमारे [illegible] की [illegible] का [illegible] है। अस्पृश्यता [illegible] मनुष्य के खिलाफ किया गया [illegible] अपराध है, एक [illegible] का [illegible] है, जो हिन्दू धर्म का [illegible] का ही [illegible] लगा। [illegible] वाली अस्पृश्यता को उन्होंने [illegible] का [illegible] है। वे कहते थे कि अस्पृश्य को [illegible] [illegible] हैं। [illegible] [illegible] उनकी सेवा के लिए अस्पृश्य न [illegible] जाये बल्कि उन्हें [illegible] समाजसेवी [illegible] चाहिए।

इस प्रकार के उनके [illegible] कार्यों से [illegible] में [illegible] के [illegible] को [illegible] में [illegible]। गांधी के विचार [illegible] से [illegible] नहीं थे, उनको बृहद् रूप में [illegible] का [illegible] एवं स्वदेश में लागू एवं [illegible] निर्माण की [illegible] है। गांधी की [illegible] [illegible]

आर्थिक [illegible] को [illegible] करते हेतु, [illegible] के [illegible] से उन्होंने जनता को लघु एवं कुटीर उद्योग की ओर [illegible] किया। [illegible] का [illegible] उद्योग [illegible] का है। [illegible] देश की [illegible] की दृष्टि से महत्वपूर्ण योगदान है। [illegible] में [illegible] नहीं होगी। [illegible] हैं। [illegible] है कि [illegible] शिक्षा [illegible] रहा है। उनके इस प्रकार के दार्शनिक विचार प्रत्येक व्यक्ति में कर्मनिष्ठा [illegible] पैदा करते थे।

[illegible] एवं [illegible] उनके विचार शिक्षा व्यवस्था पर भी [illegible] हुए हैं। उनके अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जो आत्मनिर्भर बनाए। हृदय, मस्तिष्क एवं शरीर का [illegible] करे।'

आज हमारे देश की जो स्थिति [illegible] करने वाली [illegible] है, वह [illegible] नीति [illegible] है [illegible]. [illegible] करने वाला भी नहीं है। गांधी ने [illegible] एवं बुनियादी शिक्षा पर बल दिया, यदि हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था का पुनः [illegible] किया गया होता तो बेरोजगारी जैसी समस्या कदाचित् उत्पन्न ही नहीं होती।

इस प्रकार गांधी के सत्याग्रह, [illegible], अस्पृश्यता, शिक्षा [illegible], [illegible], एक [illegible] पहनना, [illegible], इस प्रकार के [illegible] के [illegible] पर दिये गये [illegible] ने देश की [illegible] को आमूल [illegible] की तथा [illegible] उस [illegible] के [illegible] का [illegible] किया। [illegible] उच्च विचार [illegible] आदर्श की व्यावहारिकता का [illegible] पर [illegible] किया।

इन विचारों के अतिरिक्त सत्य एवं अहिंसा गांधी दर्शन के मूल एवं सबसे बड़ी शक्ति मानी जाती है। गांधी ने दार्शनिक आचार्यों से सनातन [illegible] एवं [illegible] से सत्य एवं अहिंसा की [illegible] एवं [illegible] से [illegible] मानव जीवन में इनकी व्यावहारिकता [illegible] अहिंसा के [illegible], [illegible], [illegible] तथा [illegible] के [illegible], [illegible], [illegible] आदि [illegible] जैसी [illegible] को [illegible] के आधार पर [illegible] किया। [illegible] था कि सत्य एवं अहिंसा [illegible] होंगी।

वस्तुतः गांधी की अहिंसा एक सामाजिक सम्प्रत्यय (Social Concept) है, जिसे वे मानव अस्तित्व, उसके [illegible] एवं [illegible] के लिए [illegible] आवश्यक मानते थे। [illegible] मानव [illegible] का [illegible] ही अस्तित्व में [illegible] नहीं, यदि ऐसा न हुआ होता तो मानव [illegible] में [illegible] अपने अस्तित्व को समाप्त कर चुका होता। [illegible] सत्य को [illegible] करते हैं, तो [illegible] में एक दार्शनिक [illegible] है। उनके अनुसार [illegible] में से [illegible] एक का चयन किया जाये तो वह सत्य [illegible] ही होगा [illegible] वस्तुतः सत्य ही ईश्वर है [illegible]. [illegible] है और अहिंसा [illegible] उन्होंने अन्याय के विरुद्ध सत्याग्रह एक अचूक [illegible] के रूप में प्रयोग किया। [illegible] गांधी [illegible] दर्शन की सबसे बड़ी देन है। गांधी ने सत्याग्रह के [illegible] में [illegible] तथा [illegible] जैसे शब्दों का प्रयोग किया तो सत्याग्रह की विशेषता [illegible] है। [illegible] गांधी [illegible] सत्याग्रह [illegible] हैं जिनमें [illegible], [illegible], असहयोग, [illegible], [illegible], [illegible] तथा [illegible] (Migration) शामिल हैं।

यों तो सत्याग्रह एवं अहिंसा के अतिरिक्त गांधी के अधिकांश विचारों का भारत की सामाजिक आर्थिक एवं [illegible] में [illegible] प्रभाव पड़ा, वस्तुतः इन विचारों ने [illegible] की [illegible] से [illegible] हमारे [illegible] में [illegible] है [illegible] दी गई

कि भारत को आजादी अहिंसा के बल पर मिली [illegible] गांधी के लिए यहां भी याद है कि [illegible] हमें आजादी बिना खड्ग बिना ढाल, [illegible] के संत तूने कर दिया कमाल [illegible] 1942 भारत छोड़ो आन्दोलन ने अंग्रेजों को गहरा धक्का अवश्य दिया, पर इस बात [illegible] आजादी के इतने वर्षों बाद [illegible] निष्कर्ष है कि [illegible] में आजादी अहिंसा के बल पर ही मिली है। [illegible] गांधी के अहिंसावादी, [illegible] के [illegible] स्वतन्त्रता संग्राम एवं स्वतन्त्रता प्राप्ति में यद्यपि महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी, परन्तु निर्णायक [illegible] द्वितीय विश्वयुद्ध [illegible] जिसने ब्रिटेन एवं ब्रिटिश [illegible] इस पुस्तक का [illegible] पूरे ब्रिटेन के [illegible] आर्थिक [illegible] द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद [illegible] नहीं [illegible] कि [illegible] भारत [illegible] अपने अन्य उपनिवेशों [illegible] उपनिवेशों ने अंग्रेजी [illegible] नहीं [illegible] था, द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद उनको भी स्वतन्त्र [illegible] [illegible] अंग्रेजों ने भारत पर शासन किया। उनको देश के बाहर निकालना [illegible] [illegible] 1935 [illegible] देश [illegible] [illegible] गया।

भारत को स्वतन्त्रता अहिंसा के बल पर मिली है, यह मिथक [illegible] के द्वारा [illegible] जाता है वस्तुतः यह भारत के इतिहासकारों द्वारा प्रचलित किया गया है। 1947 के बाद से अब तक भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति के अन्य बाह्य एवं आन्तरिक कारणों को उपेक्षित रखा गया है [illegible] भारत की स्वतन्त्रता केवल आन्तरिक [illegible] का नहीं, [illegible] विश्व स्तर पर हुई [illegible] घटनाओं का भी योगदान है। भारत की स्वतन्त्रता की [illegible] [illegible] 1934 [illegible] के साथ युद्ध [illegible] [illegible] हुई। [illegible] बाद [illegible] द्वितीय विश्वयुद्ध में जर्मनी, जापान, इटली आदि का [illegible] [illegible] अन्य [illegible] देशों के उपनिवेशों [illegible] [illegible] स्वतन्त्रता में एक [illegible] [illegible] इन परिस्थितियों के बल पर 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन प्रारम्भ किया।

इसके अतिरिक्त [illegible] प्रमुख घटना हुई जिसको [illegible] [illegible] मिला। 18 फरवरी 1946 को मुम्बई विद्रोह (Bombay Mutiny) [illegible] H.M.S. तलवार [illegible] [illegible] [illegible] भारतीय सैनिकों के लिए [illegible] आजाद हिन्द फौज सहित अन्य राजनैतिक [illegible] की [illegible] [illegible] को [illegible] [illegible] रॉयल [illegible] ऑफ इण्डिया [illegible] नौसैनिकों के लिए [illegible] के लिए [illegible]

में अंग्रेजों का साथ नहीं दिया। इस घटना के [illegible] मूल्यांकन में [illegible] भारत ने अंग्रेजों [illegible] की बड़ी हिम्मत नहीं।

[illegible] शांति में गांधी के योगदान को नकारा नहीं जा सकता, किन्तु पूर्णतः अहिंसा के बल पर ही स्वतंत्रता मिली इस पक्ष को स्वीकारने में कुछ संकोच है। वस्तुतः आवश्यकता इस बात की है कि उन तमाम व्यक्तियों को पहचानकर उनके प्रति न्याय करना तथा इस ऐतिहासिक [illegible] के [illegible] का पुनर्मूल्यांकन करने की।

[illegible] जनजागरण के साथ [illegible] का [illegible] भी [illegible] तथा स्वतंत्रता के कर्णधार माने जाने वाले अहिंसा एवं शांतिवाद को ही भारत की नीति एवं सिद्धांत माना गया। इस [illegible] में मेरा मत [illegible] है कि 1947 के बाद भारत यदि भविष्य में होने वाली घटनाओं के प्रति सक्रियता दिखाता, न कि प्रतिक्रिया हेतु उनके घटित होने तक प्रतीक्षारत रहता, जैसा वस्तुतः भारत ने किया है। इसके साथ ही निकट भविष्य में होने वाले सीमा विवादों के विषय में पहले से ही सोचता तो शायद कश्मीर एवं हिमालयी सीमा की समस्या इस समय तक सुलझ चुकी होती। [illegible] अक्तूबर 1948 [illegible] अनिश्चित की स्थिति में थे, तब [illegible] भारत [illegible] [illegible] था। [illegible] जनमत संग्रह [illegible] को [illegible] [illegible] किन्तु [illegible] [illegible] [illegible] आत्मघाती [illegible] [illegible] ऐतिहासिक [illegible] देश के रूप में रहा, जो शांति मांग कर शांति प्राप्त करता है [illegible] शांति को [illegible] [illegible] की [illegible] के [illegible]। इसी का परिणाम हमें 1962 के भारत-चीन युद्ध के रूप में [illegible]। इस युद्ध के समय ही तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरू का 'हिन्दी चीनी भाई भाई' का [illegible] शांतिवाद एवं गुटनिरपेक्षता का [illegible] हो गया। नेहरू की मौत के समय गांधी [illegible] गांधीवादी व्यवस्थाओं के [illegible] [illegible] की नीति की, [illegible] क्रांतिकारियों द्वारा आलोचना की गई।

1950 में भारत के पड़ोस [illegible] तिब्बत की स्थायी स्वतंत्रता का [illegible] था। [illegible] की [illegible] पर आर्थिक एवं [illegible] के साम्यवादी चीन के [illegible] को बचाना चाहते थे। [illegible] हेतु श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने अपने भाई नेहरू [illegible] लिखा था [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] नहीं बनेगी। [illegible] [illegible] होगा। [illegible] [illegible] भी होगा, [illegible] तिब्बत [illegible] [illegible] [illegible] रहे। [illegible] [illegible] एवं [illegible] के [illegible] चीन आज भी हमारा शत्रु है।

[illegible] [illegible] की स्थिति [illegible] है। [illegible] [illegible] के [illegible] बंगाल [illegible] के लिए [illegible] किया गया, जिससे वहाँ भीषण अकाल पड़ा और ब्रिटिश शासन काल में वहाँ 30 लाख लोग मारे गये। [illegible] भारत का विभाजन हुआ [illegible] लाखों लोग मारे गये। इन बातों का जब चिन्तन होता है तो मन में एक ही प्रश्न आता है क्या भारत में [illegible] [illegible] इसी से उत्पन्न हुआ है?

गांधी [illegible] किसी भी धर्म [illegible] विरुद्ध, [illegible] नहीं है, [illegible] हो [illegible] में [illegible] की [illegible] हो। धर्म/मत के प्रति [illegible] अनावश्यक रूप से विवाद तो प्रत्येक व्यक्ति के मन [illegible] न करना अहिंसा का एक प्रमुख [illegible] है। अहिंसा का अर्थ [illegible] प्रेम से [illegible] है।

यदि अहिंसा न [illegible] पूर्ण [illegible] की है, तो पाकिस्तान [illegible] के साथ [illegible] हिन्दुओं की हत्या, [illegible] के समय [illegible] की घटनाएं न होतीं। गांधी ने असहयोग आन्दोलन [illegible] के [illegible] पर [illegible] अंग्रेजों के [illegible] हिन्दुओं को [illegible] खाली करने के लिए [illegible] गांधी ने [illegible] को सुधारने के लिए [illegible] हड़ताल का [illegible] किया [illegible] किन्तु [illegible] के लिए भी [illegible] सिद्धान्तों का [illegible] ऐसा प्रतीत होता है।

गांधी [illegible] के [illegible] है। भारत [illegible] के अभाव में उनकी [illegible] है।

जब भारत में [illegible] आतंकवादी हमले हो रहे हैं और [illegible] की [illegible] की महत्वाकांक्षा है, [illegible] भारत के [illegible] शक्तिशाली होना अत्यन्त आवश्यक है, तभी इन समस्याओं का [illegible] समाधान होगा।

यदि किसी एक व्यक्ति के विचार अनेक लोगों को प्रभावित करते हैं तो उनका [illegible] सिद्ध होना आवश्यक है। क्योंकि विचार का वृहद् रूप तभी [illegible] सकता है जब [illegible] विचार का [illegible] उसका भी [illegible] किया जाए। विचार की [illegible] के लिए समालोचना आवश्यक है।

सन्दर्भ–

1. [illegible] 1938 [illegible]
2. 22 अक्टूबर 1921–[illegible]
3. [illegible] 17 [illegible] 1937
4. 1932 में [illegible]
5. 27.10.1921 [illegible]

[illegible] आचार्य (संस्कृत)
[illegible] महाविद्यालय,
[illegible]

साहित्यकण्ठाभरणे श्लेषालङ्कारविमर्शः

प्रेमलाल मीन

[illegible]

"पदानामश्रुतौ यो वाक्ये ह्यन्यार्थता भवेत्।
पदश्लेषमन्या प्रयत्नतः कीर्तितो बुधैः॥
[illegible] च पदभङ्गेन [illegible] [illegible]।
सभङ्गोऽसौ नवो [illegible] पदश्लेषश्च मन्यते'॥"

[illegible]

"प्राचीमुखेन [illegible] प्रतीची
[illegible] दिशं प्रयाति।
लीलालकैर्निर्गलितैर्[illegible]सुन्दरीणां
[illegible] मुहुर्हि दिगङ्गनानाम्'॥"

[illegible]

[illegible] -

"आलोलदृग्भिरिव [illegible]
[illegible] प्रसन्नं [illegible]।
सायं पुनः सोऽस्तगिरिं प्रयातः
किमन्यथा [illegible]'॥"

[illegible]

[illegible]

"[illegible] प्रस्तुताः॥
[illegible] श्लेषः [illegible] पुनः॥
अर्थश्लेषं पुरस्कृत्य नानार्थप्रतिपादकं।
[illegible] नानाधर्मपुरस्कृतः॥
प्रकृतार्थेषु कविनिबद्धार्थेष्वप्रकृतेषु वा।
प्रकृताप्रकृतार्थेषु [illegible] स्फुटः॥"

[illegible]

[illegible]

अत्र अर्थश्लेषस्य उदाहरणं [illegible]

"[illegible] प्रकाशम्।
गुणप्रकर्षो [illegible]॥"

अत्र [illegible]

सन्दर्भाः–

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]

[illegible]
[illegible]

उपदेशेऽजनुनासिक इत् सूत्रघटकोपदेशपदार्थविमर्शः

अरुणी ठाकुर

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

धातुसूत्रगणोणादिवाक्यलिङ्गानुशासनम्।
आगमप्रत्ययादेशाः उपदेशाः प्रकीर्तिताः॥[1]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] यथा – [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कारणवाक्योपदेशपदार्थविमर्शः

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] समानशब्दो यः।

[illegible] स्यात् [illegible]॥

[illegible]

"[illegible]" इति सूत्रे "[illegible]" इति [illegible]

[illegible]

[illegible] इति [illegible]

[illegible] इति सूत्रे [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]" इति [illegible]

"[illegible]"

[illegible]

[illegible] इति [illegible]

[illegible]

गुरुलघुत्वसमीक्षणम्

[illegible] 'गुरुः सदा' [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सन्दर्भाः–

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]
7. [illegible]
8. [illegible]
9. [illegible]
10. [illegible]
11. [illegible]
12. [illegible]
13. [illegible]
14. [illegible]
15. [illegible]
16. [illegible]
17. [illegible]
18. [illegible]
19. [illegible]
20. [illegible]

[illegible]

ज्योतिश्शास्त्रस्य परिचयः

अपिनकुमारझा

महर्षिनारदानुसारेण अष्टादश ज्योतिःशास्त्रप्रवर्तकाः सन्ति। यथा–

[illegible]ाचार्यो वसिष्ठोऽत्रिर्मनुः पौलस्त्यलोमशौ।
मरीचिरङ्गिरा व्यासो नारदः शौनको भृगुः॥
च्यवनो यवनो गर्गः कश्यपश्च पराशरः।
अष्टादशैते गम्भीरा ज्योतिःशास्त्रप्रवर्तकाः॥

[illegible]

[illegible] ज्योतिश्शास्त्रस्य [illegible] ज्योतिश्शास्त्रस्य [illegible]

[illegible] 'ज्योतिष शास्त्रम्' इति नाम्ना [illegible]। ज्योतिश्शास्त्रं [illegible]।

आ[illegible]र्यवराहमिहिरेण सूचितम्–

ज्योतिः शास्त्रमनेकभेदविषयं स्कन्धत्रयाधिष्ठितं तत्कात्स्न्योपनयस्य नाम मुनिभिः सङ्कीर्त्यते संहिता। स्कन्धेऽस्मिन् गणितेन या ग्रहगतिस्तन्त्राभिधानस्त्वसौ होरान्योऽङ्गविनिश्चयश्च कथितः स्कन्धस्तृतीयोऽपरः॥

अर्थात् [illegible]

सिद्धान्तः संहिता होरारूपं स्कन्धत्रयात्मकम्।
वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिः शास्त्रमनुत्तमम्॥

कतिपये ज्योतिश्शास्त्रस्य [illegible] स्वीकुर्वन्ति। यथा

पञ्चस्कन्धमिदं शास्त्रं होरागणितसंहिता।
केरलिः शकुनश्चैव ज्योतिः शास्त्रमुदीरितम्॥

अर्थात् गणित[illegible] सन्ति। [illegible] ज्योतिश्शास्त्रस्य [illegible]

[illegible] यथा –

1. [illegible]

[illegible]

2. [illegible]

3. [illegible]

सन्दर्भाः—

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]

[illegible]

[illegible]

ओगेटिपरीक्षितशर्मविरचितस्य श्रीमत्प्रतापराणायनमहाकाव्यस्य काव्यशास्त्रदृष्ट्यासमीक्षणम्

डॉ. [illegible]

[illegible]

श्रीमत्प्रतापराणायनमहाकाव्यस्य कथासारः

[illegible]

मङ्गलाचरणम्

[illegible]

जन्म जन्मनि गीर्वाणी भारती मेऽस्तु भारती।
यस्याहं भारतो पुत्रो नित्यं भारतभागतो॥
संस्कृता कवयः सर्वे मोक्षं प्राप्ताः स्वभावतः।
नितान्तमोक्षभागी स्यां हि संस्कृते मोक्षकाङ्क्षया॥

[illegible]

सा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] गोविन्द हे माधव [illegible]॥

[illegible]

[illegible]

नाम्यानने [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]॥

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कामुकं चरणे निद्धं ईन्द्रसानं [illegible]।

[illegible] दुःखमापन्नं पादो [illegible]॥

[illegible]

करोमि [illegible] राक्षस्य [illegible]॥

[illegible]

हल्लीशात्रीकाण्डम्

[illegible]

अवतमहीतल्ल [illegible] यामिनी नु, [illegible]॥

[illegible]॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

> [illegible]
> [illegible] समरयतुराः [illegible] ।
> [illegible]
> [illegible] ॥'

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] –

> विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः ।'

[illegible] –

> कारणान्यथ कार्याणि सहकारीणि यानि च ।
> रत्यादेः स्थायिनो लोके तानि चेन्नाट्यकाव्ययोः ॥
> विभावा अनुभावास्तत् कथ्यन्ते व्यभिचारिणः ।
> व्यक्तः स तैर्विभावाद्यैः स्थायी भावो रसः स्मृतः ।'

[illegible]

उत्तमप्रकृतिर्वीर उत्साहस्थायिभावकः।
महेन्द्रदैवतो हेमवर्णोऽयं समुदाहृतः॥
आलम्बनविभावास्तु विजेतव्यादयो मताः।
विजेतव्यादिचेष्टाद्यास्तस्योद्दीपनरूपिणः।
अनुभावास्तु तत्र स्युः सहायान्वेषणादयः॥
सञ्चारिणस्तु धृतिमतिगर्वस्मृतितर्करोमाञ्चाः।
स च दानधर्मयुद्धैर्दयया च समन्वितश्चतुर्धा स्यात्॥

तत्र दानवीरो यथा –

कल्पवल्लीव या गाढं जगुणगणविलुण्ठनं।
प्रार्थितः प्रार्थिभिः काले बाला प्रेम्णा स्वकम्॥
न केवलं [illegible] कल्पवृक्षम्।
यथा च [illegible] कल्पकम्॥

[illegible]

मृदुं पत्रा महाराज्ञी [illegible]।
राजपत्न्या स्मृतं तं गौरवलाभ उत्तो प्रियम्।
आत्मपुत्रपरित्यागं राजपुत्रस्य रक्षणम्।
[illegible] पत्रा सुनिश्चितम्॥
[illegible]।
[illegible] परम्॥

[illegible] –

सा पद्मिनी पद्मभवं नूनं समस्तसौन्दर्यविलासिनीव।
विनिर्मिता गगकुले महिम्ना [illegible]॥
[illegible] सा।
[illegible]॥
[illegible]।
[illegible] निर्मिता [illegible]॥

श्रीमत्प्रतापनारायणमहाकाव्योल्लासः

काव्यस्य शोभाकराः धर्माः अलङ्काराः। उक्तं दण्डिना

काव्यशोभाकरान् धर्मानलङ्कारान् प्रचक्षते।

अस्मिन् महाकाव्ये अलङ्काराणां प्रयोगः [illegible]। [illegible] अर्थालङ्कारा [illegible]
[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]
[illegible], [illegible], [illegible] [illegible] प्रयुक्ताः सन्ति। [illegible] [illegible]

अर्थो [illegible] [illegible] पुनः श्रुतिः [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

प्रतिज्ञातेषु कार्येषु [illegible] [illegible]।
नान्य [illegible] [illegible] [illegible]॥

उपमायाः लक्षणं [illegible] यथा—

साधर्म्यमुपमा भेदे[5]

[illegible] [illegible] [illegible] —

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] इव शाश्वतम्॥[6]

श्रीमद्[illegible] [illegible]-महाकाव्ये छन्दः

अस्मिन् [illegible] [illegible] निम्नलिखितानि छन्दांसि प्रयुक्तानि [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], शालिनी, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], मालिनी, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], शार्दूलविक्रीडितं, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], आर्यागीतिः, [illegible], [illegible] ([illegible]), [illegible] ([illegible]), [illegible] ([illegible])॥

अनुष्टुप्छन्दसो लक्षणं यथा

श्लोके षष्ठं गुरुज्ञेयं सर्वत्र लघुपञ्चमम्।
द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः॥[7]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] यथा —

[illegible] राणा [illegible] [illegible] [illegible] स्वयम्।
[illegible] [illegible] [illegible] निश्चितम्॥[8]

वृत्तरत्नाकरे शार्दूलविक्रीडितछन्दसो लक्षणम्—

सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्॥[9]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]—

रे रे मानव [illegible] [illegible] [illegible] किं [illegible],
[illegible] त्वं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पुनः,
[illegible] [illegible] परं [illegible] संरक्षितुम्॥[10]

[illegible]

सन्दर्भाः—

1. श्रीमद्भागवतम्, [illegible] - 04, [illegible] - [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible] - 06, [illegible] - 12
6. [illegible] - 06, [illegible] - 34 - 35
7. [illegible] - 16
8. [illegible] - 47
9. [illegible]
10. [illegible]
11. [illegible] - 03, [illegible]
12. श्रीमद्भागवतम्, [illegible] - 01, [illegible] - 40-42
13. [illegible]
14. [illegible]
15. [illegible]
16. [illegible]
17. श्रीमद्भागवतम्, [illegible]
18. [illegible]
19. [illegible]
20. [illegible]
21. [illegible]
22. [illegible] - 3, [illegible]
23. श्रीमद्भागवतम्, [illegible] - 25

[illegible]

आचार्यविद्यासागरकृतसुनीतिशतकस्य काव्यशास्त्रीयमूल्याङ्कनम्

डॉ. ललितकिशोरशर्मा

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मुक्तकं श्लोक एवैकश्चमत्कारक्षमः सताम्।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सर्वैः गुणैः सर्वैर्देशैश्च समन्विता विभुत्वं हि।

यानि पुष्पं सम्पन्नाये कुर्वन्ति नमः सदा तेभ्यः।।

[illegible]

पश्यामि जगति काव्यं पुण्यपोषप्रपूर्णां

[illegible]

परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्य

निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः।।

[illegible]

[illegible]

साधुतामर्थसाधुना, साधुकर्माणि वदे साधुतम्।।

[illegible]

[illegible]

निजे गयान्यसमान: सुखं न स्यात् स्वयं समानः।।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ।

मृदुलेन पुष्पं च मलेन कुष्ठं, नवीननवं न हि [illegible] ।
गुरुपदेशाप्रकृतागतेन शास्त्रोपजीवी खलु [illegible] ॥

[illegible] सर्वेभ्यः [illegible] गुणाति [illegible] एवं [illegible] ।

[illegible] - असन्तोष संसार, [illegible] ।

[illegible] ।

मयापि भुक्तं न भयं विभावे, पुनश्च [illegible] दुःखे ।
शील मिलं [illegible] पूर्वमस्मरणं न पुनः [illegible] ॥

[illegible] । [illegible] ।

शृङ्गारालम्बनोत्थम् [illegible]
नमस्तादि नवङ्ग च [illegible] ।
[illegible] मन्त्रकान्ता निशान्ते
[illegible] ॥

अनेन [illegible] ।

[illegible] ।

[illegible] ।

[illegible]
[illegible] ।
न तु [illegible] ।

भवति च पुनः भूयान् भेदः फलं प्रति तद्यथा

प्रभवति शुचिः बिम्बग्राहे मणिर्न मृदां चयः ॥

An Ideal Teacher would not discriminate in teaching whether the one is dull and other is more intelligent than others and teach all of them equally without any discrimination. What will happen if one polishes a lump of mud? It will never shine. But at the same time, the gem will be shine more, when polished. This is the hand craft of the teacher.

[illegible]—

[illegible]।

[illegible]॥

[illegible]

[illegible]।

[illegible]॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]।

[illegible]॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

भ्रमी नु मानाय सन्तं क्वापि, धनाय मानाय प्रियं नु [illegible]।

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मन्ये शङ्के ध्रुवं प्रायो [illegible]।

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सन्दर्भाः

1. [illegible] – [illegible]
2. [illegible] – [illegible]
3. [illegible] – [illegible] – [illegible]
4. [illegible] – [illegible] – 79
5. [illegible] – [illegible] – 6
6. [illegible] – [illegible] – 17
7. [illegible] – [illegible] – [illegible]
8. [illegible] – [illegible] – 42
9. [illegible] – [illegible]
10. [illegible] – [illegible]
[illegible] – [illegible] – 98
11. [illegible] – [illegible]
12. [illegible] – [illegible] – [illegible]
14. [illegible] – [illegible] – 7
15. [illegible]
16. [illegible] – [illegible] – [illegible]

सन्दर्भग्रन्थसूचिः

1. [illegible], [illegible] – [illegible], [illegible]
2. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, रामनारायणलाल विजयकुमार, इलाहाबाद, 2002
3. [illegible]
4. [illegible], 1993
5. [illegible]
6. [illegible], 2002
7. [illegible], 2005
8. [illegible], जयपुर, 2005
9. [illegible], चौखम्बा [illegible], वाराणसी, 2006

डॉ. [illegible]
[illegible]
[illegible], जयपुर

अर्थस्य व्यञ्जकत्वम्

डॉ. [illegible]

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ॥[1]

[illegible] शब्दार्थयोः [illegible] सम्बन्धं [illegible] प्रतिपादितं यथा –

शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्।[2]
तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि।[3]
शब्दार्थौ सहितावेव प्रतीतौ स्फुरतः सदा।
सहिताविति तावेव किमपूर्वं विधीयते।
साहित्यमनयोः शोभाशालितां प्रति काव्यसौ।
अन्यूनातिरिक्तत्वमनोहारिण्यवस्थितिः।[4]

अतः काव्यप्रकाशस्य प्रणेतृणा मम्मटेन [illegible] शब्दस्य [illegible] त्रैविध्यं [illegible] –

1. वाचकः 2. लाक्षणिकः 3. व्यञ्जकश्च।

यथाहि–

स्याद्वाचको लाक्षणिकः शब्दोऽत्र व्यञ्जकस्त्रिधा।[5]

[illegible] त्रिविधं [illegible] अर्थात् [illegible] लाक्षणिक [illegible] व्यञ्जक [illegible]।

अत्र [illegible] नहि कश्चिद्वाचक एव कश्चिल्लाक्षणिक एव कश्चिद् व्यञ्जक एवेत्यस्ति नियम इति। अत एव 'गङ्गायां घोषः' इत्यादावेकस्यापि गङ्गादिशब्दस्य वाचकत्वं लाक्षणिकत्वं व्यञ्जकत्वं चोपपद्यते।[6]

वाच्यादयस्तदर्थाः स्युः।

[illegible] वाच्यार्थः, लक्ष्यार्थः, व्यङ्ग्यार्थश्च [illegible]

[illegible] साहित्यशास्त्रे [illegible] –

1. अभिधा 2. लक्षणा 3. व्यञ्जना।

तत्र [illegible] अभिधा [illegible], लक्षणा [illegible] व्यञ्जना [illegible]

[illegible] व्यञ्जना [illegible]

तत्र व्यापारो व्यञ्जनात्मकः।[9]

[illegible] शब्दस्य [illegible] व्यञ्जनाव्यापारः [illegible]।

तद्युक्तो व्यञ्जकः शब्दः यत् सोऽर्थान्तरयुक् तथा।

अर्थोऽपि व्यञ्जकस्तत्र सहकारितया मतः।[8]

अर्थाः प्रोक्ताः पुरा तेषाम्, अर्थव्यञ्जकतोच्यते।[10]

[illegible] पूर्वोक्त [illegible] व्यञ्जकत्वं [illegible]—

वक्तृबोद्धव्यकाकूनां वाक्यवाच्यान्यसन्निधेः।

प्रस्तावदेशकालादेर्वैशिष्ट्यात्प्रतिभाजुषाम्।

योऽर्थस्यान्यार्थधीहेतुर्व्यापारो व्यक्तिरेव सा।

बोद्धव्यः प्रतिपाद्यः। काकुर्ध्वनेर्विकारः। प्रस्तावः प्रकरणम्। अर्थस्य च वाच्यलक्ष्यव्यङ्ग्यात्मना।[1]

[illegible]

[illegible]

[illegible] प्रतिपद्यते वाक्यमुच्चारयति स वक्ता। [illegible] पदानां समूहो वाक्यं शब्देन त्रिविधं मुख्यं लाक्षणिकं चाभिधाव्यापारमाश्रित्य यत् [illegible] वाच्यम्।[2]

[illegible]

[illegible]

1. वक्तृवैशिष्ट्ये [illegible] व्यञ्जकत्वम्—

अतिपृथुलं जलकुम्भं गृहीत्वा समागतास्मि सखि त्वरितम्।

श्रमस्वेदसलिलनिःश्वासनिःसहा विश्राम्यामि क्षणम्॥[1]

[illegible]

[illegible]

अत्र [illegible]। [illegible] विजानतां चौर्यरतगोपनं व्यक्तं भवति॥[1]

2. बोद्धव्यवैशिष्ट्याद् [illegible]

औन्निद्र्यं दौर्बल्यं चिन्तालसत्वं सनिःश्वसितम्।

मम मन्दभागिन्याः कृते सखि! त्वामपि अहह परिभवति॥

[illegible] इति [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

तथाभूतां दृष्ट्वा नृपसदसि पाञ्चालतनयां

वने व्याधैः सार्धं सुचिरमुषितं वल्कलधरैः।

विराटस्यावासे स्थितमनुचितारम्भनिभृतं

गुरुः खेदं खिन्ने मयि भजति नाद्यापि कुरुषु॥[4]

[illegible]

[illegible]

अत्र [illegible] कुरुषु इति।

तथाभूतां इति वाक्ये काकुः [illegible]

[illegible]

न च वाच्यसिद्ध्यङ्गमत्र गुणीभूतव्यङ्ग्यत्वं शङ्क्यम्। प्रश्नमात्रेण काकोर्विश्रान्तेः।[5]

[illegible]

[illegible]

मथ्नामि कौरवशतं समरे न कोपात्

दुःशासनस्य रुधिरं न पिबाम्युरस्तः।

सञ्चूर्णयामि गदया न सुयोधनोरू

सन्धिं करोतु भवतां नृपतिः पणेन॥[6]

अत्र [illegible] काकु [illegible] काकु

[illegible]

[illegible]

१. [illegible]

तदा मम गण्डस्थलनिमग्नां दृष्टिं नानैषीरन्यत्र।
इदानीं सैवाहं तौ च कपोलौ न सा दृष्टिः॥ [illegible]

अत्र [illegible]

[illegible]

२. [illegible]

[illegible] सरलपक्ष्मणां [illegible],
कु[illegible] [illegible]।
[illegible],
[illegible]॥ [illegible]

अत्र [illegible]

अत्र [illegible]

३. [illegible]

[illegible]।
[illegible] यदि सन्ध्यायां भवति न भवति विश्रामो॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

४. [illegible]

श्रूयते समागमिष्यति तव प्रियोऽद्य प्रहरमात्रेण।
एवमेव किमिति तिष्ठसि तत् सखि सज्जय करणीयम्॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] इति [illegible]॥

४ [illegible]

अत्र [illegible] कुसुमायुधाय [illegible] करोमि [illegible]।
नाहं [illegible] समर्था [illegible]॥११

[illegible] आहं [illegible]।

अत [illegible]

५ [illegible]

गुरुजनपरतन्त्रतया [illegible] भणामि [illegible] मन्दभागिनी [illegible]।
[illegible]॥१२

[illegible] अपि [illegible]

१३. [illegible]

[illegible] यथा [illegible]।
[illegible]।
आनीतं पुनः [illegible]।
[illegible] संगतो॥१४

अत [illegible] इति [illegible]॥

[illegible]।

सन्दर्भाः–

1. [illegible]– 1.1
2. [illegible]– 1.2
3. काव्यप्रकाश –1, सू.–[illegible]
4. [illegible]– [illegible]
5. काव्यप्रकाश –1, सू.–[illegible]
6. [illegible]– [illegible]
7. [illegible]
8. [illegible]
9. [illegible]
10. [illegible]
    [illegible]
11. [illegible]
12. काव्यप्रकाश –1, श्लोक –1[illegible]
13. [illegible]
14. काव्यप्रकाश –1, श्लोक –14
15. काव्यप्रकाश –1, श्लोक –1[illegible]
16. [illegible]
17. [illegible]
18. [illegible] 1[illegible]
19. [illegible] 16
20. [illegible] 17
21. [illegible]
22. [illegible] 18
23. काव्यप्रकाश –1, श्लोक –1[illegible]
24. काव्यप्रकाश –1, श्लोक –2[illegible]
25. काव्यप्रकाश –1, श्लोक –2[illegible]
26. काव्यप्रकाश –1, श्लोक –22

[illegible],
संस्कृतविभागः, [illegible],
काशीहिन्दूविश्वविद्यालयः,
वाराणसी

महाकवि कालिदास प्रणीत रूपकों में वर्णित लोक-आस्था और लोकमान्यताएँ

पुष्पा कुमार पांडेय

प्रत्येक युग का साहित्य [illegible] समाज की संस्कृति, सभ्यता आदि के [illegible] का प्रतिबिम्बन करता है, इसी कारण साहित्य समाज का दर्पण कहलाता है [illegible] में साहित्य समाज की [illegible] और संस्कृति से प्रभावित [illegible] साहित्य में समाज के नव स्वरूप प्रमाणित करता है। कविकुलगुरु महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य के अप्रतिम प्रतिभा सम्पन्न कवि हैं। उनके रूपक [illegible] परम्परा [illegible] में तत्कालीन संस्कृति से प्रभावित हुए हैं। उनके रूपक [illegible] संस्कृति को [illegible] करते हैं, [illegible] संस्कृति को प्रभावित करते हों या फिर लोकजीवन को अभिव्यक्ति प्रदान करते हों। उनके रूपकों में [illegible] लोकमान्यताओं और लोक आस्थाओं के दर्शन उपलब्ध होते हैं।

[illegible] लोक आस्थाओं और लोक मान्यताओं के [illegible] तर्क की कसौटी पर नहीं [illegible], ये [illegible] है कि साहित्य [illegible] नहीं [illegible]। महाकवि कालिदास के रूपकों में [illegible], अपशकुन, अभिशाप, [illegible] आदि का वर्णन प्राप्त होता है। [illegible] शकुन-अपशकुन [illegible] विश्वास [illegible] में महत्त्वपूर्ण भूमिका [illegible] है [illegible] शकुन-अपशकुन [illegible]।

कविश्रेष्ठ कालिदास के साहित्य में [illegible] उपलब्ध होता है। [illegible] (अभिज्ञान शाकुन्तलम् [illegible]) इस प्रकार के [illegible] पुत्र के [illegible] के अनेक प्रकार के [illegible] करने का [illegible] था। [illegible] प्रति [illegible] होती थी।

अभिज्ञान शाकुन्तलम् के द्वितीय अंक में [illegible] स्पष्ट [illegible] है कि [illegible] अनिवार्य है। यथा-

[illegible] - [illegible] हेमन्तपाद [illegible] [illegible] प्रवृत्तानां [illegible]।

[illegible] में [illegible] अपने [illegible] पति को [illegible] करने के लिए '[illegible]' नामक

रूप का उल्लेख आता है। रूप के साथ 'वेश' विशेष प्रकार के उपलक्षण धारण किया जाता है। ऐसे व्रत के समय [illegible] केशों [illegible] मंगल [illegible] पहने तथा पवित्र दूर्वा के अंकुरों से अलंकृत करती हैं। यथा

सितांशुका मङ्गलमात्रभूषणा पवित्रदूर्वाङ्कुरलाञ्छितालका।

व्रतापदेशोज्झितगर्ववृत्तिना मयि प्रसन्ना वपुषेव लक्ष्यते॥ (विक्रमोर्वशीय 3.12)

यह स्वाभाविक [illegible] और धार्मिक [illegible] निमित्त [illegible] धारण करने वाले थे। किसी देवी या देवता के आवाहन के बिना किसी निमित्त अपूर्ण ही माना जाता था। 'विक्रमोर्वशीय' नाटक में देवी चन्द्रमा और रोहिणी के जोड़े को साक्षी बनाती है- एतद् देवतामिथुनं रोहिणीमृगलाञ्छनं साक्षीकृत्यार्यपुत्रमनुप्रसादयामि। (विक्रमोर्वशीय [illegible])

अंगस्फुरण [illegible] बाहु [illegible] फड़कना शुभ माना जाता था। अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अंक में [illegible] राजा [illegible] आश्रम में प्रवेश करने लगते हैं। तभी उनकी दायीं भुजा फड़कने लगती है जो शुभ निमित्त की सूचक है। यथा

शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहुः कुतः फलमिहास्य। (अभिज्ञानशाकुन्तलम् 1.16)

इस निमित्त का शुभ फल राजा को कुछ ही क्षणों बाद प्राप्त हो जाता है। आश्रम में प्रवेश करते ही [illegible] शकुन्तला के दर्शन होते हैं। इसी प्रकार, अभिज्ञान [illegible] शकुन्तला का [illegible] और [illegible] के साथ [illegible] को [illegible] करने के लिए युद्ध में [illegible] है। इस [illegible] की सहायता से [illegible] में विजयी होते हैं। इसके बाद [illegible] मारीच के आश्रम में प्रवेश करते हैं तभी [illegible] उनकी दायीं भुजा फड़कने लगती है। यथा-

मनोरथाय नाशंसे किं बाहो स्पन्दसे वृथा।

पूर्वावधीरितं श्रेयो दुःखं हि परिवर्तते॥ (अभिज्ञानशाकुन्तलम् 7.13)

इसी भुजा फड़कने के शुभ परिणामस्वरूप राजा का अपने पुत्र तथा [illegible] से मिलन होता है। इसी प्रकार [illegible] में [illegible] हुए [illegible] की [illegible] शुभ निमित्त की अनुभूति होती है। यथा

न सुलभा सकलेन्दुमुखी च सा किमपि चेदमनङ्गविचेष्टितम्।

अभिमुखीष्विव वाञ्छितसिद्धिषु व्रजति निर्वृतिमेकपदे मनः॥ (विक्रमोर्वशीय 2.9)

[illegible] उर्वशी [illegible] होते हैं। जहाँ पुरुष के दायें अंग का फड़कना शुभ माना जाता है वहीं नारी के दायें अंग का फड़कना अशुभ माना जाता है। [illegible] के साथ शकुन्तला जब दुष्यन्त के [illegible] में प्रवेश करती है तो उसका [illegible] फड़कने लगता है। यथा

अहो, किं मे वामेतरं नयनं विस्फुरति। (अभिज्ञानशाकुन्तलम्, [illegible])

शकुन्तला के दायें अंग फड़कने का अशुभ परिणाम तो कुछ समय के पश्चात् दृष्टिगोचर हो जाता है जब राजा दुष्यन्त ने [illegible] शकुन्तला को पहचानने से इंकार कर दिया।

कालिदासकालीन समाज में यज्ञ के लिए पवित्र नदियों में स्नान की प्रथा थी। इस प्रकार [illegible] के लिए [illegible] से [illegible] जाते हैं। यथा-

नेपथ्ये .... अहो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (विक्रमोर्वशीयम् [illegible] प्रवेश)

गोधूलिवेला आदि के द्वारा अमंगलकारी ग्रहों के दुष्प्रभाव का शोधन किया जाता था। शकुन्तला के प्रथम अंक के आरम्भ में ही वैखानस के मुख से यह सूचना प्राप्त होती है कि महर्षि कण्व शकुन्तला के प्रतिकूल ग्रहों की शान्ति के लिए सोमतीर्थ गये हुए हैं। यथा

वैखानसः-इदानीमेव दुहितरं शकुन्तलामतिथिसत्काराय नियुज्य दैवमस्याः प्रतिकूलं शमयितुं सोमतीर्थं गतः (अभिज्ञानशाकुन्तलम्, अंक 1)

तीर्थों की मिट्टी और दूर्वा को मांगलिक माना जाता था। शकुन्तला के विदाई के समय उसकी [illegible] अनसूया [illegible] तीर्थ की मिट्टी और दूर्वा के अंकुर [illegible] मांगलिक सामग्री को जुटाती हैं। यथा-

अनसूया .. ....[illegible] गोरोचना तीर्थमृत्तिका दूर्वाकिसलयानीति मङ्गलसमालम्भनानि विरचितानि। (अभि०-शाकुन्तलम् 4)

यात्रा आदि प्रस्थान करने से पूर्व शुभ मुहूर्त का भी विचार किया जाता था किसी [illegible] के लिए [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] विधान था। नाटक में [illegible] यह प्रथा प्रचलित है। शकुन्तला को विदा करते समय कण्व ऋषि और दोनों सखियाँ उसको दूर तक [illegible] के पास तक उसके साथ जाते हैं। तब [illegible] उन्हें लौटने के लिए कहता है-

भगवन्! उदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते। तदिदं सरस्तीरम्, अत्र सन्दिश्य प्रतिगन्तुमर्हसि

ऋषियों के तपोबल से [illegible] के लिए [illegible] आदि का [illegible] था। [illegible] दुष्यन्त [illegible] एक विशेष प्रकार का [illegible] धारण करता है। [illegible] में यह विश्वास है कि माता-पिता के अतिरिक्त अन्य कोई उसे स्पर्श करता है तो वह [illegible] बनकर [illegible] लेता है। ऋषियों के [illegible] के समान अभिशाप आदि के दुष्परिणाम में भी [illegible] [illegible] विश्वास था। [illegible] कालिदास कृत अभिज्ञान शाकुन्तलम् और विक्रमोर्वशीयम् दोनों नाटकों में अभिशाप की घटना का उल्लेख प्राप्त है। शाकुन्तल नाटक में तो यह घटना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है और नाटक का केन्द्र बिन्दु भी है। [illegible] के [illegible] में [illegible] अर्थात् [illegible] [illegible] शकुन्तला [illegible] आये हुए अतिथि दुर्वासा का सत्कार नहीं करती है तब क्रुद्ध होकर वे शकुन्तला को अभिशाप देते हैं कि जिसके [illegible] में [illegible] शकुन्तला ने [illegible] अतिथि का स्वागत नहीं किया, वह अर्थात् [illegible] याद दिलाने पर भी भूल जायेगा जैसे कोई उन्मत्त [illegible] के बाद में पहले की बातों को [illegible] भूल जाता है। यथा-

विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा।
तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्।
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन्
कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव॥ (अभिज्ञानशाकुन्तलम् 4.1)

अभिशाप के प्रसंग का भी उपाय होता था। शकुन्तला की सखियों द्वारा अनुनय विनय किए जाने पर अभिशाप के प्रभाव के नष्ट करने का उपाय भी [illegible] दिया जाता है कि यदि शकुन्तला कोई पहचान का आभूषण [illegible] को दिखा देगी तो शाप निवृत्त हो जाएगा अर्थात् पहचान का आभूषण दिखाए जाने पर शाप का प्रभाव नष्ट हो जाएगा। यथा-

अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यते।

विक्रमोर्वशीयम् नाटक में भी उर्वशी को भरतमुनि के अभिशाप का भाजन बनना पड़ता है। पुरूरवा के प्रेम में डूबी उर्वशी अभिनय करते समय पुरुषोत्तम कहने के स्थान पर पुरूरवा कह बैठती है। अतः क्रुद्ध हुए गुरु उसे अभिशाप दे देते हैं कि अब तुम स्वर्ग में नहीं रह सकोगी। यथा -

येन ममोपदेशस्त्वया लङ्घितस्तेन न ते दिव्यं स्थानं
भविष्यति इति उपाध्यायस्य शापः। (विक्रमोर्वशीयम् 3)

उर्वशी की शाप की अवधि को इन्द्र ने सीमित कर दिया कि जब तक उर्वशी की सन्तान का मुख पुरूरवा नहीं देखेगा तभी तक वह पृथ्वी पर रहेगी। तत्पश्चात् वह पुनः स्वर्ग में आ सकेगी। इसके पश्चात् उर्वशी एक बार पुनः शाप का भाजन बनती है। [illegible] कार्तिकेय के गन्धमादन पर्वत (कुमार वन) में प्रवेश कर जाती है। कार्तिकेय ने यह नियम बना दिया था कि यदि कोई स्त्री इस वन में प्रवेश करेगी तो वह लता बन जाएगी। कार्तिकेय द्वारा बनाए गए नियमानुसार उर्वशी भी लता बन जाती है। किन्तु व्याकुल राजा उर्वशी का स्मरण करते हुए इसी वन में प्रवेश करता है और ज्योंही राजा इस लता को स्पर्श करता है तो वह लता उर्वशी बन जाती है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि कालिदास द्वारा रचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् एवं विक्रमोर्वशीयम् [illegible] तथा अभिशाप [illegible] प्रचलित थी। [illegible] कोई [illegible] नहीं है। इसके [illegible] कोई [illegible] निर्धारित [illegible] होता है। यह तो [illegible] है। प्राचीन समाज में [illegible] हैं, [illegible] कोई [illegible] दिखाई [illegible] देता है [illegible] अवस्थाएँ और मान्यताएँ अवश्य स्पष्ट करती हैं।

[illegible]
शोधछात्र, संस्कृत [illegible]
[illegible]

दर्शनाचार : जैनदर्शन के परिप्रेक्ष्य में

डॉ. दर्शना जैन

भारतीय साहित्य में आचार' या आचरण शब्द सदाचार का ही द्योतक है। बाद में आचरण के साथ [illegible] शब्द को जोड़कर इस तथ्य को [illegible] किया गया कि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सदाचार और [illegible] आचार को दुराचार कहना प्रारम्भ किया गया। इस प्रकार आचार शब्द दोनों ही धाराओं में प्रचलित हो गया। [illegible] [illegible] बहिर्मुखी [illegible] [illegible] है। [illegible] व्युत्पत्ति की दृष्टि से सदाचार शब्द सद् और आचार [illegible] दो शब्दों के मिलने [illegible] [illegible] जो आचरण या प्रवृत्ति शुभ रूप में सद् है, [illegible] [illegible] है, उचित है, वह सदाचार है। सद् या उचित [illegible] [illegible] अंग्रेजी में 'राइट' कहा है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के अनुरूप है, वह सदाचार है और जो [illegible] [illegible] के विरुद्ध है, [illegible] है, वह दुराचार है। दुराचार को ही अनाचार या कदाचार भी कहते हैं।

[illegible] [illegible] और [illegible] का [illegible] का मूल आचार [illegible] है। आचार के [illegible] पर [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] और आदर्श होता है, [illegible] [illegible] की [illegible] आचार ही है।

आदि काल से आचरण शब्द बिना किसी विशेषण के भी [illegible] आचरण के लिए व्यवहृत है। शाब्दिक दृष्टि से आचार का अर्थ है— 'आचर्यते इति आचारः' जो आचरण किया जाए, वह आचार है। यह सदाचार का [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] में आचार को प्रथम स्थान दिया है। श्रुतकेवली भद्रबाहु ने स्पष्ट शब्दों में कहा है— "आचार सभी अंगों का सार है।"[1]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के विषय में कहा है— "......[illegible] [illegible]" अर्थात् [illegible] शक्ति के अनुसार निर्मल किये गये [illegible] में जो [illegible] किया जाता है, उसे आचार कहते हैं।

इसी प्रकार से [illegible] [illegible] में भी कहा है कि [illegible] आचारों में 'आचार' [illegible] है। [illegible] ने तो आचार से ही धर्म की उत्पत्ति बताई है। "आचारप्रभवो धर्मः"[illegible] आचार [illegible] ने [illegible] [illegible] 'प्रथम धर्म' लिखा है अर्थात् आचार ही धर्म का प्रथम [illegible] [illegible] है।

[illegible] [illegible] [illegible] भी [illegible] है, [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] सभी [illegible] में आचार [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] करने का [illegible] हुआ है। आचारहीन मानव का [illegible] भी [illegible] नहीं कर सकता। कहा है— "आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः।"

आचारहीन [illegible]-[illegible] से [illegible] की [illegible] नहीं होती, [illegible] [illegible] की [illegible] होती है [illegible] [illegible] के [illegible] से स्वास्थ्य की [illegible] नहीं होती, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] अध्ययन करके भी [illegible] [illegible] [illegible] हैं, जो [illegible] के अनुसार आचरण नहीं करते। ज्ञान से [illegible]

[illegible] है, [illegible] से ही होता है। [illegible] को [illegible] है।

जैन दार्शनिकों ने रत्नत्रय को अधिक महत्त्व दिया है, रत्नत्रय का अर्थ सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र है। श्रावकाचार और मुनिधर्म का वर्णन कुन्दकुन्द आदि [illegible] के आचार्यों [illegible] हैं। इसी परम्परा में आचार्य कुन्दकुन्द ने [illegible] आचरण का व्याख्यान करते हुए [illegible] पंचाचार (पाँच आचारों) का वर्णन किया है। 'दंसणणाणचरित्ते तवे विरियाचारम्हि पंचविहो।' [illegible] दर्शनाचार, ज्ञानाचार, चारित्राचार, तपाचार और वीर्याचार – ये पाँच आचार कहे गए हैं [illegible] आचार व्यापक दृष्टिकोण को लिए हुए है। यहाँ केवल [illegible] तक ही [illegible] नहीं रहा है, [illegible] नहीं [illegible], अपितु [illegible] है। [illegible] के साथ ही दर्शन [illegible] है, यह दर्शन [illegible] नहीं है, [illegible] है, [illegible] दर्शन [illegible] होता है, [illegible] हैं।

सम्यग्दर्शन की प्राथमिकता

[illegible] है। [illegible] है। निश्चय दृष्टि अन्तरंग और आचरण दृष्टि [illegible] की पहचान में सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र की एकरूपता को मोक्ष मार्ग कहा है। सम्यग्दर्शन शब्द का [illegible] है। सम्यग्दर्शन के अभाव में [illegible] ज्ञान [illegible] होता है और न चारित्र ही। इसीलिए सम्यग्दर्शन को मोक्ष की प्रथम सीढ़ी कहा गया है। [illegible] सम्यग्दर्शनमिति–

तत्रादौ सम्यक्त्वं, समुपाश्रयणीयमखिलयत्नेन।
तस्मिन्सत्येव यतो, भवति ज्ञानं चारित्रं च॥ 21॥

Again, one must, by all possible means, first attain right belief, because only on the acquisition thereof knowledge and conduct become right.

[illegible] चाहिए, [illegible] हुए [illegible] है, [illegible] सम्यग्ज्ञान होता है [illegible] होता है। [illegible] होता है।

[illegible] दर्शनाचार, ज्ञानाचार, तपाचार और वीर्याचार [illegible] में [illegible] हैं।

दर्शनाचार

[illegible] और [illegible] आध्यात्मिक [illegible] है। यहाँ पर [illegible] है। सम्यग्दर्शन के [illegible] दर्शनाचार [illegible] दर्शन शब्द [illegible] है, जिसमें आचार [illegible] दर्शनाचार [illegible] है। [illegible]

कार्य है दर्शन का आचार। [illegible] करने हैं। [illegible]
के अन्तर्गत लिया गया है। [illegible]

"[illegible] सम्यग्दर्शनं [illegible]। [illegible] निःशङ्कत्वादि [illegible] सम्यग्दर्शनं [illegible]।" अर्थात् [illegible] है, [illegible] है, [illegible] है, [illegible] आचरण अर्थात् [illegible] को दर्शनाचार कहा गया है।

आचार्य [illegible] जी ने द्रव्यसंग्रह में कहा है— "परम चैतन्य विलासलक्षणः स्वशुद्धात्मैवोपादेय इति रुचिरूप सम्यग्दर्शनं, तथाचरणं परिणमन निश्चय दर्शनाचारः।" अर्थात् समस्त [illegible] द्रव्यों से भिन्न [illegible] चैतन्य [illegible] सम्यग्दर्शन है, [illegible] ही निश्चय दर्शनाचार है।

[illegible] आचार्य [illegible] सम्यक्त्व के आठ अंग [illegible] हैं। आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने रत्नकरण्ड श्रावकाचार में [illegible] सम्यग्दर्शन [illegible] वर्णन किया है। [illegible] के [illegible] कहा है

तावदञ्जनचौरोऽङ्गे ततोऽनन्तमतिः स्मृता।
उद्दायनस्तृतीयेऽपि तुरीये रेवती मता॥
ततो जिनेन्द्रभक्तोऽन्यो वारिषेणस्ततः परः।
विष्णुश्च वज्रनामा च शेषयोर्लक्ष्यतां गतौ॥"

अर्थात् प्रथम अंग में अंजन चोर, द्वितीय अंग में अनन्तमती तथा तृतीय अंग में उद्दायन राजा, चतुर्थ अंग में रेवती रानी, पंचम अंग में जिनेन्द्र भक्त सेठ, षष्ठ अंग में वारिषेण मुनि, सप्तम अंग में विष्णुकुमार मुनि, अष्टम अंग में वज्रकुमार मुनि [illegible] हुए।

णिस्संकिद णिक्कंखिद णिव्विदिगिंछा अमूढदिट्ठी य।
उवगूहण ठिदिकरणं वच्छल्ल पभावणा य ते अट्ठ॥201॥"

अर्थात् निःशंकित, निःकांक्षित, निर्विचिकित्सा, अमूढदृष्टि, उपगूहन, स्थितीकरण, वात्सल्य और प्रभावना [illegible] की शुद्धि [illegible] हैं। [illegible] सम्यक्त्व के गुण [illegible] हैं।

[illegible] ने मूलाचार में दर्शनाचार [illegible] के रूप में लिखा है। दर्शनाचार की [illegible] जिनेन्द्र भगवान ने [illegible] कहा है

दंसणचरणविसुद्धी अट्ठविहा जिणवरेहिं णिद्दिट्ठा. . . ॥200॥

[illegible] में श्री आचार्य कुन्दकुन्द ने कहा है "अहो निःशंकितत्वनिःकांक्षितत्व निर्विचिकित्सत्वनिर्मूढदृष्टित्वोपबृंहणस्थितिकरणवात्सल्यप्रभावनालक्षणदर्शनाचार:॥"

अर्थात् अष्ट अंग— निःशंकितत्व, निःकांक्षित्व, निर्विचिकित्सत्व, अमूढदृष्टित्व, उपगूहन, स्थितिकरण, वात्सल्य और प्रभावना ये अंग होते हैं।

दर्शनाचार के भेद व लक्षण

> जीवाऽजीवादीनां तत्त्वार्थानां सदैव कर्तव्यम्।
> श्रद्धानं विपरीताभिनिवेशविविक्तमात्मरूपं तत्॥२२॥

One should always have firm belief in jiva, ajiva and the other principles, as they are, free from perverse notions. It is the nature of the self.

जीव अजीव तत्त्वों का श्रद्धान सदा करना चाहिए। [illegible] धर्मास्तिकाय आदि अजीव हैं। ऐसे जीव अजीव आदि तत्त्व आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा, मोक्ष का श्रद्धान अर्थात् ऐसे [illegible] यह श्रद्धान आत्मा का स्वरूप है, जब [illegible] विपरीत अभिनिवेश न होता है। विपरीत, एकान्त आदि मिथ्यात्व से रहित [illegible] विपरीत अभिनिवेश से रहित कहा गया है।

[illegible] का द्वितीय अंग दर्शनाचार है, जिसका अर्थ है—तत्त्वार्थ-श्रद्धान [illegible] का अर्थ है [illegible] के प्रति [illegible] आठ अंग हैं, वे [illegible] हैं

1. **निःशंकित अंग का स्वरूप**— शंका का अर्थ संदेह और भय दोनों ही है। मूलाचार में आचार्य वट्टकेर ने निःशंकित का अर्थ—जिनमें जिनेन्द्र भगवान के द्वारा कहे गये सात तत्त्वों में संदेह न करना, शंका से रहित होना [illegible] में [illegible] भय का अभाव [illegible] निःशंकित गुण कहलाती है। आचार्य कुन्दकुन्द ने समयसार में शंका का अर्थ भय किया है—

> सम्माइट्ठी जीवा णिस्संका होंति णिब्भया तेण।
> सत्तभयविप्पमुक्का, जम्हा तम्हा दु णिस्संका॥
> सकलमनेकान्तात्मकमिदमुक्तं वस्तुजातमखिलज्ञैः।
> किमु सत्यमसत्यं वा न जातु शंकेति कर्तव्या॥२३॥

One should never entertain any doubt as to whether all these many-sided views of things proceeding from the omniscient, are true or untrue.

इस सम्पूर्ण वस्तु-समूह को सर्वज्ञ देव ने अनेकान्तात्मक कहा है, वह सत्य है अथवा असत्य है, ऐसी कभी भी शंका—संदेह नहीं करना चाहिए।

2. **निःकांक्षित**— कर्म के वश से [illegible] सांसारिक सुखों में तथा [illegible] में आकांक्षा का अभाव होना निःकांक्षित गुण कहलाता है। [illegible] में [illegible] होती है

> इह जन्मनि विभवादीन्यमुत्र चक्रित्व—केशवत्वादीन्।
> एकान्तवाददूषित—परसमयानपि च नाकांक्षेत्॥२४॥

The true believer should not desire worldly greatness in this life or for the

position of a chakravarti or narayana in the life hereafter. Nor should he cling to other faiths, [illegible] for the acceptance of one sided theories.

3. निर्विचिकित्सा– [illegible]

क्षुत्तृष्णा शीतोष्ण प्रभृतिषु नाना विधेषु भावेषु।
द्रव्येषु पुरीषादिषु विचिकित्सा नैव करणीया॥25॥

He should not exhibit a feeling of disgust at the various conditions caused by hunger, thirst, cold, heat etc. or at the sight of excrement etc. This is termed Nirvichikitsa Anga.

क्षुधा, तृषा, शीत, उष्ण इत्यादि अनेक प्रकार वाले पदार्थों में मल आदि द्रव्यों में घृणा नहीं करनी चाहिए।

4. अमूढदृष्टि– जिसकी दृष्टि मूढ नहीं, [illegible] है।

लोकेशास्त्राऽऽभासे, समयाऽऽभासे च देवताऽऽभासे।
नित्यमपि तत्त्वरुचिना, कर्तव्यममूढदृष्टित्व॥26॥

In this world he who has faith in the tattvas (the seven principles) should never have a superstitious belief in a fallacious scripture, an unreal doctrine, or a false deity.

[illegible] चाहिए।

5. उपगूहन– [illegible] है।

धर्मोऽभिवर्द्धनीयः सदात्मनो मार्दवादिभावनया।
परदोषनिगूहनमपि विधेयमुपबृंहणगुणार्थम्॥27॥

[illegible], one should ever cultivate the true nature of soul by meditating upon mildness etc. and should also try to cover the defects of others.

उपबृंहण गुण के लिए अर्थात् उपगूहन अंग की रक्षा के लिए [illegible], क्षमा, [illegible] आदि

किसी भी के दोषों को ढककर उनका गुणों का प्रकाशन करना चाहिए, दूसरों के दोषों का प्रकाशन नहीं करना चाहिए।

6. स्थितिकरण– धर्म से भ्रष्ट होते हुए व्यक्तियों को पुनः धर्ममार्ग में स्थिर करना स्थितिकरण नाम की शुद्धि कही गई है।

काम–क्रोध–मदादिषु चलयितुमुदितेषु वर्त्मनो न्यायात्।

श्रुतमात्मनः परस्य च युक्त्या स्थितिकरणमपि कार्यम्॥28॥

In case of deviation from the path of righteousness, under the influence of anger, pride and sexual passion etc. He should strengthen his own knowledge and that of others by argument.

न्यायमार्ग से विचलित करने के लिए काम, क्रोध, मद आदि के उदित होने पर शास्त्रानुसार युक्तिपूर्वक अपना और दूसरे का स्थितिकरण भी करना चाहिए।

7. वात्सल्य–साधर्मी के प्रति निश्छल मन से वात्सल्य के भाव रखना तथा अहिंसा लक्षण धर्म तथा मोक्षसुख के कारण प्रीति रखना वात्सल्य नाम की शुद्धि है।

अनवरतमहिंसायां शिव–सुख–लक्ष्मी निबंधने धर्मे।

सर्वेष्वपि च सधर्मिषु परमं वात्सल्यमालम्ब्यम्॥29॥

One should ever cherish feelings of deep affection for religion, which brings about the treasure of spiritual happiness and for the principle of non-injury, and also for co-religionists.

अहिंसा में मोक्ष सुख रूपी लक्ष्मी की प्राप्ति में कारणभूत धर्म में और समस्त साधर्मी बन्धुओं में भी उत्कृष्ट वात्सल्य भाव रखना चाहिए।

8. प्रभावना– धर्म के सम्बन्ध में फैले अज्ञान को दूर कर सम्यक् मार्ग में चलने के लिए प्रेरित करना तथा जैनधर्म की ख्याति के लिए उसका प्रभाव बढ़ाना प्रभावना नाम की शुद्धि है।

आत्मा प्रभावनीयो, रत्नत्रय तेजसा सततमेव।

दान–तपो–जिनपूजा–विद्यातिशयैश्च जिनधर्मः॥30॥

One should ever make his own self radiant by the light of three jewels and should add to the glory of Jainism by exceptional charity, austerity, worship of Jina the conqueror and by learning.

रत्नत्रय (सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र) के तेज से ही अपनी आत्मा को प्रभावित करना चाहिए और दान, तप, जिनपूजा और विद्या के अतिशय चमत्कारों से जैनधर्म को प्रभावित करना चाहिए।

अमृतचन्द्र सूरि ने हिंसा के त्याग का अहिंसा शुद्धि नामक और ... के स्थान में नामों के द्वारा सम्यक् दृष्टि को प्रभावक माना है।

दर्शनाचार में सम्यक् शुद्धि आवश्यक है, क्योंकि दर्शनाचार की आठ शुद्धियों में से एक भी शुद्धि का अभाव हो जाता है, तो वह दर्शनाचार निर्दोष नहीं रह पाता है।

ज्ञानाचार के ये आठों अंग ज्ञान की आराधना के द्योतक हैं। कोई भी व्यक्ति जब तक ग्रंथ आदि दोषों से मुक्त नहीं होगा तब तक वह ज्ञान की आराधना नहीं कर सकता और न उसमें सही रूप से आत्मज्ञान ही हो सकता है। इनमें से किसी अंग का उल्लंघन किया है या स्वाध्याय के [illegible], विनयाचार, बहुमान और उपधान [illegible] किए बिना कोई भी व्यक्ति ज्ञान को उत्पन्न करने में [illegible] नहीं हो सकता। इस दृष्टि से इन अंगों का महत्व रहा है।

ज्ञानाचार के अतिचार–

स्वाध्याय का वर्णन करते हुए आचार्य [illegible] पालन करने के लिए क्रम, काल, अनुमोदना पूर्वक अतिचारों का व्याख्यान किया है, इनके माध्यम से साधक अतिचार का त्याग कर [illegible] सहजता से [illegible] भी [illegible] होकर [illegible] में [illegible], इसी प्रकार आचार्यों ने [illegible] की आवश्यकता है तथा अतिचारों का ज्ञान भी आवश्यक है।

दर्शनाचार की विशुद्धि के लिए तथा [illegible] के लिए दर्शनाचार के अतिचारों की व्याख्या करते हुए कहते हैं प्रमाद से जिनेन्द्र के वचन (जिनवाणी) के प्रति अनादर करते हैं, आठ प्रकार के अतिचारों में इनका पालन न करें और करावें, और करते हुए को अनुमोदना न करें ये अतिचार होते हैं। ये शंका आदि के भेद से आठ प्रकार के हैं।

निःशंकित शुद्धि के अतिचार– जिनेन्द्र भगवान के द्वारा कहे गए तत्त्व पदार्थ का वर्णन संदेह से, [illegible] में आत्मा को [illegible] शंका करना होता है। यहाँ निःशंकित शुद्धि का अतिचार कहा गया है।

निःकांक्षित शुद्धि के अतिचार– आकांक्षा तीन प्रकार की होती है–1. इहलोक की आकांक्षा, 2. परलोक की आकांक्षा तथा 3. कुधर्म की आकांक्षा। इहलोक की आकांक्षा से [illegible] होकर [illegible] हाथी, घोड़े, धन, स्त्री, पुत्र आदि की आकांक्षा इहलोक में करना है तथा परलोक में भोगों की [illegible] में अभिलाषा करना है तथा [illegible] धर्म में अभिलाषा [illegible] में आकांक्षा करता है। इस प्रकार आकांक्षा से युक्त होकर निःकांक्षित शुद्धि का अतिचार करता है।

निर्विचिकित्सा शुद्धि के अतिचार–

विचिकित्सा द्रव्य और भाव की अपेक्षा दो प्रकार की होती है। विचिकित्सा का अर्थ है ग्लानि। साधुओं के मलापह, नाक का मल, कफ, हड्डी, पीब, रुधिर, मूत्र, मल, [illegible] द्वारा [illegible] से युक्त देह को देखकर ग्लानि होना द्रव्य विचिकित्सा है। इस प्रकार द्रव्य और भाव विचिकित्सा से [illegible] निर्विचिकित्सा शुद्धि में अतिचार होता है।

अमूढदृष्टि— देव, गुरु में अहित होकर सम्यक्त्व से विचलित आचरण करने वाले को अमूढदृष्टि शुद्धि में अन्तर्भाव जानना है।

उपगूहन— सम्यक् चारित्र से दोषों के रहित जैन में पुनः दोषों के आच्छादन करना तथा गुणों को बढ़ाना। इस प्रकार उनके सम्यक् चारित्र का संरक्षण करते हुए उनके गुणों का प्रकाश करना उपगूहन शुद्धि का अधिकार है।

स्थितिकरण— धर्म से विचलित हुए जीवों को उपदेश देकर पुनः से उन्हें धर्म में स्थिर करने का उपक्रम करना स्थितिकरण शुद्धि का अन्तर्भाव है।

वात्सल्य— धर्म जीवों के प्रति निश्छल बुद्धि रखना तथा अपने परिवार के सदस्य समान पूर्वक प्रेम करना गाय एवं बछड़े के निश्छल प्रेम जैसे वात्सल्य शुद्धि का अन्तर्भाव है।

प्रभावना— धर्म कथाओं से देव, गुरु एवं अनेक महापुरुषों के जीवन चरित्र को विशेष रूप से कहना तथा वैज्ञानिक तर्क प्रमाण आदि से देव, गुरु एवं धर्म के लक्षणों को प्रकट करके विशेष प्रभावना करने वाले के हृदय में धर्म के प्रति आकर्षण उत्पन्न करना प्रभावना शुद्धि का अन्तर्भाव है।

उपसंहार—

जैन संस्कृति में दर्शन को अधिक महत्त्व दिया है। दर्शन का अर्थ सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक् चारित्र है। सम्यक् मार्ग और मुक्ति मार्ग का नाम मोक्षमार्ग आदि शब्दों के अन्तर्गत सम्पूर्ण धर्मों से प्राप्त होता है। इसी सन्दर्भ में आचार्य कुन्दकुन्दजी ने साधुओं के आचरण का व्याख्यान करते हुए मूलाचार नामक ग्रन्थ में पंचाचार (पाँच आचार) का वर्णन किया है। दंसणणाणचरित्ते तववीरियाचारम्हि पंचविहे। अर्थात् सम्यग्दर्शनाचार, ज्ञानाचार, चारित्राचार, तपाचार और वीर्याचार ये पाँच आचार कहे गए हैं। तत्त्वार्थश्रद्धान रूप जो परिणाम हैं उनका श्रद्धान करना और इन्हीं रूप अन्तरंग परिणाम करना दर्शनाचार है। यहाँ पर दृश धातु से दर्शन बना है। सम्यग्दर्शन का दूसरा नाम दर्शनाचार दृश धातु से ल्युट् प्रत्यय लगाकर दर्शन शब्द बना है, जिसका आचार रूप पालन व दर्शनाचार कहे जाते हैं। लौकिक अर्थ है— दर्शन का आचरण। जैनधर्म में दर्शन शब्द को श्रद्धा के लिए प्रयुक्त करते हैं, जिसे सम्यग्दर्शन के अन्तर्गत लिया गया है। सम्यग्दृष्टि जीव नियमों का पालन करता है, उसे दर्शनाचार कहते हैं। आचार्य वट्टकेर ने मूलाचार में, आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने रत्नकरण्डश्रावकाचार में, आचार्य नेमिचन्द्रजी ने द्रव्यसंग्रह में, अमितगति ने श्रावकाचार में, श्री अमृतचन्द्र सूरि ने पुरुषार्थसिद्ध्युपाय में दर्शनाचार का वर्णन किया है जिसके आठ अंग— निःशंकित, निःकांक्षित, निर्विचिकित्सा, अमूढदृष्टि, उपगूहन, स्थितिकरण, वात्सल्य और प्रभावना ये आठ दर्शनाचार के गुण कहलाते हैं। इन्हें भाव रूप से आठ शुद्धि नाम से जाना जाता है क्योंकि दर्शनाचार की आठ शुद्धियाँ हैं। यदि एक शुद्धि का अभाव भी हो जाता है, तो वह दर्शनाचार निर्मल नहीं बन पा सकता। दर्शनाचार के ये आठों अंग मानव की आत्मा के संरक्षक हैं। जैसे एक व्यक्ति यदि एक अंग से रहित हो तो वह पूर्ण नहीं माना जाता, तथा वह राज्य को प्राप्त नहीं कर सकता और न उससे आगे नहीं बढ़ सकता है। ...

[illegible]

सन्दर्भ :

1. [illegible]
2. [illegible], श्लोक-15, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, [illegible]
3. [illegible] भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]
7. [illegible] भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, [illegible]
8. [illegible]
9. [illegible]
10. [illegible], श्लोक-19-20, पृ. 76
11. [illegible]
12. [illegible]
13. [illegible], नई दिल्ली, [illegible]
14. [illegible]

[illegible]

धर्मशास्त्रीय सिद्धान्त एवं ज्योतिषीय गणनाएँ

शैलेश कुमार [illegible]

'धर्मे सर्वं प्रतिष्ठितम्'

अर्थात् धर्म में ही सम्पूर्ण जगत् प्रतिष्ठित है। धर्मशास्त्रीय मतानुसार धर्म किसी सम्प्रदाय विशेष का द्योतक नहीं है, अपितु यह मानव जीवन की वह आचार संहिता है, जो मानव के किसी अंग विशेष के रूप में मानवीय कर्तव्यों का स्वरूप-स्थापित करता है तथा उसमें जागृत विकास करते हुए [illegible] है जिससे मानवीय अस्तित्व के चरम लक्ष्य की ओर [illegible]।

वैशेषिक सूत्र कहता है — 'यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः'

अर्थात् धर्म वह है जिससे आनन्द एवं निःश्रेयस अर्थात् कल्याण की [illegible] जो [illegible] है, वैसा ही [illegible] के प्रति [illegible] धर्म की [illegible] जाता है।

उपनिषदों में [illegible] के लिए धर्म मानव के [illegible], कर्तव्यों तथा एक विशेष [illegible] माना गया है। [illegible]

धर्म की [illegible] मनुष्य [illegible] लेता है। यदि मनुष्य धर्म के [illegible] स्वरूप को जानकर अपने आचरण [illegible] में उसका पालन कर लेता है तो [illegible] मार्ग पर [illegible] है [illegible] में [illegible] जीवन का [illegible] भी दिखलाती है।

[illegible], शकुनापशकुन, वर्णाश्रम, [illegible], शिक्षा, [illegible] के कर्तव्य, विवाह प्रकार एवं विधि, [illegible], श्राद्ध, [illegible], [illegible], [illegible] आदि विषयों की सम्पूर्ण जानकारी हमें वेदों, स्मृतियों एवं पुराणों में व्यापक रूप से प्राप्त होती है। [illegible] है कि प्राचीनकाल में धर्म के क्षेत्र में व्यापक रूप से अध्ययन एवं चिन्तन-मनन किया गया है [illegible] धारणाएँ जो धर्म में [illegible] [illegible] मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन को परिष्कृत करता है।

[illegible] के आधार पर धर्म [illegible] विभाजित किया गया है—

श्रौत धर्म एवं स्मार्त धर्म

एक ओर जहाँ वैदिक संहिताओं एवं ब्राह्मणों में [illegible] कर्तव्यों एवं संस्कारों का समायोजन श्रौत धर्म के अन्तर्गत किया गया, वहीं दूसरी ओर स्मृतियों तथा [illegible] स्मार्त धर्म के [illegible] किया गया। [illegible] जो श्रेष्ठ एवं [illegible] मानव जीवन के लिए उपयोगी है, उनका पूर्ण [illegible] ही [illegible] है।

धर्म के [illegible] के अन्तर्गत धर्म-लक्षण, धर्म के [illegible] विषय पर [illegible] विषयों स्मृतियों तथा [illegible] ग्रन्थों में विशेष रूप से [illegible] है। [illegible]

[illegible] के स्वरूप की सत्ता नाम, [illegible], तारा, ग्रह, नक्षत्र आदि और अन्तरिक्ष [illegible] में आंशिक रूप से [illegible] गया है कि [illegible] सिद्धान्त पर [illegible] आदि की [illegible] को विविध [illegible] से विवेचित किया गया है।

वेदाङ्ग के [illegible] वेदाङ्गज्योतिष [illegible] ज्योतिष ग्रन्थों से एक [illegible] के रूप में है। जहाँ एक [illegible] धर्मग्रन्थ ज्योतिष [illegible] के [illegible] इन [illegible] में [illegible] [illegible] स्थापित करते हैं [illegible] व्यवस्था के [illegible] की विधि [illegible] को [illegible] करता है वहीं दूसरी ओर ज्योतिष ग्रन्थों में [illegible] द्वारा तिथि-मुहूर्त [illegible] निर्धारित करके [illegible] आदि धार्मिक कार्यों का [illegible] किया जाता है। अतः यह [illegible] प्रचलित [illegible] के [illegible] समय का [illegible] करने वाले ज्योतिष शास्त्र का [illegible] वेदाङ्गज्योतिष से एक [illegible] रहा है।

"यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञम्॥"

अर्थात् जो मनुष्य ज्योतिष शास्त्र को [illegible] रूप से जानता है वही [illegible] का यथार्थ रूप से [illegible] है। [illegible] के लिए [illegible] आवश्यक है। इसके लिए [illegible], वर्ष, मास, तिथि, नक्षत्र, पक्ष, [illegible] आदि का [illegible] आकलन एवं [illegible] ज्योतिष शास्त्र के ज्ञान के बिना [illegible] सम्भव नहीं है। ज्योतिष [illegible] के अभाव में [illegible] और [illegible] कर्म [illegible] नहीं किये जा सकते हैं। [illegible] के [illegible] के [illegible] इसकी [illegible] करता है, यथा

त्रिस्कन्धात्मिकं [illegible] = [illegible]।
नाम्नाख्यातमिदं ब्रह्मणा रचितं पुरा॥

[illegible] में [illegible] दिया गया [illegible] शिक्षा की [illegible]। [illegible] शास्त्र [illegible] पर आधारित थी। [illegible] ज्योतिर्विज्ञान [illegible], [illegible], दान आदि का [illegible] है। [illegible] ज्योतिष [illegible] ग्रहों के [illegible] फलों का [illegible], ग्रहण [illegible], [illegible] का [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] आदि के [illegible] लिए [illegible] का निर्धारण करना रहा है।

ज्योतिष [illegible] के अध्ययन में [illegible], [illegible], [illegible] के [illegible] को [illegible] किया जाता है, [illegible] ही [illegible] ज्योतिष को [illegible] ज्योतिष, [illegible], [illegible] इत्यादि [illegible] के [illegible] में [illegible] के लिए [illegible] आवश्यक हो जाता है।

[illegible] शास्त्र के [illegible] ज्योतिष [illegible] को [illegible] अपनाया गया है। [illegible] पर आधारित [illegible] ज्योतिषीय [illegible] के जीवन पर शुभाशुभ प्रभाव [illegible] है। [illegible] शुभाशुभ फल, [illegible] के [illegible] होने वाले [illegible] का [illegible] ज्योतिष [illegible] अध्ययन में

[illegible] होता है। इसी प्रकार कुण्डली [illegible] ज्योतिषशास्त्र के [illegible] रहा है। पुरुषार्थों में [illegible] धर्म [illegible] मुख्य [illegible] गया है। जिसका [illegible] नहीं होता, उसका [illegible] है अर्थात् ज्योतिष [illegible] [illegible] धर्म [illegible] जाता है। इसी क्रम में यदि [illegible] कुण्डली के [illegible] करें तो पाएंगे कि [illegible] विशेष [illegible] देव [illegible] का [illegible] किया गया है, यथा

'धर्मो गुरुः शुभमयो नव भाग्यमानि'

अर्थात् कुण्डली के [illegible] धर्म, गुरु, शुभफल, [illegible] और भाग्य का [illegible] जाना [illegible] है, [illegible] गया है क्योंकि लौकिक एवं आध्यात्मिक उन्नति व्यक्ति के [illegible] प्रभुत्व, [illegible] सुख-समृद्धि [illegible] करता है। [illegible] पिता के [illegible] जैसा कि [illegible] में वर्णन मिलता है

'भाग्यार्थं दैवतपितृन् शुभपूर्वभाग्य – पूजा तपः सुकृतधीमनस्पार्थमस्मात्।'

[illegible] व्यक्ति को [illegible] और [illegible] करता है [illegible] उसके [illegible] को [illegible] है। [illegible] देव को [illegible] है। इसी [illegible] में पुरुषार्थ [illegible] दैव की [illegible] की गई है

[illegible] है—

संसार सागरे घोरे तु सदैव विषमे चले।

धर्मनाव समारुह्य गच्छन्ति परमां गतिम्।

अर्थात् [illegible], अनादि [illegible] संसार [illegible] में [illegible] होकर [illegible] है।

संदर्भ

1. [illegible]
2. [illegible] – [illegible] – [illegible] – प्रथम [illegible]
3. [illegible] – [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible] – [illegible]
6. [illegible]
7. [illegible]
8. [illegible]

[illegible]

[illegible] संस्कृत विश्वविद्यालय, [illegible]

वेदानां भारतीयव्याख्यापद्धतिः

राहुलकुमारझा

वेदानां [illegible]

[illegible] आचार्याः -

षड्ध्यायविजिज्ञासा पतन्तीति नाप्यांशतिः।

जायान्तर्मिं त्रिपाणिमक्ते पर्वतिज्ञपञ्चे विनश्यन्तीति॥'

यास्कस्य [illegible]

अवरेभ्योऽवरकालिकेभ्यः शक्तिहीनेभ्यः श्रुतर्षिभ्यः।

तेषां हि श्रुत्वा तत्त्वज्ञानमुपजायते न यथा पूर्वेषां

साक्षात्कृतधर्माणां तपःप्रभावेण॥

[illegible]

साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुः तेऽवरेभ्योऽसाक्षात्कृतधर्मभ्य
उपदेशेन मन्त्रान् सम्प्रादुः उपदेशाय ग्लायन्तोऽवरे
बिल्मग्रहणाय इमं ग्रन्थं समाम्नासिषुः वेदञ्च वेदाङ्गानि च॥

[illegible]

अनर्थका हि मन्त्राः। [illegible]
[illegible] मन्त्रार्थज्ञानाय [illegible] भवति [illegible]॥

[illegible]

कौत्सस्य पूर्वपक्षः

(क) [illegible]

(ख) [illegible]

(॰) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] भीमसेन ! [illegible] [illegible] [illegible] हे भीमसेन! [illegible]।

(ग) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] गच्छति। [illegible] [illegible] [illegible]– [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

(ङ) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

(च) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?

(छ) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] न गच्छति [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] न गच्छति।
[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] – [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] –

(ज) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

(झ) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]।

(ञ) [illegible] [illegible] [illegible] – [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सन्दर्भाः

[illegible]

[illegible]

जम्बुचरियं में भारतीय संस्कृति

डॉ. अमित कुमार

संस्कृति

संस्कृति किसी भी समाज में [illegible] गुणों के समग्र रूप का नाम है [illegible] समाज के सोचने-विचारने, कार्य करने, खाने-पीने, बोलने, [illegible] नृत्य, [illegible] कला, वास्तु आदि में परिलक्षित होती है। संस्कृति शब्द [illegible] (कृ) धातु में [illegible] करने से बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ परिष्कृत करना है। संस्कृति शब्द का [illegible] अर्थों में होता है। [illegible]।

सामान्य परिचय

संस्कृति सामाजिक अंतःक्रियाओं एवं सामाजिक व्यवहारों के [illegible] प्रतिमानों का समुच्चय है। इसके अंतर्गत ज्ञान, विश्वास, आस्था, नैतिक मूल्य एवं प्रथाएँ सम्मिलित होती है।

संस्कृति के पक्ष

संस्कृति के दो पक्ष हैं- आधिभौतिक संस्कृति एवं भौतिक संस्कृति। सामान्य अर्थ में आधिभौतिक संस्कृति एवं भौतिक संस्कृति को सभ्यता के नाम से अभिहित किया जाता है। संस्कृति के ये दोनों पक्ष एक दूसरे से भिन्न होते हैं। संस्कृति आभ्यन्तर है। इसमें परम्परागत चिन्तन, कलात्मक अनुभूति, विस्तृत ज्ञान एवं धार्मिक आस्था का समावेश होता है। सभ्यता बाह्य वस्तु है, जिसमें मनुष्य की भौतिक प्रगति के अनुसार राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और वैज्ञानिक उपलब्धियां सम्मिलित होती हैं। संस्कृति हमारे सामाजिक जीवन पद्धति की सूक्ष्म शैली है और सभ्यता इस क्षेत्र में [illegible] है। संस्कृति [illegible] है और सभ्यता [illegible] है। संस्कृति सभ्यता की उपयोगिता के मूल्यांकन के लिए प्रतिमान उपस्थित करती है।

जम्बुचरियं विक्रम की 11वीं शताब्दी में गुणपाल मुनि के द्वारा रचित ग्रन्थ है। इसमें कुल 16 उद्देश हैं। अन्तिम उद्देश का [illegible] हुआ है जो अधिकांशतः खण्डित है, अतः [illegible] का [illegible] नहीं हो सका है। इसमें संस्कृति के अन्तर्गत धर्म, व्यवहार, नीति एवं कला का व्यापक प्रतिपादन किया गया है।

इसके आरम्भ में ही नमस्कार के रूप में [illegible] जिन के [illegible] वाले [illegible] का नमस्कार किया है, इस स्थान पर [illegible] के [illegible] से।

नैतिक मूल्य (व्यवहार)

सम्पूर्ण जम्बुचरियं [illegible] में [illegible] है। [illegible] करते हुए निर्देशित है, [illegible], [illegible] वसेशाही [illegible] नमस्कार है, [illegible] होता है [illegible]

[illegible] में एक भी [illegible] सिद्ध नहीं होगा। [illegible] के लिए सभी [illegible] के [illegible]
[illegible] आवश्यक है [illegible] को [illegible] करता है। [illegible] के क्रम में
अज्ञान, [illegible] सुख [illegible] जीवों को जन्म [illegible] दुःख [illegible] को [illegible] करते हैं।

दृष्टान्त

खणमत्त–खणागिरत्तं [illegible] च [illegible]।

[illegible] च [illegible]॥[1]

[illegible] सुख, [illegible] बल [illegible] फल [illegible] के समान [illegible] के लिए [illegible] है। [illegible] हुए [illegible] हाथी, सर्प, सिंह तथा [illegible] से [illegible] है [illegible] के [illegible] जा सकता है, [illegible] भी [illegible] जा सकता है, लेकिन [illegible] नहीं [illegible] है। ऐसे [illegible] लोग [illegible] कुछ और बोलते हैं, [illegible] कुछ और बोलते हैं और [illegible] में कुछ और रखते हैं [illegible]।[2] [illegible] में [illegible] और [illegible] हैं।

1 अभ्याख्यान   2 आभंग

3 मन्मन   4 [illegible]

5 [illegible]   6 [illegible]

अभ्याख्यान

[illegible] पापी [illegible] हुए [illegible] करने वाले [illegible] आख्यान [illegible] गए हैं।

आभंग

[illegible] वाले [illegible] की [illegible]

मन्मन

[illegible] वाले [illegible] है।

[illegible]

[illegible] में [illegible] के [illegible] हुए [illegible] के [illegible] वाले [illegible] हैं।

[illegible]

[illegible] से [illegible] वाले [illegible] के [illegible] हुए [illegible] हैं।

[illegible]

[illegible] का [illegible] है। [illegible] के [illegible] के

अनुभाग करने के शुभाशुभ का निश्चय होता है। [illegible] की [illegible] के [illegible] निश्चय [illegible] जाता है, [illegible] क्योंकि कमजोरियाँ [illegible] स्वर के नियमों की भी [illegible] नहीं करती है, इसलिए [illegible] चाहिए [illegible] संगीतकार में [illegible], [illegible] है, [illegible] गुणि [illegible] [illegible] स्थान [illegible] [illegible] है। लेकिन [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] संगीत [illegible] नहीं [illegible] [illegible] स्थान [illegible] [illegible] लेकिन [illegible] [illegible] नहीं [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible] की [illegible] हैं। [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] नहीं [illegible] [illegible] [illegible] न [illegible] [illegible] न [illegible] न [illegible] [illegible] न [illegible] न [illegible] [illegible] न [illegible] [illegible] [illegible] की [illegible] है, [illegible] नहीं [illegible] [illegible] भी [illegible] होता है। [illegible] की [illegible] के लिए [illegible] [illegible] नहीं [illegible] है, [illegible] है। [illegible] [illegible] की [illegible] है। [illegible] [illegible] की [illegible] है। [illegible] [illegible] की [illegible] है। [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] है [illegible] है [illegible] [illegible] नहीं [illegible] [illegible] नहीं करता है।

कला

इस ग्रन्थ में प्रयुक्त [illegible] वाद्य यन्त्रों का वर्णन [illegible] हैं जैसे — वीणा, मृदङ्ग, [illegible], [illegible], गुंजा, शंख, घंटा, करताल, काहल(भेरी) [illegible], [illegible], डमरू, हुडुक्का।

स्त्री वर्णन

राजगृह नगर का वर्णन करते हुए कवि कहता है, जहाँ की महिलाएँ रत्न धारण, विलास करने में प्रवीण, निपुण, चतुर स्त्रियों के समान थी।

पुरुष वर्णन

नारी सूरत के नेत्रों से निपुण, दूसरे के दान का न रोकने वाला, दूसरे के धन का न ग्रहण करने वाला पुरुष निवास करता था।

उपर्युक्त विवेचन से बुद्धचरित के आधार पर तत्कालीन संस्कृति के व्यापक स्वरूप को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

संदर्भ—

1. बुद्धचरित 1/2   2. वही 1/5
4. वही 1/18   5. वही 1/28
6. वही 1/82-83   7. वही 5/175-182   8. वही 5/262

[illegible]
[illegible]

रामचन्द्रमिश्रकृतीनाम् एकम् अवलोकनम्

[illegible] कुमारी

[illegible]

[illegible]

1 [illegible] 2 कविता 3 निबन्धः

4 [illegible] 5 [illegible] 6 [illegible]

7 [illegible]

1. सम्पादकीयम् – [illegible]

2. कविता – [illegible]

[illegible]

3. निबन्धः – [illegible]

[illegible] १६२०ई ।

गुणनिमित्त (...) [illegible], [illegible] ।

[illegible] (...) ।

४. नाटकम् (दृश्यकाव्यम्) – [illegible] ।

[illegible] ।

५ मिथिलावैभवम् – [illegible] ।

काव्यशास्त्रेऽपि मिथिला – (काव्यप्रकाशटीकाः) – [illegible], काव्यप्रकाशटीका, [illegible] काव्यप्रकाशटीका, [illegible], काव्यप्रदीपः (काव्यप्रकाशटीका), [illegible] काव्यप्रकाशटीका, [illegible] काव्यप्रकाश[illegible] ।

अलङ्कारशास्त्रे मौलिकग्रन्थाः – [illegible] ।

छन्दःशास्त्रे मौलिकग्रन्थाः – [illegible] ।

नाट्यशास्त्रे ग्रन्थाः – [illegible] ।

पद्यकाव्यानि – [illegible]

[illegible]

महाकाव्यानि – [illegible]

रूपकाणि – [illegible]

चम्पूकाव्यानि – [illegible]

6. अर्चना – [illegible]

7. मुनिमुक्तावली (प्राचीनमुक्तकानि) – [illegible]

[illegible]

8. परिशिष्टे ग्रन्थगणानि –

[illegible]

टिप्पणी –

1. [illegible], पृष्ठ 110-15, 163

2. [illegible], पृष्ठ 9

[illegible]

यात्रा : पश्चिमांचल से पूर्वांचल की ओर
(जयपुर से अगरतला)

गोविन्द जांगिड़

एक [illegible] कहावत है, [illegible] एक [illegible] कदम से अनुभव होते हैं किन्तु [illegible] वह आज भी हमारे लिए [illegible] मुझे याद है [illegible] 18 नवम्बर 2017 को हम [illegible] तैयारी के साथ [illegible] नाटक लेकर अगरतला में आयोजित "[illegible]" के लिए निकले थे।

[illegible] अब आपको जयपुर से अगरतला की यात्रा करवाते हैं। [illegible] निकल पड़े और जयपुर जंक्शन पहुँचे। [illegible] गोविन्द [illegible] के कारण [illegible] पता चला कि हम लोग निकल गए [illegible] गोविन्द [illegible] पहुँचे। [illegible] के चलने के कारण [illegible] फिर गोविन्द समय पर [illegible] था [illegible]

फिर कुछ समय बाद [illegible] 6 बजे हमारी रेलगाड़ी [illegible] पहुँचे। [illegible] हुए गाड़ी में बैठ गए। कुछ देर बाद हमारी गाड़ी चल पड़ी। [illegible] हुए [illegible] बच्चों! [illegible] हमारी गाड़ी जयपुर से रवाना हुई। [illegible] कारण एक [illegible] और [illegible] 2017 को [illegible] में [illegible] होते हुए भी सभी [illegible] एक डिब्बे में एकत्रित होकर हमारे [illegible] किशोर कुमार एवं [illegible] और [illegible]

मेघालय, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल आदि राज्यों को पीछे छोड़ते हुए [illegible] तारीख 2017 को सुबह 3 बजे विशाखापट्टनम स्टेशन (तेलंगाना) पहुँचे।

आज यहाँ पर गुरुजी किशोर कुमार जी उपाध्याय, मानिक [illegible], निखिल [illegible] और [illegible] [illegible] सभी ने मिलकर [illegible] [illegible] [illegible] होटल में पहुँचे और विश्राम किया, फिर [illegible]।

आज [illegible] बजे [illegible] [illegible] आदि [illegible] करने के बाद [illegible] [illegible] [illegible] घूमने के लिए निकल पड़े। हमारे गुरुजी किशोर कुमार जी [illegible] [illegible], [illegible] होटल में ही रुके [illegible] [illegible] [illegible]। यहाँ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] के कारण थोड़े [illegible] गए। बाद में [illegible] [illegible] से [illegible] हो गए। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] भी यहीं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] लड़का, जिसके साथ में [illegible], [illegible] और [illegible] कि अपने [illegible] के [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। हम लोगों ने यहाँ [illegible] [illegible] और फिर [illegible] माता के मंदिर के दर्शन के लिए निकल पड़े। यहाँ काली माताजी के दर्शन किए और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] खरीदे। फिर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] गए, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] वहाँ से वापस होटल आ पहुँचे। कुछ समय बाद भोजन के लिए निकले। लगभग तीन किलोमीटर पैदल चलकर एक [illegible] भोजनालय पहुँचे। [illegible] [illegible] [illegible] था। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] करने के बाद भोजन किया। यहाँ पर भोजन वालों ने हमें [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 11 [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आदि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। लेकिन समय के अभाव के कारण [illegible] [illegible] ना करते हुए सभी [illegible] यहाँ से निकले और होटल से सामान लेकर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पहुँचे।

यहाँ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] की [illegible] दिखाई दी। [illegible] [illegible] कि [illegible] [illegible] [illegible] हम [illegible] हवाई जहाज में [illegible] बैठेंगे। फिर कुछ देर तक इंतजार करने के बाद हम एक हवाई जहाज [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। कुछ देर बाद हवाई जहाज ने [illegible] [illegible] [illegible]। सभी लोग अपने-अपने [illegible] में [illegible] थे। [illegible] [illegible] जो [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] निभाने वाला था। [illegible] इसके [illegible] का [illegible] [illegible]। [illegible] जो कि नाटक के निर्देशक थे, [illegible] [illegible] [illegible] वाली सीट पर बैठे थे। [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] अपने [illegible] में [illegible] [illegible] और आवाज के [illegible] [illegible] आदि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] था लेकिन [illegible] को काबू करते हुए [illegible] [illegible]।

[illegible] लोगों ने [illegible] जीवन के [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] लिया। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आनन्द [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

का [illegible] हुआ [illegible] मिनट में [illegible] पहुँच गया और हमें [illegible]
के [illegible] [illegible] में
[illegible] कुछ देर बाद भोजन कर [illegible] और अपने कमरे में [illegible]
[illegible]

अगले दिन [illegible] नवम्बर [illegible] को सुबह का नाश्ता [illegible] आदि [illegible] करने के बाद हम सबने मैथिली नाटक का अभ्यास किया और [illegible] घूमने गए, जहाँ [illegible] लोगों ने [illegible] और वहाँ से वापस [illegible] आ गए। सभी लोगों ने भोजन किया। बाद में [illegible] नाटक का अभ्यास किया और सभी [illegible] गए।

इसके अगले दिन 22 नवम्बर 2017 को [illegible] भवन' [illegible] में आयोजित [illegible] का [illegible] हुआ। हमारे कुलपति महोदय [illegible] की। इसके बाद नाटकों की [illegible] [illegible] की प्रस्तुति हुई। [illegible] के कारण [illegible] 23 नवम्बर 2017 [illegible] वाला दिन आया इस दिन हम सब लोगों ने [illegible] हमारे गुरु डॉ. कुलदीप जी [illegible] नाटक के रूप में [illegible] किया और [illegible] भोजन करने [illegible] Good Night आदि सब बोलकर [illegible] इस तरह [illegible] वाला दिन भी [illegible] गया।

अब हम सबकी परीक्षा वाला दिन 24 नवम्बर 2017 था। इस दिन सब लोग भोजन करने के बाद [illegible] [illegible] आदि [illegible] नाटकों की प्रस्तुति हुई। इन नाटकों के बाद हमारा नाटक '[illegible]' [illegible] प्रस्तुति दी। [illegible] का समापन हुआ। [illegible] पुरस्कार [illegible] पुरस्कार [illegible] को मिला। [illegible] नाटक के [illegible] प्रस्तुति भी [illegible] हुई

अब 25 नवम्बर 2017 को [illegible] 9 बजे [illegible] के लिए निकले। रास्ते में [illegible] किया। रास्ते में [illegible] हम कुछ देर बाद [illegible] लेकिन [illegible] नहीं [illegible] था। पास में ही कुछ लोग [illegible] थे। [illegible] सभी लोगों ने [illegible] के दर्शन किए, [illegible] (मैजिकल) देखने गए। [illegible] सभी लोग आनन्द ले रहे थे। कोई फोटो खींच रहा था तो कोई पानी में हाथ डाल रहा था। [illegible] गाते हुए अपनी मंजिल [illegible] थे।

अब 26 नवम्बर 2017 को हम [illegible] बजे वापस [illegible] के लिए [illegible] कोलकाता पहुँचे। कोलकाता [illegible] लेकिन गुरुजी [illegible] और [illegible] ने [illegible] की [illegible] गए।

अब हमारी [illegible] कुछ लोगों ने [illegible] किया कि [illegible] देखने [illegible] और [illegible] कुछ लोग देखने के लिए निकल पड़े और [illegible] गोविन्द, [illegible] आदि सब [illegible] ने अपने बचपन को याद करते हुए [illegible] कि हमारी [illegible] 2 बजे प्रस्थान करेगी [illegible] हुए और सभी [illegible] बधाई दी।

[illegible] हम [illegible] 2 बजे 27 नवम्बर 2017 को [illegible] (कोलकाता) स्टेशन से [illegible] के लिए प्रस्थान [illegible] और [illegible] हम अपनी [illegible] हम 28 नवम्बर 2017 को [illegible] 7 बजे [illegible] स्टेशन पहुँच गए। [illegible] से हम [illegible] अपने [illegible] पहुँचे।

इस तरह यह हमारी [illegible] की [illegible] यात्रा [illegible] माता, पिता, गुरुजनों और [illegible] के आशीर्वाद से सफल हुई।

[illegible]

[illegible]

षोडशसंस्कारविमर्शः

दीपककुमारशर्मा

[illegible] ।
[illegible] ॥

गर्भाधानम्

[illegible] ।
[illegible] ॥

पुंसवनम्

[illegible]
[illegible]

सीमन्तोन्नयनम्

[illegible] ।
[illegible] ॥

जातकर्म

[illegible] ।
[illegible] ॥

नामकरणम्

[illegible] ।
[illegible] ॥

निष्क्रमणम्

[illegible] ।
[illegible]

अन्नप्राशनम्

[illegible] ।
[illegible] ॥

चूडाकरणम्

[illegible] ।
[illegible]

कर्णवेधः

[illegible]
दूषणं परिहर्तुं च कर्णवेधं [illegible]॥
[illegible]
[illegible]॥

विद्यारम्भः (अक्षरारम्भः)

[illegible]।
[illegible]

उपनयनम् (व्रतबन्धः)

[illegible]।
[illegible]

वेदारम्भः

[illegible] द्विजः।
वेदाभ्यासं प्रकुर्वीत [illegible]

केशान्तम् (गोदानम्)

[illegible]।
[illegible]॥

समावर्तनम्

[illegible]।
[illegible]॥
गुरुकुलेषु [illegible]।
[illegible]॥

विवाहः (दारकर्म)

[illegible]।
[illegible]

अन्त्येष्टिः

[illegible]।
अन्त्येष्टिः [illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

महामहोपाध्यायपण्डितगोकुलनाथस्य व्यक्तित्वं कर्तृत्वञ्च

समुद्रसिंह

भूमिका–

संस्कृतकाव्यक्षेत्रे आधुनिकं [illegible] अत्र संस्कृतसाहित्ये बहूनि [illegible] । [illegible]

व्यक्तित्वम्–

म.म.गोकुलनाथस्य जन्म [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] न्याय व्याकरण [illegible] [illegible] [illegible]।

तर्केषु कर्कशतराधियो वयमेव नान्ये काव्येषु कोमलधियो वयमेव नान्ये

[illegible] गोकुलनाथ [illegible] । [illegible]–

मानागोकुलनाथनामककृती जागर्ति! तुभ्यं नमः

पृच्छामो भवती महीतलगतिं त्यक्त्वैव यद्गच्छसि।

भूलोके जननिः कृता मम गुरोः स्वर्गे तथा गीष्पतौ

पाताले फणिनायके भगवति प्रीतिः क्व लब्धाधिका॥'

गोकुलनाथस्य पितुः नाम [illegible] । [illegible]

गोकुलनाथस्य पितुः [illegible] कृतिश्च [illegible]

[illegible]

[illegible]॥'

[illegible] गोकुलनाथ [illegible] कृत्वा गोकुलनाथ [illegible]–

यो जन्मतश्च गुणतश्च पर. [illegible] [illegible]।

[illegible] प्रबन्धम्॥'

गोकुलनाथः [illegible] कृतवान्

अधिगतमुपाध्यायात् [illegible] [illegible]

[illegible] नाम [illegible] पर. पुमान्॥'

[illegible]

[illegible]

[illegible]

गोकुलनाथस्य कृतयः –

[illegible]

उपसंहारः

[illegible]

सन्दर्भाः

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]

[illegible]

धात्वर्थविषयकमीमांसकमतखण्डनपुरस्सरं वैयाकरणमतव्यवस्था

अनीश अग्रवाल

[illegible]

फलव्यापारयोर्धातुराश्रये तु तिङः स्मृताः ।
फले प्रधानं व्यापारस्तिङर्थस्तु विशेषणम् ॥इति॥

[illegible]

'भावप्रधानमाख्यातं सत्त्वप्रधानानि नामानि ।'

[illegible]

[illegible]

अपि च [illegible] उक्तं हरिणा–

गुणभूतैरवयवैः समूहः क्रमजन्मनाम्।
बुद्ध्या प्रकल्पिताभेदः क्रियेति व्यपदिश्यते॥
आश्रितप्रत्ययत्वात् [illegible]।
व्यापारो भावना सैवोत्पादना सैव च क्रिया।

[illegible]

[illegible]

सन्दर्भाः

1. [illegible]
2. [illegible]

[illegible]

शक्तिः साध्वी असाध्वी वा

धीरज कुमार चौधरी

[illegible]

इन्द्रियाणां स्वविषयेष्वनादिर्योग्यता यथा ।

अनादिरर्थैः शब्दानां सम्बन्धो योग्यता तथा ॥ इति ॥

[illegible]

ग्राह्यत्वं ग्राहकत्वं च द्वे शक्ती तेजसो यथा ।

तथैव सर्वशब्दानामेते पृथगवस्थिते ॥ इति ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] । [illegible]

[illegible] मान्किलान्वां [illegible] । [illegible] एव [illegible] । अत्र [illegible] तात्पर्यं [illegible] । [illegible]

[illegible] ॥

[illegible] यथा [illegible] साधुत्वं [illegible] । [illegible]

"साधुत्वविषये [illegible] शोभनं यदि शोभना ।
सम्यगाद् शोभनार्थेऽपि मानापुत्रादिलिङ्गवत् ॥"

अतः शिष्टा [illegible] । यथा

"अप्रयोगाभ्यासः शब्दा. साधवो [illegible] ।
निमित्तमेकार्थेवान [illegible] साधुत्वं [illegible] ॥"

अत्र [illegible] अर्थ [illegible] वैदिकशब्द [illegible] शब्दं [illegible] । अत एव [illegible] शब्दं [illegible] साधुत्वं [illegible] ।

[illegible]

सन्दर्भाः

1. [illegible]
2. [illegible]

[illegible]

[illegible]

पाणिनिव्याकरणानुसारं वर्णविचारः

[illegible]

[illegible]

वर्णविभागः

अ इ उ ण्। ऋ ऌ क्। ए ओ ङ्। ऐ औ च्। ह य व र ट्। ल ण्। ञ म ङ ण न म्। झ भ ञ्। घ ढ ध ष्। ज ब ग ड द श्। ख फ छ ठ थ च ट त व्। क प य्। श ष स र्। ह ल्।

इत्यादि चतुर्दश माहेश्वरसूत्राणि [illegible]

[illegible] पुनः पुनः [illegible]

'न कुम्भकर्णस्य [illegible]' [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

एकमात्रो भवेद्ध्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते।

त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यञ्जनं चार्धमात्रकम्॥ इति।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अष्टौ स्थानानि वर्णानामुरः कण्ठः शिरस्तथा।
जिह्वामूलं च दन्ताश्च नासिकोष्ठौ च तालु च ॥
हकारं पञ्चमैर्युक्तमन्तःस्थाभिश्च संयुतम्
औरस्यं तं विजानीयात् कण्ठ्यमाहुरसंयुतम्॥
कण्ठ्यावहाविचुयशास्तालव्या ओष्ठजावुपू।
स्युर्मूर्धन्या ऋटुरषा दन्त्या लृतुलसाः स्मृताः॥
जिह्वामूले तु कुः प्रोक्तो दन्त्योष्ठ्यो वः स्मृतो बुधैः।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सन्दर्भाः

1. पाणिनिसूत्रम् [illegible] 2.29
2. पाणिनिसूत्रम् [illegible] 2.30
3. पाणिनिसूत्रम् [illegible] 2.31
4. न्यायभाष्यम्, [illegible]
5. पाणिनीयशिक्षा, श्लोक सं. [illegible]
6. पाणिनीयशिक्षा, श्लोक सं. 13
7. [illegible]
8. [illegible]
9. [illegible], मंगलाचरण
10. [illegible], मंगलाचरण

[illegible]

[illegible]

* * *

* चित्रवीथी *

बहुद्देशीयनूतनभवनस्य शिलान्याससमारोहे शिलापट्टिकाम् उद्घाटयन्तः मुख्यातिथयः राजस्थानप्रदेशस्य महामहिमराज्यपालमहोदयाः श्रीमन्तः कलराजमिश्रमहोदयाः, क्षेत्रीयसांसदः श्रीरामचरणबोहरामहोदयः, राजस्थानभाजपाप्रदेशाध्यक्षः श्री सतीशपूनिया महोदयः, कुलपतिमहोदयः प्रो. परमेश्वरनारायणशास्त्रीमहोदयः, परिसरनिदेशकः प्रो. अर्कनाथचौधरीमहोदयः, अन्ये मन्त्रिणश्च। →

← शिलान्याससमारोहे राष्ट्रगीतं गायन्तो मध्येमञ्चं महामहिमराज्यपालमहोदयाः श्रीमन्तः कलराजमिश्रमहोदयाः तेषां वामतो राजस्थान-भाजपाप्रदेशाध्यक्षः श्री सतीशपूनिया महोदयः तमो वामतः क्षेत्रीयसांसदः श्रीरामचरणबोहरामहोदयः, राज्यपालमहोदयानां दक्षिणतः केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य कुलपति प्रो. परमेश्वरनारायणशास्त्रीमहोदयः, परिसरनिदेशकः प्रो. अर्कनाथचौधरीमहोदयः

बेडमिन्टनक्रीडाप्राङ्गणम् उद्घाटयन्तः अतिथयः, कुलपतयः, आचार्याः, प्राध्यापकाः छात्राश्च

स्वतन्त्रतादिवससमारोहे राष्ट्रियध्वजम् उत्तोलयन्तः आचार्याः, प्राध्यापकाः छात्राश्च

परिसरस्य शोधपत्रिकायाः जयन्त्याः विमोचनं कुर्वन्तः स्वामिनः श्रीभद्रेशदासमहाराजाः, परिसरनिदेशकाः प्रो. अर्कनाथचौधरीमहोदयाः अन्ये च विद्वांसः

राष्ट्रियसेवायोजनान्तर्गते कार्यक्रमे संस्कृतस्य प्रचारार्थं नगरभ्रमणम्

राष्ट्रियसेवायोजनायाः स्वयंसेवकानां सामूहिकं चित्रम्

शिक्षकदिवससमारोहे भाषमाणः श्रीमान् वाय.एस.रमेशमहोदयः। मञ्चस्था अन्ये आचार्याश्च

प्रबोधनवर्गे मञ्चस्थाः विद्वांसः

हिन्दीदिवससमारोहे भाषमाणः श्रीमान् फतहसिंहमहोदयः। मञ्चस्था अन्ये आचार्याश्च

शिक्षाशास्त्रविभागस्य संगोष्ठी

राष्ट्रियएकतादिवससमारोहे शपथं कारयन्तः
परिसरस्य क्रीडानिदेशकः प्रो. गजेन्द्रशर्मा,
धर्मशास्त्रस्यसंकायप्रमुखः प्रो.भगवतीसुदेशः,
शिक्षाशास्त्रविभागाध्यक्षः प्रो. फतहसिंहः,
श्री विनोदशखवालः शाखाप्रबन्धकः,
डॉ. शीशरामः

राजस्थानराज्यस्तरीयायां शलकाप्रतियोगितायां
विजेतॄणां छात्राणां सामूहिकं चित्रम्।
उपरिष्टात् निर्णायकाणां चित्रम्

योगदिवससमारोहे योगासनानि कुर्वन्तः
परिसरस्य प्राध्यापकाः छात्राश्च
मञ्चे योगप्रशिक्षकः डॉ. नवनीत शर्मा
अन्यौ सहयोगिनौ

आसनानि प्रदर्शयन्तः योगप्रशिक्षकः

संगणककक्षम् उद्घाटयन्तः भाषमाणाश्च परिसरनिदेशकाः प्रो. अर्कनाथचौधरीमहोदयाः। मञ्चस्था विद्वांसः धर्मशास्त्रसंकायप्रमुखः प्रो. भगवतीसुदेशः, शिक्षाशास्त्रविभागाध्यक्षः प्रो.फतहसिंहः, साहित्यसंकायप्रमुखः प्रो.रामकुमारशर्मा, सेवानिवृत्तः आचार्यः प्रो.मोहनलालशर्मा

संगणककक्षस्य उद्घाटनम्

संस्कृतकक्ष्यानामकस्य पुस्तकस्य महत्त्वं ख्यापयन्तः परिसरनिदेशकाः प्रो. अर्कनाथचौधरी महोदयाः, मञ्चस्थाः संस्कृतप्रचारकाः श्रीमन्तः चमूकृष्टशास्त्रिवर्याः, प्रो. वाइ.एस.रमेश महोदयाश्च

नूतनसंगणककक्षः

व्याकरणशास्त्रप्रशिक्षणकार्यक्रमम् उद्घाटयन्तः मुख्यातिथिः प्रो.किशोरचन्द्रपाढी महोदयाः मध्यस्थः, तस्य दक्षिणभागे श्रीमती पाढीमहोदया, वामभागे परिसरनिदेशकः प्रो. अर्कनाथचौधरी महोदयश्च

व्याकरणशास्त्रप्रशिक्षणकार्यक्रमे परिसरनिदेशकः प्रो. अर्कनाथचौधरी महोदयः प्रशिक्षकः प्रो. श्रीकृष्णशर्ममहोदयः, कार्यक्रमसञ्चालकः प्रो. श्रीधरमिश्रः

व्याकरणशास्त्रप्रशिक्षणकार्यक्रमस्य समापनसमारोहे भाषमाणः परिसरनिदेशकः प्रो.अर्कनाथचौधरी महोदयः सर्वे प्रशिक्षवश्छात्राः।

व्याकरणशास्त्रप्रशिक्षणे स्नातकेभ्यः प्रमाणपत्रं वितरन्तः परिसरनिदेशकः प्रो. अर्कनाथचौधरीमहोदयः, व्याकरणविभागाध्यक्षः प्रो.शिवकान्तझाः, कार्यक्रमसंयोजकः प्रो.श्रीधरमिश्रः

व्याकरणविभागस्य राष्ट्रियसंगोष्ठ्याः कानिचित् चित्राणि

संस्कृतदिवससमारोहस्य कानिचित् चित्राणि

राजस्थानराज्यस्तरीयशलाकाप्रतियोगितायाः कानिचित् चित्राणि

परिसरे निर्मीयमाणस्य बहूद्देशीयभवनस्य प्रारूपम्

Printed by : M.V. Printer & General Supplier, Jaipur